

प्रश्न प्रति प्रश्न

~डॉ लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

प्रश्न प्रति प्रश्न

साहित्य/संस्कृति/समाज विषयक निबंध, राजस्थान का आधुनिक
हिन्दी साहित्य एक सर्वेक्षण सहित



दो शब्द

लखन पाठन की आत्मीय गिण्टारी के लिए पुस्तक का महान होना आवश्यक है। पुस्तक का महज हान में पाठन का पढ़ा और लयक के कालीय विचार समझन में कठिनाई नहीं आती। इसमें भी अधिन महत्वपूर्ण बात यह होती है कि इस महजता से पाठक-लयक का अविच्छिन्न सम्बन्ध बनता है। इसी तरह साहित्यिका की विगदगी बनी है और सम्पन्न होती है। आजका इस बात की आवश्यकता है कि पाठन की कला नया ही न बड़े विनय वह साहित्य के द्वारा स्वयं का समृद्ध और सम्पन्न अनुभव कर और उनका बीच का अटूट सम्बन्ध प्रगाढ़ हो।

सहज हान के निरमित में बहुत में प्रश्न और प्रतिप्रश्न हैं जिन्हें समझना जरूरी है। भाषा, पाठकीय रूचि बचारीक लगाव, लयन की प्रागभिता हृदय की तरलता आदि अनेक मुद्दे हैं जिन पर गभीरता से चिन्तन और लयन अपभित है।

डा लक्ष्मीनाथगण नन्दवाना द्वारा लिखित प्रश्न प्रतिप्रश्न, के निच घा में भी मुझे एक महजता दृष्टिगत होती है। विभिन्न विषया के इन निचघा की भाषा कृत्रिम नहीं है और केन्द्रीय भाव कही भी अदृश्य नहीं होता है। इसी पुस्तक में श्री नन्दवाना ने राजस्थान का आधुनिक हिन्दी साहित्य एक सर्वेक्षण भी गोमित पृष्ठा में व्यापक जानकारी सहित प्रस्तुत किया है जो प्रशंसनीय है। मुझे विश्वास है कि डा नन्दवाना द्वारा लिखित इस कृति 'प्रश्न प्रतिप्रश्न' का साहित्य जगत के मुधि पाठका द्वारा हार्दिक स्वागत होगा।

प्रकाश आतुर

अध्यक्ष

राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर

क्रम

1	प्रवृत्ति	7
2	समृद्धि और समाज का विकास	9
3	समस्या की प्रकृति	16
4	कवि सम्प्रदाय की प्राग्विकता	22
5	पाठक की रीति	27
6	सम्यक्त्व की परिभाषा सामूहिक पुनर्जागरण	34
7	वृत्त की भावनात्मक मनासिकता का सम्बन्ध	46
8	राजस्थान का साहित्यिक विकास साहित्य का सर्वेक्षण	62

प्रस्तुति

'हकला' वाला की जवान से ही नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्ति की जवान से भी शब्द रच कर निकाल सकते हैं जो अधिक उचित अधिक आवश्यक और बुद्धिमत्तापूर्ण शब्दा की खोज करता है अपनी बुद्धिमत्ता से आश्चर्यचकित करने की ता मैं आशा नहीं करता मगर हकला भी नहीं सकता है मैं शब्द खोज रहा हूँ' (भरा दागिस्तान - रसूल हमजाताव)

दरअसल शब्दा की खोज की बेवनी और प्रस्तुति एक विशिष्ट चेतना की प्रतीक है यह चेतना समाज सापेक्ष और जीवन की अनिवायता है मनुष्य समाज में विवसित होता है और समाज से ही जान ब चेतना ग्रहण करता है सहज वृत्ति, अनुभव तथा पयवेक्षण से यह चेतना प्रभावित होती है यह चेतना मानव अवलम्बित है

अत मानव के दुल सुख की अनुभूति एक अभिव्यक्ति ही एक श्रेष्ठ रचनाक्रम का आधार हो सकती है

'प्रश्न प्रति प्रश्न' विभिन्न प्रकार के आलेखों की सप्रतीत वृत्ति है इन निबन्धों में साहित्य समाज, सस्कृति विषयक कई प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया है भौतिक सुख सुविधा सम्पन्न बज्ञानिक उपलब्धिया ब कौशलयुक्त मनुष्य अपने अन्दर से रिक्त होता जा रहा है इस आंतरिक रिक्तता की पूर्ति साहित्य ही कर सकता है मानव को प्रतिष्ठा मिले उसके दुल सुख में हिस्सेदार है, उस प्रगति की ओर ले जाय ऐसा साधक रचनानम अपेक्षित है सस्कृति और समाज,

सम्बन्ध की प्रगाढ़ता पाठक की रूचि, कविमम्मलना की प्रासंगिकता में एम ही प्रश्न प्रति प्रश्न है, जिन्ना साए ह और उनके मदम में विचार प्रस्तुतीकरण है

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान में भी हिन्दी साहित्य मृजन विभिन्न विधाओं में यूनाधिक हो रहा ह मन् 35 40 वर्षों क साहित्य का सर्वेक्षण करन पर परिवर्णित होता है कि कतिपय विधाओं में ता उलेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की है जबकि कतिपय विधाएँ ऐसी हैं जिनमें रचनाकम नाममात्र का भी नहीं ह और यह चितनीय स्थिति ह कविता कहानी, उपन्यास आदि के क्षेत्र में प्रशसनीय साहित्य मृजन हमारे यहां उपलब्ध है राजस्थान क आधुनिक हिन्दी साहित्य का मक्षिप्त सर्वेक्षण भी इस कृति में उपलब्ध ह

आतसा में सहजता व सरनता ह तथा कृत्रिमता का मप्रयास दूर रखा गया है

अपनी बुद्धिमत्ता स आश्चयचक्ति करन की आणा में भी नहीं करता तन्निन गन्ना की जा साज की ह उमकी महज अभिव्यक्ति प्रश्न प्रति प्रश्न के द्वारा महा प्रम्नुन है

हालिकासय 1984

लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

संस्कृति और समाज अन्त सम्बन्ध

जीवन का चरम उद्देश्य विपाद या व्यथा नहीं है हा, रसानन्द की प्राप्ति जरूर माना गया है मनीषिया न रस का ग्रह, स्वीकारा है इसकी प्राप्ति का सर्वोत्कृष्ट साधन साहित्य माना जा सकता है वस्तुतः साहित्य स्वयं ग्रह, स्वस्वरूप आनन्द स्वरूप है यह साहित्य लौकिक तथा पारलौकिक दोनों ही प्रकार के आनन्द एक मंगल का माध्यम है इमीनिए मानव आनन्द की खोज में सतत सम्बद्ध है मानव की इस यात्रा में साहित्य, धर्म तथा दर्शन उसका सहभागी हैं

सायजनीन मुस्वियर शब्द राशि का नाम साहित्य है¹ साहित्य का सर-साय जो हितयुक्त है, है साथ ही महभाव, साथ होना, सम्मिलित हित व शान्ति सहित भी इसका अर्थ लिया जा सकता है साहित्य मानव जीवन की सरस ध्याया है वस्तुतः यह मानव मात्र की कलात्मक और आनन्दप्रद रचि की टटोलता है और उसे परिष्कृत कर समाजोपयोगी बनाता है मानव के जीवन को सरस, सुखी और आनन्दित करने के लिए साहित्य एक महती भूमिका का निर्वाह करता है

साहित्य का मानव जीवन के साथ चिरन्तन सम्बन्ध है साहित्य का सृष्टि मानव है और मानव के लिए ही साहित्य की सृष्टि है साहित्य का उपादान और विषय वस्तु यही मानव जीवन है जो समाज साक्षेप है साहित्य के मूल में रागात्मक और तन्मयता के जो भाव हैं उसका भी एकमात्र कारण यही है कि मनुष्य अपने जीवन में सम्पूर्णता को चाहता है मानव जीवन के विविध रूपा की अभिव्यक्ति साहित्य में होती है इसी के कारण समाज में आये बदलावों के फलस्वरूप साहित्य में भी परिवर्तन आता है युगीन परिवेश और परिस्थितियाँ का परिवर्तन और वषम्य साहित्य का आधार है इसलिए साहित्य

1 साहित्य की उपक्रमणिका प विशोरीदास वाजपयी, पृ 1

म युग मानव का युग दुःख, हृष्य विपत्त, प्रेम प्राप्ति भनवता है और वह भागी दारो बनता है मानव जीवन स जुडा हाना हो उसना वैशिष्ट्य है यह जीवन चेतना हीनता का पर्याय नहीं अपितु उसकी साधकता गत्यात्मनता और प्रवाह म है यही सक्रियता साहित्य और जीवा की चेतना की जट्टरी शत है निराशा स श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण नहीं हो सकता है अत विवास्त की अनिवायता व साथ आस्था की अनिनायता भी है

अब हम चेतना की धान करेंगे चेतना जीवन की अनिवायता है यह चेतना की गहन स्थिति ही मानव का अर्थ प्राणधारियो स अधिक महत्त्वपूर्ण बनाती है मनुष्य सहज वृत्ति सम्पन्न है और वह समाज मे विकसित हाना है यदि उन्नत समाज से पृथक् कर दिया जाय तो वह असामाजिक, बबर व सभवत गुणा होगा लेकिन समाज म विकसित व्यक्ति समाज से जान व चेतना ग्रहण करता है प्रत्येक साहित्यकार की चेतना पयवेषण तथा स्मृतिया से विकसित तथा समृद्धिगील होनी है प्रत्येक सामाजिक की चेतना म अन्तर हाना स्वाभाविक है सहज वृत्ति, अनुभव तथा पयवक्षण से चेतना प्रभावित होगी और प्रत्येक व्यक्ति की चेतना म बुनियादी अतर पदा करेगी इस प्रकार व्यक्ति की चेतना मे उमका निजत्व भी सम्मिलित हागा समाज तथा वाह्य परिवेश व सघय का चेतना पर प्रभाव पडता है यानी चेतना समाज साक्षेप ही होगी दूसरी ओर जब कला चेतना की बात करत है ता पाते हैं कि कला चेतना के जितने गहन तल का छुयेगी वह उतनी ही श्रेष्ठ होगी इस गहन चेतना के द्वारा मानव अतजगत मे पहुच कर रम और आनन्द म लीन हो जाता है यही वह स्थिति है जिसमे वह रसानन्द का प्राप्त करता है धम, दर्शन या वाद के माध्यम स इह अलग अलग रूपो म परिभाषित किया जा सकता है लेकिन यह मनन योग्य है कि इस वाह्य परिवेश तथा आतरिक चेतना के अनुभव, मिलन और अभिव्यक्ति से एक भाव जगत का उदय तथा विकास होता है इस वाह्य परिवेश का अनमन पर प्रभाव कस पडता है तथा उमका सत्कारी मन अभिव्यक्ति कस करता यह विचारणीय है

वस्तु और रूप मिलकर भावाश्रित रूप का सृजना हता है साहित्य मे वस्तु और रूप के घनिष्ठ सम्बन्ध को समझना वस्तुत एव साधना है रूप और सोदय की सृष्टि द्वारा ही उच्चमोडि के आनन्द का उद्रेक होता है यह भावाश्रित रूप ही साहित्य है इस भावाश्रित रूप निर्माण मे मन व सस्वार सहयोगी है सस्वार आत्मा का गुण है ये सस्वार अभिव्यक्ति के प्रकटीकरण मे

अपेक्षित सहयोग देते हैं इस आत्माभिव्यक्ति में इस प्रकार सस्कारों का महत्व स्वीकारना होगा ये सस्कार सस्कृति की दम ह जो धीरे धीरे अन्तमन में पठते हैं इस प्रकार सस्कृति की सबलता माननी ही पड़ेगी प्रत्येक सस्कृति अपनी अमिट निशानी छाड़ती ह यह निशानी विभिन्न कलाओं के माध्यम से प्रकट होती ह सम्यता इस सस्कृति का ऊपरी रूप है सस्कृति वं उन्नयन के साथ नलित कलाओं की भी श्रीवृद्धि होती है इस तरह सम्यता और साहित्य के घनिष्ठतम सम्बन्ध हैं यह साहित्य सास्कृतिक प्रकटीकरण ही ह

जब साहित्य के साथ सस्कृति की चचा की जाती है तो परिलक्षित हाता ह कि साहित्य का आधार सस्कृति रही ह सस्कृति को लक्षणों से जाना जा सकता है किन्तु उसकी परिभाषा देना डुरूह है

यो मानवीय जीवन के दीघजीवी मूल तत्वा को सस्कृति समझा जा सकता है इसमें ज्ञान, विश्वास, कलाएँ, नतिकता, रीतिरिवाज, नियम तथा वे सभी योग्यताएँ समाहित है जो एक व्यक्ति समाज का सदस्य होने के लिए ग्रहण करता ह अर्थात् मनुष्यत्व वं आधारभूत तत्वों को सस्कृति कहा जा सकता ह डा हिरेन्द्रनाथ दत्त के अनुसार जाति विशेष के आतरिक भावों की अभिव्यजना सस्कृति ह¹ दूसरे शब्दों में पशुत्व से मनुष्यत्व की यात्रा या मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाओं का रूपांतर ही सस्कृति ह सस्कृति के साथ साथ सम्यता का भी विकास होना है कई बार इनका स्वरूप इतना मिलाजुला होता ह कि उह अलग कर पाना आसान नहीं होता विद्वानों ने सम्यता शब्द का सम्बन्ध सभा से बताया ह पाणिनि के अनुसार सभा में साधु आचरण करने वाले को सम्य कहा जाता है सम्य से ही भाववाचक सम्यता बनी सस्कृति का अर्थ सम्यक करने का भाव अथवा श्रीठा ह² सस्कृति का आतरिक पक्ष से तथा सम्यता का सम्बन्ध बाह्य पक्ष से ह डा हरवशलाल शर्मा लिखत हैं साराश यह ह कि सस्कृति वह सूक्ष्म भावनात्मक तत्व ह जो हृदय की प्रेरणा से बाह्य आचारा में प्रस्फुटित होकर भी सूक्ष्मता के निकट ही अधिक रहता ह और सम्यता वह तत्व ह जो हृदय की अपेक्षा बुद्धि से अधिक सम्बन्ध रखता है उसकी जड़ें सूक्ष्म की अपेक्षा स्थूल में अधिक गहरी उतरी हुई होती हैं अर्थात् वह भीतिकता की ओर अधिक चुकी हाती ह इसलिए

1 भारतीय सस्कृति, श्री हिरेन्द्रनाथ दत्त, पृ 4

2 शूर और उनका साहित्य, डा हरवशलाल शर्मा, परिशिष्ट 2

संस्कृति की घनता सम्पत्ता अथवा परिचयनशील भी है¹ हमारे विचार में संस्कृति एक शून्य आधार और गतिमान गति है जिसे किसी प्रकार की परिभाषा, सीमा अथवा बाधा में बाधित करना अनुचित है और स्थापित मान्यताओं के विपरीत है अज्ञानिकता में मानव संस्कृति में परिवर्तन होता आया है

हिंदी भी समाज के विभाग की निर्दिष्टता संस्कृति है संस्कृति की मानवीयता, अपनी प्रकृतिकता, उनका अन्तः प्रभाव विचारणीय है संस्कृति एक एकी भावात्मक गति है जिस गति में गति किया जा सकता है यह ता मानव की जीवन गति तथा प्रगतिशील साधनाओं का घनीभूत स्वरूप है इसलिए हिंदी क्षेत्र या स्थान विशेष की संस्कृति का उस महान भू भाग की महान संस्कृति का घन माना जाता चाहिए जब हम भारतीय संस्कृति की चिन्ता धारा का नाम लेते हैं तो भारत भूगण्ड में दृश्य तथा मानव के विचार प्रेम में सन्निवृत्त सहाय्य देन वाले शाश्वत गिद्धात्ता और मूल्य की धार ध्यान घना जाता है जो दृग गिता धारा के बट वृत्त को गीचत रह है इस प्रकार संस्कृति समाज की उपज है जिसमें मानव समाज में लौकिक, पारलौकिक, धार्मिक राजनीतिक, कला सम्बन्धी और सामाजिक अन्तुदय के अनुकूल मन बुद्धि अहंकार तथा सम्पन्न सम्मिलित हैं अन्तः इसका प्राणतत्व है और समाज का प्राणतत्व संस्कृति है साहित्य, कला, धर्म, ज्ञान विधान आदि तब संस्कृति की पहचान है संस्कृति और सम्यता का रूपक आत्मा और शरीर से लिया जा सकता है दोनों का प्रयत्न और दोनों का प्रभाव अयोयाधित होता है संस्कृति मानव जीवन की उन्नति व सम्यता का प्राण तत्व है सांस्कृतिक मूल्यों का अवमूल्यन होना पर राष्ट्रीय अस्मिता पर गहरा प्रभाव पड़ता है और कला भी प्रभावित हानी है सांस्कृतिक दृष्टि सम्पन्न राष्ट्र का साहित्य निसंदेह समृद्ध होगा सांस्कृतिक उन्नति के काल में साहित्य की श्रीवृद्धि भी होगी

संस्कृति के अपने मूल्य हात हैं और ये मूल्य शाश्वत होते हैं उदाहरण के लिए सत् चित् अज्ञान को ले सत्य को एक स्थायी मूल्य के रूप में स्वीकारा गया है आज भी सत्य की महता तो माननी पडेगी सत्य का रूप बदल सकता है युग के साथ यह कहा जा सकता है कि 'सत्य' यह है लेकिन परिवर्तन की प्रक्रिया में सत्य की महता अस्वीकारी नहीं जा सकती है इसी प्रकार चित् या जीवन का अपना महत्व है अज्ञान तो भारतीय संस्कृति का आधार है दया, करुणा, प्रेम, बधुत्व की महता भी संस्कृति व साहित्य में स्वीकारी गई है

1 सूर और उनका साहित्य

इसी तरह समता और स्वतंत्रता भी मूल्य हैं इस ममता और स्वतंत्रता के मूल्य का रूप समयानुसार परिवर्तित होना रहा है और इसन पर्याप्त विस्तार कर लिया है और राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक समता व स्वतंत्रता के लिए मानव सतन प्रयत्नशील है दरअसल भारतीय सस्कृति सामासिक सस्कृति है और भिन्न भिन्न जातियों की मानसिक एकता का प्रतिनिधित्व करती है यह भारतीय सस्कृति अपनी विशिष्टता, सावजनिकता, मानव मूल्यों और प्रतिमानों, प्राचीनता, समन्वयपरकता, गहनता और गभीरता में विश्व की सबथेष्ठ सस्कृति रही है मानव और मानववाद का अभ्युदय और विकास इसका उद्देश्य रहा है

भारतीय सस्कृति में आत्मसात करने की शक्ति है परिणामत विभिन्न देशों विदेशी समाजों के रीतिरिवाज और परम्पराएँ इस सस्कृति में घुल गये हैं और विलग दृष्टिगत नहीं पाते हैं प्राचीनकाल में ही अनेक जातियाँ भारत में आईं और इस सस्कृति में मिल गईं इस लोकतान्त्रिक सस्कृति में विभिन्न क्षेत्रों की सस्कृतियाँ भी हैं यह सस्कृति सहिष्णुता, स्वाधीन चिंतन, वैयक्तिक स्वतंत्रता व जीवनादर्श की प्रबल समर्थक है भारत में विभिन्न विचारों मतों और धर्मों के मध्य पूरा समन्वय बिठा रखा है यह समन्वित रूप ही हमारी सबसे बड़ी धरोहर है

धर्म को लें आज धर्म को सखीएँ अर्थों में देखा जा रहा है वस्तु धर्म या शब्द-सकोच हुआ है और धर्म की चर्चा करते ही हयता, सखीएँ मनो-वृत्ति या सीमित सामर्थ्य का मनोभाव जाग्रत होता है लेकिन धर्म अपीम नहीं है धर्म को ऋषि ऋणाद ने इह लौकिक और पारलौकिक कल्याण की प्राप्ति के लिये बनाय गये नियम-समूह कहा है तो महर्षि ध्यास ससार को धारण करने वाले नियम समूह कहते हैं डा राधाकृष्णन के विचार हैं कि अपने दैनिक जीवन में और सामाजिक सम्बन्धों में जिन सिद्धांतों की पालना करना पड़े वे उस वस्तु द्वारा निधारित किए गए हैं जिस धर्म कहा गया है¹

स्पष्ट है कि मानव समाज को संचालित करने वाली मायताओं या नियम समूह को धर्म कहा जा सकता है धर्म मानव कल्याण के लिए है सभी धर्मों के मूल तत्वों व सिद्धांतों का अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट लगित होता है कि मानवीय मूल्यों की रक्षा तथा समाज की उचित व्यवस्था के लिये सिद्धांत

निधारित हात हैं जिन्हें धर्म के नाम से अनिष्टों को किया जाता है। धर्म मानव का श्रेयो-मुक्ती हाथ के लिए प्रेरित करना है। कठिनाई तब पग हाथी है जबकि धर्म के कविता के द्वारा अपनी स्थिति का दुःखदायक परन्तु धर्म का मूल तत्त्व की भांति व अमरत्व व्याख्या प्राप्त ता। व ताभ के नियम नरत है।

धर्म का सत्ता प्रतिष्ठा पर अद्वैतीय व धर्मशास्त्री पाण्डित्या का कामन जमान पर के अर्थात् ता। धर्म का दुःखदायक परन्तु नग जाते हैं। परिणामतः धर्म के प्रतिमानों का अर्थमूल्यन हा जाता है। धर्म उग धर्म का मूल्य पावन पाण्डु नहीं रहत है। अर्थका धर्म का मानव जीवता ग गहगा गम्यव है। गीति प्रक्रिया या माग निर्देशक म नाराजभा नहीं है। इगव धनारा प्रतिमानों म समयानुक्रम परिवर्तन भी धर्मशक्य है। गमनीयता न हात पर धर्म पर आघात हात लग जाते हैं।

अथ दशन के सम्बन्ध में विचार करें। दशन का मतार्थ देना। तत्त्व-लोचन सत्य का पात है। दशन मानव का समक्ष गात वात्री समस्याओं का समाधान का तत्पर रहता है। गार्हित्य गी गमाधान का सारग गद्या में अभिव्यक्त करता है। श्री वनदेव उपाध्याय के शब्दों में दशन भारतीय मनीषिणा के द्वारा अनुभूत सत्य का परिचय देने वाला साहित्य है। दशन मुश्किल मानव जीवन की समस्याओं को सुलभान के लिए प्रयत्न करता है व माग निर्देशित करता है। उच्च व आदश जीवन के लिए जा तथ्य अपेक्षित होने हैं व दशन उपलब्ध कराता है। दशन ज्ञान प्राप्ति का माग है। दशन किसी भी मस्मृति या राष्ट्रों के अध्यात्म चिंतन की नापने का पैमाना है। धर्म की व्याख्या दर्शन करता है। भारतीय धर्म दर्शन के सुनिश्चित आध्यात्मिक तथ्या के ऊपर ही प्रतिष्ठित है।

धर्म का प्रमाद खड़ा करन के लिए दर्शन उसकी नींव रखता है। कोई भी धर्म तत्व तब तक विद्वानों का प्रिय नहीं बन सकता जब तक वह दशन की नींव पर खड़ा नहीं होता है।¹ दशन एक श्रम बद्ध विचारधारा है। मानव चिंतन-शील है और दिव्य से दिव्यतर बनना चाहता है और इस प्रयास में दर्शन उसकी निसदह मदद करता है। दशन जीवन की व्याख्या ही नहीं करता अपितु उसे एक दृष्टि सम्पन्न बनाता है। सभी ज्ञानिकारी आगलना की पृष्ठभूमि में दर्शन (विचारधाराएँ) काय करता है।

1 भारतीय दर्शन सार, प बलदेव उपाध्याय पृ 47

इस प्रकार समाज या व्यक्ति-समूहों को परिचालित करने का कार्य धर्म करता और उसकी व्याख्या व दृष्टि सम्पन्नता दर्शन या विचारधारा भी होती है आज हम किसी भी साहित्य को देखें तो वह एक दृष्टि सम्पन्न या विचारधारा प्रधान दृष्टिगत होता है साहित्य के माध्यम में दर्शाए की रूढ़ी व्याख्या सरस ढंग से प्रस्तुत की जा सकती है और वह भी अनेक प्रभाववात्मक ढंग से साहित्य की पृष्ठभूमि में धर्म और दर्शन (वाद) रहता है मध्ययुगीन साहित्य के उत्प्रेरक तत्व धर्म और दर्शन रहे हैं और आज भी किसी न किसी रूप में ही धर्म के तत्व वाद्य को पाठन तक पहुँचाने और जन भावना का विषय बनाने का कार्य साहित्य करता है

इस प्रकार स्पष्ट लक्ष्य है कि साहित्य का समाज से अविच्छिन्न सम्बन्ध है धर्म और दर्शन की मायताएँ भी समाज से उत्पन्न होती हैं और दूरगामी प्रभाव छोड़ती हैं मायताओं को प्रचारित करने तथा जन जन तक पहुँचाने का सबल साधन साहित्य रहा है और आज भी है आज भी साहित्य को एक सशक्त हथियार के रूप में प्राति व आन्दोलनों के प्रणता व प्रचारक प्रयुक्त करते हैं वर्तमान युग में तो इस जन हथियार का प्रयोग बहुत जोरशोर से हो रहा है आज समता व स्वतंत्रता के लिए साहित्य धारदार हथियार के रूप में प्रयुक्त हो रहा है इससे साहित्य भी प्रभावशीलता का विस्तार ही ज्ञात होता है आज इस द्विद्वारमक युग में जब विश्व सीमित गया है और विज्ञान तथा बौद्धिकता का प्रखर प्रचार है, साहित्य का दायित्व भी बढ़ गया है उसका क्षेत्र विस्तार हुआ है तथा उस अनेक नये प्रश्नों दायित्व का गामना करना पड़ रहा है

सम्बन्धों की प्रगाढ़ता

पारिवारिक व व्यक्तिगत सम्बन्धों में बढ़ रही तनाव तथा मनुष्य और मनुष्य के बीच टूटते सम्बन्धों की चर्चा अप्रासंगिक नहीं है। कई समाचार हैं असाधारण वृद्ध मातापिता का शिक्षा सम्बन्धित पुत्र अपनी पत्नी सहित उनसे विलग हो जाता है और वह वृद्ध दम्पति मौत की प्रतीक्षा करती है। एक भाई वृद्ध सम्पत्ति के विवाद में अपने भाई की निमन हत्या कर लग गया म वहा देता है सास बहू का वाक्पुण्ड्र क्रमश बढ़ता गया और उमरी परिणति मध्यस्थ व्यक्ति के हाट अटके से होती है

न्यायालय में साक्षी देने से राजने व लिए एक ही गांव के 11 बान्सा की नृशस हत्या करनी जाती है धर्मगुरु व निदेश की पालना व प्रश्न पर पति पत्नी के सम्बन्ध विच्छेद हो जाते हैं या एक पुत्र अपने पिता की शव यात्रा में सम्मिलित होने की अपेक्षा हनीमून मनान चना जाता है धर्म के नाम पर गांव के गांव जलादिए जाते हैं या बस से उतार कर यात्रियों को भून दिया जाता है आखिर सम्बन्धों में शिथिलता ही नहीं यह टूटने क्यों पना हो रही है ? यह प्रश्न बराबर बचौटता रहता है

एक समय वह भी रहा है कि गांव में आया हुआ अतिथि किसी व्यक्ति विशेष का न होकर सम्पूर्ण गांव का अतिथि होता था पर विधोरीताल के जामाता उनके ही नहीं सम्पूर्ण गांव का जामाता होते थे भाई अपने भाई के लिए प्राण त्याग देता था घर, परिवार, समाज, गांव ये व्यक्तिगत सम्बन्ध प्रगाढ़ थे लेकिन यह प्रगाढ़ता क्रमश समाप्त हो रही है सम्बन्धों की प्रगाढ़ता में कमी व समाप्त के अनेक कारण हो सकते हैं

परिवार की इवाई टूट रही है और उमक मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं पहले गांव में एक ही परिवार में मुखिया के सभी पुत्र, पुत्रिया, पुत्रों की पत्नियां

श्रीर लड़के लड़किया सम्मिलित रूप से रहते थे और परिवार के अनुशासन का पालन करते थे कृपि या व्यवसाय में सभी भागीदारी करते और सम्मिलित रूप से जीविकोपाजन करते थे परिवार का मृत्यु सबके लिए समान था मुखिया के निर्देश की सभी को अनुपालना करती थी व्यक्ति सम्बन्धों की प्रगल्भता थी सभी साथ साथ भाजन करते उठते बैठते थे समान व्यवहार उनके मध्य था कभी यदि कोई बात भी हो गई तो मुखिया का निर्णय अंतिम होता और उसकी पालना की जाती परिवार के धार्मिक शिक्षा के क्षेत्र में गुरु शिष्य सम्बन्धों की घनिष्ठ स्थिति थी शिक्षक का पूरा सम्मान किया जाता था तो छात्र को स्नेह

मुझे स्मरण है कि मेरे विद्यालय में हिंदी के अध्यापक प्रभाशकर जी थे जिनका अनुशासन व सम्मान ऐसा हृत्प्रभ कर देने वाला था कि विद्यालय में उनके प्रवेश के साथ ही सम्पूर्ण विद्यार्थी वग को उनके आन की सूचना मिल जाती थी फिर न कहीं हल्ला गुल्ला और न कहीं ठहाक यह थोपा हुआ या आतङ्ककारी अनुशासन नहीं था अपितु हृदय से स्वयं का शासन था अब न ता प्रभाशकर जी जैसे लगनशील शिक्षक है और न शिक्षा प्रेमी विद्यार्थी प्रभाशकर जी का कौशल उनका अध्यापन तथा छात्रों के साथ व्यक्तिगत तादात्म्य था गाव की स्थिति यह थी कि व्यक्तियों के मध्य वग भेदहीन भावात्मक सम्बन्ध थे एक की तबलीक सम्पूर्ण गाव की तबलीक थी

गाव में किसी के घर किसी व्यक्ति को तबलीक हुई तो यह सम्पूर्ण गाव की घटना होती एक परिवार में मृत्यु होने पर सम्पूर्ण ग्राम शोकाकुल होता और शादी होने पर हर्षित

घाज परिस्थितिया परिवर्तित हो रही हैं परिवार की दुर्दाई सीमित हो गई है परिवार छिन भिन्न हो रहे हैं व्यक्ति सुविधाजीवी होता जा रहा है उसका घेरा सीमित हो गया है भावना की जगह वह अधिक तांत्रिक हो गया है इस परिवर्तन में जीवन मध्य तथा आधुनिक परिस्थितियों संपादित प्रभावित करती हैं सम्पूर्ण परिवार या कुटुम्ब का एक साथ कृपि या व्यवसाय करना या एक ही स्थान पर रहना संभव नहीं रहा है परिणामतः हर व्यक्ति को अपने जीविकोपाजन के लिए प्रयत्न करना पड़ रहा है परिवार का साम्य भिन्न भिन्न स्थानों पर पहुँच कर व्यवसाय, कृपि या नौकरी करता है और फिर उसका शोध वह, उसकी पत्नी और उसके बालबच्चे हो जाते हैं

ऐसी स्थिति में वह अपने माता पिता या अन्य रक्त सम्बन्धियों की चिन्ता को कम करते हुए वह उन्हें भूला देता है फिर उसकी पीड़ा सिर्फ उम तक सीमित हो जाती है स्थिति यही नहीं है वरन् वह इतना सकीर्ण तथा स्वार्थी हो जाता है कि उसका क्षेत्र स्वयं से प्रारम्भ होता है वह, उसके बाद उमकी पत्नी व फिर बच्चे न इससे आगे और न इससे पीछे उसका लक्ष्य प्रस्त भाई हमारे शहर में बिना वेतन के अज्ञात पर है और अपने ग्रह तथा नौकरी के लिए सघप कर रहा है तो उसे कोई चिन्ता या दर्द नहीं है उसे सम्बन्धों का एहसास तो है लेकिन वह उमके लिए चिन्तित नहीं है वह अपने और अपने सीमित घरे में व्यस्त है परिवार में मन्दाधिक बहुस्थिति सास बहू के सम्बन्धों को लेकर उत्पन्न हो जाती है हर सास यह तो महसूस करती है कि वह भी अभी बहू रही है लेकिन अपनी बहू को दासी समझती है और सम्भोग में अतविराध प्रारम्भ हो जाता है साम घर की प्रतिष्ठा, अनुशासन और मालिकाना हक के लिये सघप करती है तो दूसरी ओर बहू अपना बचस्व कायम करने, अपने ग्रह का सुरक्षित रखने व स्वयं का मालमिन की स्थिति में आन क लिए सघप करती है वौद्धिकता उसकी मदद करती है

वरतुत यह दो पीढ़ियों का सघप होना है और यह शीतयुद्ध, वाक्ययुद्ध तथा कभी कभी प्रत्यक्ष युद्ध की स्थिति पदा हो जाती है इसकी परिणति दुःखद होती है इस सघप में मध्यस्थ हैं मास का पुत्र व बहू का पति वह पीड़ादायक स्थिति में रहता है तथा मानसिक तनाव भेनता है उमकी नियति जाना और उपालभ खाने और अपने को हेय समझने की होती है इस मानसिक तनाव का बर्द बार घुरा असर हो जाता है भावुक व्यक्ति ज्यादा तबलीफ पाता है यह स्थिति सन्ध्या की प्रगाढता को कम करती है और रिक्तता पदा कर देती है पतृक विवादा से भी सन्ध्या में कमी हो जाती है

विपमताओं के फलस्वरूप जीवन सघप तीव्र हो रहा है और इस जीवन सघप में एक लड़का पढ़ लिखकर नौकरी करता है या व्यवसाय प्रारम्भ करता है वह विवाह करत ही अपनी पत्नी को ले परिवार में विनग हो अपने सुख स्वप्नों में खो जाता है अब उसके सुख दुःख से पत्नी के अनिश्चित अर्थ किसी का सबध नहीं रहता है दूसरी ओर अराहाय पित्त अपनी बृद्धा पत्नी को ले एक टूटे फूटे मजान में बीत दिना की बातों को स्मरण करता है तथा अपने भाग्य का कोसता व श्वर का उपालभ दता है

मैंने देखा है एक पिता ने अपने पांच पुत्रों को जीवन सघप के लायक

किया, स्वयं तकलीफें भोगी और किसी बेटे को कष्ट न होने दिया लेकिन पुत्र होशियार होने पर अलग होत गये तथा अन्तिम दिन उस लकवाग्रस्त पिता न बड़ी कष्टना व वेदना के साथ निकले वह एडिया रगड रगड कर मरा तथा पाचो पुत्र उसके पास होते हुए भी उससे बहुत दूर रहे किसी ने उस बृद्ध असहाय की तकलीफ में भागीदारी करने का प्रयास नहीं किया वतमात राज नीतिक व आर्थिक परिस्थितियों में उन पुत्रों के मानव मूल्यों का परिवर्तित रूप यही रहा होगा कि वे अपने व अपने बच्चा के हितों को देखें शहरी यात्रिक संस्कृति का पीडादायक रूप यह हो गया है कि मनुष्य से उसकी सवेन्ना समाप्त हो गई है दया, कष्टना, हृष, विपाद वेदना सभी समाप्त हो गये हैं और उसका जीवन एक ढर्रे पर चलने लगा है आज पास पडोम के दुख दद से कोई रिश्ता ही नहीं रहा है सिर्फ पसा ही मूल्य रह गया है

एक समय था कि गाँव में किसी की मृत्यु हो जाने पर सम्पूर्ण गाँव में तब चूल्हा नहीं जलता था जब तक कि उस लाश का क्रियानुमन न कर दिया जाता लेकिन आज स्थिति यह है कि पडोम में मृत्यु होने पर व्यक्ति तुरंत खाना खाकर कार्यालय जाता है उपस्थिति पत्रक में हस्ताक्षर कर वापस शवयात्रा में सम्मिलित हो लच टाइम में सामूहिक नाश्ते पर पहुँच जाता है उस व्यक्ति के लिए यह एक सहज काय व्यापार है आज हम समाचार पत्रों में सामूहिक हत्याघात व बच्चा की सामूहिक निर्मम मौतों के समाचार नाश्ता करते हुए पढ़ लेते हैं और हमारे लिए एक समाचार से अधिक उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती हृदय में न तो टीस उठती है और न आँखें भीगती हैं

राजनीति में अयतन के समान ही सम्बन्धों की प्रगांडना पर प्रभावी असर डालता है राजनीतिक दलों के विवाद में कई परिवार छिन्न भिन्न हो गये हैं एवं ही परिवार के व्यक्ति विभिन्न राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता होते हैं धीरे धीरे घर बाहर अपनी विचारधारा का समर्थन किया जाता है और फिर वह परिवार बिखर जाता है बेटा माँ के यहाँ छापे डलवाना है तथा भाई अपने भाई के यहाँ क्योंकि राजनीति में घात प्रतिघात अनिवायता है

धम के नाम पर भी सम्बन्धों में दूरी घा जाती है धम का प्रारम्भ कभी समाज के लिए कल्याणकारी रहा होगा और धम व राजनीति एक रहे होंगे लेकिन धम के नाम पर किया जान वाला पाँखड और अत्याचार धम की मूल भावना पर ही कुठाराघात करते हैं परिवार का एवं सदस्य अथ धम के मानन

की कल्पना ही नहीं कर सकता है और करने पर उसे परिवार त्यागना पड़ता है धर्म आज वैयक्तिक सम्बन्धों पर किस प्रकार प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव डालता है इसका एक उदाहरण बोहरा सम्प्रदाय है बोहरा सम्प्रदाय की तीन चौथाई आवादी भारत में है

गत कुछ वर्षों से इस सम्प्रदाय में सुधारवादी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिम्मे मुत्प धर्मगुरु द्वारा किए जा रहे अत्याचारों तथा प्रतिगामी कार्यों का विरोध भी किया इस आन्दोलन के कार्यकर्ताओं ने सामाजिक व पारिवारिक कार्यों में धर्म गुरुओं के हस्तक्षेप का जबरदस्त विरोध किया पदा होने में मरने तक धर्मगुरु की समूह्य स्वीकृति (टेकम), कब्रिस्तान में शव को दफनाने के लिए अनुमति, विद्यालयों में प्रवेश और अन्य विकासात्मक कार्यों, चुनावों में वोट आदि के लिए स्वीकृति जैसे अनुचित हस्तक्षेप का सशक्त विरोध शुरू किया इसका परिणाम धर्मगुरु और उनके अनुयायियों द्वारा डराना, धमकाना, समाज से बहिष्कृत कराना आदि अनक अनियमित कार्य किए गए साथ ही परिवार में विघटन भी हुए सम्बन्धों में एक कटुता उत्पन्न हुई धर्म गुरु का अनुयायी बेटा अपने सुधारवादी पिता की मृत्यु पर शक्यात्रा में न जाकर पत्नी को लेकर हनी मूठ मनाने चला जाता है घायल पुत्र को देखने की अपेक्षा ताश खेलता है सुधारवादी विचारधारा के पति से, पिता के बहकावे में आकर पत्नी पथक हो जाती है बड मुल्ला की अनुमति न मिलने से विवाह नहीं होते हैं और फिर सामूहिक विवाह बोहरा मूथ को प्रारम्भ करने पड़ते हैं

श्री असगर अली इज्जिनियर, गुनाम हुसन, आबिद अदीब प्रभृति सुधारवादी बोहरा ही बतायेंगे कि धर्म के नाम पर कितने पाखड हा सक्त हैं और उससे कितनी पाखड व यातना भोगनी पडती है तथा सम्बन्धों में टूटन कैसे पदा हो जाती है? मीनाक्षीपुरम में हिन्दू से मुस्लिम बने व्यक्तियों के परिवारों की स्थिति कसी होती है, वे ही मुक्तभोगी बता सक्त हैं लखनऊ में शिया सूनी दगे कथोलिक और प्रोटेस्टेंट के मध्य दगे आदि मूल्यों की टूटन ही दशति है आज पजाब में धर्म के नाम पर बस से उतार कर विशेष धर्म के व्यक्तियों की नशस हत्या गोलियों से भून कर की जा रही है और मानवमूल्यों व सम्बन्धों की चिंता निसे रही यह विचारणीय है

एक व्यक्ति अपनी प्रेमिका की विवाह पर असहमति की सुन हत्या कर देना है और उमनी मूत देह के साथ रमण करता है यह आधुनिक बोध

पागलपन है सम्बन्धों की टूटन महा विचारणीय है दूसरी ओर गुलेरी जी की कहानी 'जगन कहा था' स्पष्ट है

आज स्थिति इतनी बर्बर हो गई है कि महानगरो की बात छोड़िये सामान्य नगरों में भी व्यक्ति को यह पता नहीं है कि उसका पड़ोस में कौन रहता है ? उसे क्या सुनदुल है ? कल उनके यहां डाक्टर आया था तो क्यों आया था अथवा वह लगडानर कलस क्या चल रहा है ? इन सबसे आज कोई मतलब नहीं रहा है गभवत इम्व सम्बन्ध में यह भी तक निया जा सके कि पडामी के घर में भावने का स्वभाव अच्छा नहीं है या वैयक्तिक स्वतंत्रता और समता की धान लड़ाई जा सकती है लेकिन इमन न तो व्यक्तिक स्वतंत्रता समाप्त होती है और न समता के विरुद्ध ही यह है

वस्तुतः सत्य यह है कि मानव मूल्या की चिन्ता कम होनी जा रही है और सम्बन्धों की प्रगाढ़ता अब नहीं रही है अब मनुष्य न तो किसी के दुःख सुख की चिन्ता करता है और न इसमें भागीदार बनना चाहता है ज्ञान विज्ञान का विस्तार, बौद्धिकता मौलिकता आदि के फलस्वरूप विश्व समुचित हुआ है तो व्यक्ति भी समुचित हो रहा है आज व्यक्ति की दुनियां बहुत छोटी हो रही है और उसका हृदय विपाद सुन दुःख अपनत्व का घेरा सिर्फ उसने पास तक सिमट कर आ गया है भावनाओं की अपक्षा बौद्धिकता प्रभावी हो गई है यही स्थिति रही तो मनुष्य शीघ्र ही राबोट(लौह यांत्रिक पुरुष) बन जायेगा यह समय शीघ्र ही आ रहा है सम्बन्धों की प्रगाढ़ता में जो कमी आ रही है वह चिन्तनीय है

कविसम्मेलनों की प्रासंगिकता

कविता मानवीय चेतना का प्रतिबिम्बन है। चेतना का यह प्रतिबिम्बन रचना प्रक्रिया से हाती हुई शब्द बद्ध होती है। यो कह कि कविता में वस्तु और रूप दोनों हैं। बाह्य जगत का कवि की मानसिकता के साथ प्रकटीकरण कविता है। समाज की चेतना का प्राग्दूष कविता के माध्यम से होता है। इस प्रकार कविता समाज सापेक्ष है। समाज के इतिहास के माध्यम ही कविता का इतिहास है। यह चेतना कविलो के निर्माण तथा विकास के साथ साथ दृष्टिगत होती है। मनुष्य सीढ़ी दर सीढ़ी सुसंस्कृत होता है और इसमें काव्य अपनी महती भूमिका का निर्वह करता है।

कविता (काव्य) ने अपनी ऊर्जा लोक जनजीवन से ग्रहण की है। प्रारम्भिक काल में जब मनुष्य श्रम से क्लान्त हो एक स्थान पर समूहबद्ध होता था और उसमें से किसी के अन्त मन से जो वीर्य निर्भरित हृति थे व समूह को प्रवाहित करते थे। कभी कभी ऐसा भी होता था कि उस व्यक्ति के साथ एकनित व्यक्ति भाव जगत की यात्रा साथ साथ करत होंगे और यह समूहगीत प्रारम्भ हो जाता था। एकनित समूह में एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा काव्य पाठ एवं ही स्थान पर करना ही कवि सम्मेलनों की भूमिका हो सकती है। लोक जनजीवन में ऐसी कई अवसर आते थे जहाँ रसिक व्यक्ति अपने अन्त चेतना का प्रकटीकरण उपस्थित श्रोताओं के समक्ष करते थे। त्योहार पर्वों पर शादी ब्याह के अवसर पर या विजयोंसव पर यह काव्य पाठ होता था। ये लोकगीत या लोक काव्य लोक संस्कृति का आधार थे। उस युग की चेतना का प्राग्दूष इन गीतों में मिलता है।

इस प्रकार कवि योतकार अपने युग को प्रभावित करता रहा है। लोक संस्कृति से यह परम्परा नगरीय संस्कृति में प्रवेग करती है। चूँकि उम समय का काव्य म गमता का विशेष महत्त्व था और स्वर की मधुरता भी इसमें अति-

चाये तत्र था अतः कवि गायन राजाओं के यहाँ विशेष महत्त्व पाते थे राज-
दरवारा में वाद्य गोष्ठियाँ होती थीं इन गोष्ठियों का महत्त्व राजाओं या
शासकों के लिए उनके मनोरंजन के लिए विशेष था उनके इंगित करने पर
यह प्रारंभ तथा समाप्त हो जाती थी विद्वानों की संगोष्ठियों या सम्मेलनों में
वाद्यमय शास्त्रार्थ होता था यह वाद्य गोष्ठियाँ राजदरवारा से दूर देवा-
लयों में भी पहुँचीं देव मंदिरों या विभिन्न स्थानों पर वाद्य पाठ होता था
वृष्णलीलाया या राम की वदना का गायन अथवा भक्त कवि करते थे और
उपस्थित समुदाय आदि विभार ही उसे सुनता और आनन्दित होकर एक
विशिष्ट भाव लोभ में विचरता करता था इन वाद्य पाठों में एक विशिष्ट
छाप होती थी लेकिन मानवीय वाद्य भी मिलता था और जनजीवन में इनका
विशेष प्रभाव भी दृष्टिगत होता था समुदाय में होने वाले इन भजन पाठों
को कवि सम्मेलनों की पीठिका कहा जा सकता है

यह वाद्य पाठों की परम्परा बरसात पनगरों में बढ़ने लगी साहित्यानु-
रागी कुटुम्ब अतिरिक्त होकर बरसात पनगरों में वाद्य पाठों का आयोजन
करने लगा विशेष उत्सवों, पर्वों या शोहारों के अवसरों पर एकधियाँ कवियों या
गायकों को आमंत्रित कर उनके गीतों या कविताओं का सुनना एक फैशन हो
गया था स्वतंत्रता संग्राम में भी कवियों ने स्वातंत्र्य चेतना को प्रचारित
करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है और जनसमुदाय में किसी
विशेष अवसर पर एकत्रित होकर, कविता पाठ किया जाता था जिसमें अंग्रेजों
के शासकों के जुल्मों का वर्णन तथा आजादी की तड़पन होती थी इस तरह
कवि सम्मेलनों की परम्परा हमारे यहाँ बहुत पहलू से चली आ रही है

कविसम्मेलनों में उपस्थित जन समुदाय की अपनी महती भूमिका है श्रोता
की पसन्द पर ही कवि सम्मेलन चलता है अतः कवियों को भी जन समुदाय
की रुचि का पूरा ध्यान रखना पड़ता रहा है कविसम्मेलनों के प्रचार के पीछे
जनसमुदाय या समूह का आदिता होना भी है कवि की मानसिकता के साथ
सभी आनाओं की मानसिकता स्वतः जुड़ जाती थी वे ऐसे गीत, कविता
पसन्द करते थे जो कणप्रिय सुमधुर हो गये हो और उनके मन को आनन्दित
करें उनके दुःखद का भागीदार बन परिणामतः कविसम्मेलनों में कवियों की
विशिष्ट पहचान बनती गई

सिनेमा के प्रचार से कविसम्मेलनों में भी बदलाव आया सस्ते मनी
रजा का साधन सिनेमा बन गया और जनसमुदाय कुटुम्ब ही राशि व्यय कर

कहानी, ऐशान तथा गीत का ध्यान उठा सकता था। विनया की व्यापना का प्रभाव कवियों के मानस पर भी पड़ा और ऐसे गीतों या कविताओं को कवि-सम्मेलनों के मंचों से गाये जाने लगा जिन्हीं लय विनया के गानों पर आधारित हो या उनसे मिलती जुती हो। इसके साथ ही ग्रामीण व्यक्तियों को सहज बनाने के लिए हास्य के चुटकल पसन्द किए जाने लगे। अत्र कविमम्मनना का मंच दो प्रकार के कवियों के हाथों में आ गया। एक के जा गीतों या कविताओं को समझकर ठग सफिन्नी गीतों के समान गा गा कर या चटकारे लेकर सुना सकते हैं, दूसरे के जा हमोड कविताएँ, चुटकुलें, पराडिया सुना सकते हैं।

इसका परिणाम यह हुआ कि गभीर युग बांध की कविता न तो मंच से सुनाने का कवि साहस करता और न श्रोता उसे पसन्द करता। कविसम्मेलनों के मंच का माइक गलेवाज व लटकें भटके के कवियों ने पकड़ लिया। नीरज, बालकवि बरामो, साधु ठाकुर, विश्वेश्वर शर्मा बाबा हावरसी, विश्वनाथ विमलेश, प्रभा ठाकुर आदि का मंच पकड़ने का आधार यही है। दूसरी ओर गभीर कविता या नई कविता का मंच से पढ़ना दुष्कर होना लगा। ऐसी कविताएँ योत सराही जाने लगी और युग केना तथा मानव मूल्यों के रूप में चर्चित हुईं लेकिन कविसम्मेलनों के मंच पर उन्हें हूटिंग मिलती। इस प्रकार की अतुकात कविताएँ कविमम्मनना से बहिष्कृत हो गईं। आश्चर्य यह है कि इस स्थिति को स्वीकार कर लिया गया लेकिन इस पर गभीरता से विचार किया गया हो, यह दृष्टिगत नहीं होता है, एक निवृत्त टकराव जरूर प्रारम्भ हो गया। गीतियों में कभी कभी इस प्रसंग पर चर्चा होती लेकिन उनकी साधकता समझ में नहीं आई।

यहाँ एक प्रश्न कविसम्मेलन की प्रासंगिकता और कविता को लेकर है क्या गभीर युग की परिवेश की कविता की अपेक्षा सामान्य अग्रगौर चुटकला को आम आदमी पसन्द करता है? क्या जनता की रुचि का अवमूल्यन हुआ है या कविता ही अपने मम्म स भटक गई है? और नीरस व काव्यगुणविहीन हो गई है?

हम यह मानते हैं कि साहित्य समाज सापेक्ष है और वह जनता के दुख-सुख से जुड़ा होता है। दूसरे शब्दों में कवि यदि जनजीवन, युग परिवेश से सम्बद्ध नहीं होगा तो उसकी कविता जीवन्त नहीं हो सकेगी। यह जुड़ने का कार्य कहने की अपेक्षा गभीर और जटिल है जिसका ज्ञानना, समझना और अनुपातन

करना कठिन है ऐसी स्थिति में कवि का दायित्व क्या है? क्या वह कवि सम्मेलन के श्रोताओं के लिए कविता लिखे अथवा युग बोध तथा अपने आस पास के मानव के दुख दद की काव्य गुणा युक्त रचना का सजन करे कवि सम्मेलनो में जनता की मानसिकता चुटकले या सामान्य रचना सुनने की क्यों है? यहाँ कवि का सवाल पुन सामने है मरे विचार से जन कवि का समझना कठिन जरूर है लेकिन असंभव नहीं है

सामान्यतया यह माना जा सकता है कि इस मानसिकता या रचि के पीछे श्रोता को एक सहज होन का भाव हो सकता है वह पहले ही चिन्तायुक्त है और एक बोझिल जिन्दगी जी रहा है ऐसी स्थिति में वह सहज होना चाहता है मन मस्तिष्क पर स दबाव हटा कर वह थोड़ा आनन्दित हो लेना चाहता है और उसे सहजता या सामान्यीकरण अपने परिवेश को पहचान कर या युग के दुख दद में सांभोदाय बन कर भी हो सकते हैं रचना जीवन का अंग है रचनाकार अपनी मन स्थिति की कविता की रचना ही करेगा

यदि वह ऐसा नहीं करता है तो अपने दायित्व से भटक जाता है अपने सृजनकर्म से चूक जाता है उसे युगोन् परिवेश की रचना करते रहना चाहिये और जनता के एक बड़े अंग को भागीदार बनाने के लिए प्रयत्नरत रहना चाहिए उसकी कविता का दत्तचित होकर नहीं सुना जान पर हताश होन की आवश्यकता नहीं है वस्तुतः ऐसी गभीर और छद्मयुक्त कविताओं के रचनाकार का कविसम्मेलनो का मोह भी त्यागना चाहिए उसे ऐसी कविताएँ सगोष्ठिया में सुनाने रहना चाहिए और धीरे-धीरे क्षेत्र विस्तार करने की आवश्यकता है उह कविसम्मेलनो की दुर्गति के लिए जिम्मेदार हास्य व चुटकुतेबाज कवियों को आमंत्रित नहीं करना चाहिये यह द्वन्द्व तो हाथा ही और सधय से हताश होन या हवा में मुक्क मारन की आवश्यकता नहीं है

नोटकी का जमाना जा रहा है रटियो और टी वी के इस युग में मानव की संवेदनाओं को सुरक्षित रखना है अत नये माग संलागना आवश्यक है गभीर बौद्धिक व अतुजात कविताओं को सुनना व सुनाना माहस का कार्य है मुझे स्मरण है कि भरतपुर में सूरोत्सव के अवसर पर राजस्थान साहित्य अकादमी ने हिंदी साहित्य समिति भरतपुर के सहयोग से कविसम्मेलन आयोजित किया गया था और गम्भीर अतुजात कविताओं को सुनाने पर जब हल्ला हुआ तो तत्काल कविसम्मेलन समाप्त कर दिया गया और कुछ समय बाद पुन लघु कविसम्मेलन हुआ जिसमें श्रोताओं ने गम्भीर कविताएँ बड़े ध्यान से सुनी

इसी प्रकार 27 नव 83 को भीलवाड़ा में आयोजित कविसम्मेलन में उपस्थित सीमित श्रोताओं ने नीरज के साथ-साथ भवानीप्रसाद मिश्र की गम्भीर कविताएँ अधिक तन्मयता के साथ सुनीं न कोई हल्सा न कोई आवाज कहने का तात्पर्य यह है कि रचि को परिष्कृत करने व जनमानस बनाने की सर्वाधिक आवश्यकता है रचनाकार को सतही कविता के लिए गम्भीर कविता को त्यागना नहीं चाहिए दरअसल सबसे बड़ी कठिनाई सुविधाजीवी हो जाने की है रचनाकार अपने सुविधाजीवी व विशिष्ट बना लेता है और समाज से घट जाता है तो वह अपने दायित्व और सामर्थ्य से भी छूक जाता है विशिष्ट बनने पर उसे खतरा जनता में नहीं, अपने साथी कवियों से ही होगा

आज कवि और जनता एक दूसरे की रचि को जाने और कवि अपने कम को गम्भीरता से ले परिष्कृत रचि होने पर उसकी कविता का महत्त्व बना रहेगा उसकी कविता अथवसा नहीं खायगी हा, बीच का माग तलाशना अधिक खतरनाक है कविसम्मेलन में सतही कविता रहे यह सम्भव नहीं है कवि सम्मेलन की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठ सकते हैं लेकिन कविता पर नहीं कविता की महत्ता को कम नहीं किया जाना चाहिए

पाठक की रुचि

भाज फिर मैंने सजय के हाथों में बर्नेल रजित का सद्य प्रकाशित जासूसी उपन्यास देखा दरअसल पाकेट बुक के जासूसी व यौन उपन्यासों को लेकर सजय और मेरे मध्य अनेक बार विस्तार से चर्चा हो चुकी है सजय वी ए प्रथम वर्ष का छात्र है तथा मेरी बहिन का पुत्र है मैं उसे निरंतर श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों के अध्ययन के लिए प्रेरित करता रहा हूँ लेकिन वह बार-बार जासूसी उपन्यास, सत्य कथाएँ, रहस्य रोमांच व यौन विषयक कहानियों की पुस्तकें ले आता है और चटखारे लेकर पढ़ता है किराये से पुस्तकें लाकर पढ़ने का शौक उसे है मैं उसकी रुचि को देखता हूँ और मुझे अनेक प्रश्नों का सामना करना पड़ता है दरअसल पाठक की रुचि का एक व्यापक प्रश्न सामने है पाठक की रुचि क्या है और भाज पाठक क्या पढ़ना पसंद करता है ? यह विचारणीय है

पाठक का सामान्य अर्थ पढ़नेवाला है लेकिन यह पठन तो बहुआयामी है 'सत्यनारायण की कथा' पढ़ने वाला पंडित, विद्यालय-महाविद्यालय का छात्र व अध्यापक समाचार पत्रों को पढ़ने वाला मिल मजदूर, बंताल कथा पढ़ने वाला किशोर, सत्य कथाएँ, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तथा समीर रानू के सस्त रोमांटिक उपन्यास पढ़ने वाला युवक और हरीश भादानी की लम्बी गभीर कविता नष्टो मोह, डा विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का 'जाग मंछदर गोरख आया' या पानू खोलिया का उपन्यास 'सतर पार के शिखर' को पढ़ने वाला भी पाठक ही है फिर हमें कौन से पाठक की सर्वाधिक चिन्ता है और क्यों है ?

भाज मनोहर कहानियाँ, सत्य कथाएँ व सस्ते रोमांटिक जासूसी उपन्यासों की चिन्ता सर्वाधिक की जा रही है दूसरी ओर ये अभिजातिक सह्या म बाजार में आ रहे हैं, नये बिये जा रहे हैं और पड़े जा रहे हैं भावचयजनक

तय्य ता यह है कि साहित्यिक गोष्ठियों में अथवा कुलीना के मामल इन रामा टिन जाभूसी व मत्स्य कथाओं पर तीव्र प्रहारगतां छद्म रूप से इन्हें पढते हैं या यात्रा में ऐसे ही प्रथम बुक स्टाल पर द्रव्य करन ह और पाठ जान पर बहते हैं समय व्यतीत करन के लिए यह पत्रिका मत्स्य कथा ठीक है आशिर यह दाहरा मानदण्ड क्या है ?

इन पुस्तकाया पत्रिकाया पर विचारों का भङ्गाने या मोनाचार का प्रचारित करने का आक्षेप लगाया जा सकता है तो साहित्यिक वृत्तियां में भी मनो विचारों का भङ्गाने वाला या यथाथ के नाम पर नग्न अश्लील चित्रण का व्यापकता मिल सकती है आज की अनन्य कहानियां में ऐसे विकृत चित्रण मिलते जो घर में पुत्र पुत्रिया के सामने पढने योग्य नहीं हैं आचलित साहित्य के नाम पर मनमाना चित्रण कर उस पाठकों व सम्मुख प्रस्तुत करना और रचि की बात करना कहा तक ठीक है ?

रचि अनन्य प्रकार से प्रभावित हाती है सबमें पहल रचि पर स्वभाव का प्रभाव पढता है मनोवृत्तिया या संस्कार यहां कायरन है मनुष्य सुखा भिलायी है और उसे सुखप्रद सगे यह पसन्द करता है सुख व आनन्द की प्राप्ति का प्रयास उसका सहज स्वभाव है वह इस प्रकार के काय करता है या पसन्द करता है जिममें सुख व आनन्द हो वह इसी आनन्द के बशीभूत ही ये वृत्तिया पढता है एम पठन में वह सहजवृत्ति का अनुकरण करता है यह अनुकरण शिक्षा ससग और परिस्थितियों में प्रभावित हाता है

किशोर वय में हिंसा और सेक्स प्रधान कहानिया पढने का मुख्य कारण ही यह महज वृत्ति ही है वह परिस्थितियों का देवता है अपन आत्मपाम हा रहे परिवतना का पहचानन का प्रयास करता है और अपनी मूल इच्छाशक्ति काम से प्रभावित होना है व उस यौन सम्बन्धी व पाशविकता प्रधान कथाएं पसन्द आती है धीरे धीरे उसकी रचि इस ओर अग्रसर हो जाती है वह युवक अपने में इस मनोवृत्ति से एन महज आनन्द प्राप्त करता है इस प्रकार वह अपने मन पसन्द इन साहित्य का अधिकाधिक पढना है यदि उस विचारों के अभिभावक इसका प्रतिरोध करत हैं, उस इस प्रकार के उपन्यास कथाएं पढने के लिए नकारत हैं तो वह चुपचाप रात्रि को अथवा अध्ययन की पुस्तका के मध्य रतकर इन्हें पढता है वह चालाकी सीखता है तथा दड सकल्पित हो यौन परक या हिंसापरक पुस्तकों अधिक पढता है अनिजात वय के अभिभावक जा

स्वयं इस प्रकार के कामुन या जामूसी उपवास या क्याए पटते हैं उनके महा भुवको को यह पडने स रोना नही जा सजता है उनन तो सम्नार ऐसे 'सर्व साहित्य' के लिए उत्प्रेरित ही करते है

यहाँ एक प्रति प्रश्न यह भी हो सकता है कि पुस्तकें पढने की आवश्यकता ही क्या है ? क्यों वह धरन ध्वसा रोना पुस्तकें पडता है इसका सामान्य सा उत्तर यह है कि पुस्तकें ज्ञान विषयों की शक्ति के लिए, मनोरजन के निमित्त तथा अनेकता के अज्ञान की मुक्ति में महयोगी हैं पुस्तकें मिश्रण हैं जो पाठक को मनोरजन देती हैं तथा अनेकता के बाध से मुक्ति दिलाती हैं आज का व्यक्ति मशीनीकरण के आर्थिक मंत्रास के वर्तमान समय में बेहद व्यस्त है उसकी जिदगी भाग दौड़ में व्यतीत हो रही है यथा के पुर्जों के समान उसकी उपयोगिता यह गई है वह इस मशीनी युग में अपने वा भी इस्पात का समझता है

ऐसी परिस्थितियों में समय मिलते ही उसका मन सहज होना तथा मनोरजन के लिए प्रेरित करता है और आमोदप्रमोद के लिए वह माग तलाशता है समय कम है लेकिन वह उसका उपयोग करना चाहता है चंद्रबाता सतति या भूतनाथ जैसे अनेक खडा के चक्कर दर चक्कर के उपवासों को पढने के लिए उसको फुरसत नहीं है और फुरसत मिलने पर ध्यान के लिए न तो सामग्री है और न समय ऐसी स्थिति में पाठक आमोदप्रमोद के लिए जो भी सुलभ हो उसे स्वीकार कर लेता है वह चलचित्र (सिनेमा) या टेलीविजन इसी आनंद से प्रेरित होकर देखता है साहित्य की पुस्तकें उससे दूर हो जाती हैं यात्राया भी समय व्यतीत करने के लिए वह हकी फुकी पत्रिकाएँ या पुस्तकें बुक स्टाल से खरी कर पढना है और यतन्य पर पहुँच कर उसे भूल जाता है

ऐसी स्थिति में विगुद्ध साहित्य की पुस्तक के पाठक वर्ग का प्रश्न उत्पन्न होता है- जब आज आम आदमी में शिक्षित वर्ग का प्रतिशत बहुत ही कम है और उसमें भी साहित्य के पाठक का प्रतिशत तो अत्यल्प है ऐसे पाठक की रूचि का मवाल भी सामने है एक प्रति प्रश्न यह भी कि साहित्य का पाठक क्या विगिष्ट है ? यहाँ इसका उत्तर हमें ही होगा साहित्यिक पाठक का एक विशिष्ट वर्ग है और उसकी रूचि अपने सीमित क्षेत्र से प्रभावित होती है सामान्य पाठक किसी पत्रिका को खरी करता है, किराय से लाता है अथवा

निशुल्क देखता है तो सब प्रथम वह भावपक चित्रों को देखेगा तत्पश्चात् कुछ वल्ले, हास्य व्यंग्य की रचनाएँ, सांस्कृतिक लसा, कौतुहल या रोचकतापूर्ण विषयों पर जाएँगा तत्पश्चात् अपनी रुचि का विषय प्रीडा, विनान, गृहविज्ञान, सिनमा आदि पर विचार करेगा और अतः मगभीर साहित्यिक लेखा को छाड ही देगा

इस सामान्य पाठक की रुचि को देखत हुए आज की व्यावसायिक पत्रिकाएँ और पत्र इस प्रकार की विविध सामग्री का प्रवाशन करते हैं जो बाल, युवक, वृद्ध, स्त्री पुरुष आदि सभी के अनुकूल हो ये पत्र पत्रिकाएँ अपनी प्रसार सख्या ग्राहकत्व के आधार पर बढ़ती हैं और उह अपने सामान्य ग्राहक पाठक की रुचि का पूरा स्मरण रहता है यहा ध्यातव्य है कि पाठक की रुचि को चिन्ता नहीं उसका स्मरण रहता है अचार चटनी मुरब्बे से लेकर भविष्य फल का विवरण या फिल्म तारिकाआ न किस्मे इही कारणों से ऐसी पत्र पत्रिकाओं में प्राप्त होत है धर्मयुग साप्ताहिक हिन्दुस्तान नवनीत, गृहशोभा, मनोरमा आदि पत्र पत्रिकाएँ इनके दृष्टान्त हैं साहित्यिक पत्रिकाओं की अकाल मृत्यु का कारण भी ऐसी ही रुचि बननी है वित्तीय संकट तथा पाठक ग्राहक की कमी से अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ अणजीवी हुईं और जो गिनी चुनी प्रकाशित हो रही है वे भी अन्तिम सास ले रही है

सीमित सख्या के साहित्य के पाठकों की रुचि के सम्बन्ध में विचार करें विशुद्ध साहित्य में रुचि रखने वाला पाठक निसदेह सवप्रथम अपनी विद्या की कृतियाँ या रचनाएँ पसन्द करेगा नयी कविता का पाठक है तो वह अपनी पसन्द की कृतियाँ ढूँढ लेगा कहानियाँ को पसन्द करने वाला श्रेष्ठ कहानी सफलता की तलाश करेगा नाटक में रुचि रखने वाला पाठक नाटकों को पढ़ने के लिए बचन रहेगा लोगसाहित्य का पाठक ऐसी रचनाओं को ढूँढ निकालेगा लेकिन इस प्रकार के पाठकों की सख्या नगण्य है

एसे पाठकों की रुचि के बल पर पुस्तकों की विक्री या पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन संदिग्ध है राजस्थान की साहित्यिक पत्रिकाओं पर विचार करें तो नियमित पत्रिकाएँ कितनी हैं ? मधुमती के समक्ष वित्तीय संकट का प्रश्न नहीं है लेकिन आज इस पत्रिका के सम्पादक (जो अकादमी अध्यक्ष भी है) का प्रकाश आतुर के निरंतर श्रम करने पर भी मधुमती की ग्राहक सख्या 1500 तक ही पहुँच पायी है साहित्य के पाठकों में भी साहित्य के वास्तविक

पाठक की संप्रा तो बहुत कम है किमी भी पत्रिका की समस्त रचनाए पढ़ने वाले गम्भीर व धीरे पाठक शायद ही हो क्योंकि अधिकांश लेखक अपनी रचना नाममात्र ही अधिक रुचि रखते हैं

यह दुर्भाग्य की बात है कि आज हिन्दी के अधिकांश लेखक अपनी रचनाओं का तीसरा बार पढ़ते हैं तथा ये अपेक्षा करते हैं कि उसकी रचना अधिकाधिक पढ़े लेकिन वे अथ लेखक की रचनाएँ न तो पढ़ते हैं और न उमकी पचा करते हैं ये पत्रिकाओं के निशुल्क प्राप्ति का अपेक्षा तो करते हैं लेकिन अथ कर पढ़ने में उनकी बिलकुल रुचि नहीं होती है हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं की सीमित संख्या अथवा अथवा मृत्यु की वं पीछे इसके साहित्यिक पाठक पाठकों की सीमित संख्या अथवा सकीण दृष्टिकोण ही है यही स्थिति पुस्तकों की है निशुल्क भेट स्वरूप पुस्तकें प्राप्त कराने की आशा तो की जाती है लेकिन पुस्तक का अथ करना पसन्द नहीं करता है

ऐसी स्थिति में साहित्यिक पुस्तकों की खरीद राजकीय संस्थाओं या पुस्तकालयों में ही होती है पाठ्यक्रम में आने पर खरीद की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं और इस कारण पाठ्यक्रम समितियाँ या खरीद मन्वंधी सदस्यों की महत्ता बढ़ जाती है और घेरावही प्रारम्भ हो जाती है यहाँ भी साहित्यिक पाठकों की रुचि का ध्यान नहीं रहता है किसी साहित्यिक कृति की 1000 अथवा का मुद्रित होना और उसका 10 15 वर्षों तक नहीं विक्रय पाता पाठकों की निराशाजनक रुचि प्रकट करती है

अथ पाठकों की रुचि को प्रभावित करने वाले तत्वों पर विचार करें पाठकों अपनी रुचि की कृतियाँ ढूँढता है और प्राप्त करता है पुस्तकें सहज सुलभ हो तो वह उसे प्राप्त कर लेता है अथवा अपनी रुचि की पुस्तकें न मिलने पर वह रुचि को अथ माँड देता है इस सहज सुलभता के लिए दो स्थितियाँ हो सकती हैं उसे अपने समीप व शीघ्र मिल जाय और वह उसे अथ कर पढ़ सके यदि पाठकों के समीप के पुस्तकें विक्रय के पास मिल जाती है तो वह पढ़ सकता है पुस्तकें का मूल्य भी एम हो जिसे चुकाया जा सके दरअसल आज पुस्तकें इनकी महंगी हो गई है कि उसे खरीदना साहस का कार्य है यदि पाठकों ने हिम्मत कर दो तीन पुस्तकें खरीद ली तो उसका बजट असंतुलित हो जाएगा पाकेट बुक्स के प्रचार व लोकप्रियता का एक कारण उनकी कम कीमत या सुलभता भी है अथ स्तरीय साहित्यिक पुस्तकें कम कीमत की होंगी तो पाठकों रुचि के अनुकूल होने पर उन्हें खरीदेगा तथा अथ पढ़ेगा

इस सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण तत्व प्रचार का भी है आज प्रचार का युग है पाठक। तब पुस्तक की जानकारी विज्ञापन के माध्यम से पहुँचाई जा सकती है लेकिन ऐसा लगता है कि विज्ञापन को पुस्तक व्यवसाय में महत्ता नहीं गई। जब दत्तमजनाय जूता की पालिश का विज्ञापन ब्राह्मण का प्रभावित कर सकता है तो थोड़ा पुस्तक का विज्ञापन पाठक के मानस पर भी असर डालेगा और वह उक्त कृति के सम्बन्ध में सरीदर पढ़ने पर विचार करेगा प्रभावित करेगा।

पुस्तक प्रकाशित करने वाली भी इस मानव-मन का गुंथन व कलात्मकता से प्रभावित होता है अतः पुस्तक का प्रकाशन व कलात्मक गेट अप के साथ प्रकाशन होना चाहिए और एनी पुस्तकें निम्नोद्देश्य एक बार तो पाठक की रुचि को प्रभावित कर देगी। पुस्तक के बहिर्गम की अपेक्षा अन्तर्गम का विशेष महत्त्व है। पुस्तक अन्तर्गम पक्ष के कारण पाठक की रुचि के अनुकूल होती है। पुस्तक की सामग्री क्या वस्तु भाव पक्ष में गिनत प्रयुक्त होंगी है।

साहित्य मन का आनन्दित करने के लिए पढ़ा जाता है वस्तुतः यह मानसिक खुराक है। पुस्तक पाठक को सोचने के लिए विवश करती है, उसे एक स्फूर्ति या प्रेरणा देती है। कृति को पढ़ते समय पाठक आनन्दित होता है, और प्रेरणा प्राप्त करता है ता उसकी रुचि उठी प्रकाश की पुस्तकों के प्रति अधिक जागृत होगी। इस रुचि को जागृत करने में रोचकता की महत्वपूर्ण भूमिका है। आंतरिक रोचकता से ही पाठक पुस्तक पढ़ता है। रोचकता ही रुचि जागृत करती है। पाठक पुस्तक के कथ्य से भी प्रभावित होगा। पुस्तक युग बोध, उसके जीवन व समाज से जुड़ी हो। उसके दुःख-सुख की भागीदारी होती। उसे पढ़ने की इच्छा वह अवश्य करेगा। परिणाम की कटानिया वह पसन्द नहीं करेगा।

आज के इस समय में जब विश्व सीमित गया है तथा प्रायोगिकी मशीनीकरण के युग में मनुष्य स्वयं एक बन्धुजा बन गया है। महानगरो के मानव बन में मानव को अकेलेपन का अहसास पता रहा है वह अकेला ही विभिन्न समस्याओं से द्रष्ट कर रहा है। ऐसे समय में मानसिक चिन्ताओं में उलझे मनुष्य के मन को सहज होने की जरूरत है और यह सहजता उस पुस्तक दे सकती है इसके लिए उसमें साहित्य के प्रति रुचि जागृत करनी होगी।

मानव मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध साहित्य के लिए एक वातावरण निर्मित होना जरूरी है और ऐसा होने पर उस पाठक में साहित्य के प्रति रुचि जागेगी।

पह घर या बाहर जब भी अक्सर मिलेगा तथा पढ़ने की आवश्यकता महसूस करेगा तब वह मूल्य बोध और अपनी पसंद की स्तरीय कहानियाँ कविताएँ उपवास पढ़ेगा इस प्रकार के निर्मित वातावरण में सजय (कोई भी पाठक) सस्त जामूसी उपवास या सत्य कथाएँ नहीं पढ़ सकेगा इसलिये पाठक की रुचि के परिष्कृत करने का प्रश्न प्रमुख और विचारणीय भी है मानवीय सत्य तथा समाज की विवृतियों को उजागर कर मानव मूल्यों को प्रतिष्ठित करने वाली पुस्तक उससे क्या नो प्रभावित कर सकेगी

मध्ययुगीन परिवेश आरकृतिक पुनर्जागरण

एतिहासिक राजनीतिक, धार्मिक आदि आधारों पर हम किसी बाल विशेष का जितनी सरलता से विभाजित कर सकते हैं, उतनी आसानी से साहित्येतिहास की युगा में विभक्त नहीं किया जा सकता है क्योंकि साहित्य की ही भौतिक घटनाओं का अभिलेख मात्र नहीं होता बल्कि उसमें तो मानवीय जिजीविषा की शाश्वत यात्रा का अनुभव गम्य तन्त्र आख्यान निहित रहता है सरिताजल को रखा खींच कर जिस प्रकार खडों में विभाजित करना संभव नहीं है ठीक वैसे ही साहित्य को किसी सीमाओं में खंडित करना असंभव है फिर भी, मध्ययुग की सुविधा के लिए हिन्दी साहित्य के इस दीर्घकालीन इतिहास को काल की कार्यात्मक सीमाओं में विभक्त करना ही हागा

डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, लक्ष्मीसागर बाण्योय प्रमत्ति विद्वानों की धारणा है कि साहित्येतिहास को काल-युग विशेष की प्रमुख प्रवृत्तियों, चिन्तन-धाराओं तथा सर्वांगीण भाषा-भाषियों के मनोभावों के आधार पर विभाजित किया जाना चाहिए। डा. द्विवेदी का विचार है— असल बात यह है कि मध्य युग शब्द का प्रयोग काल के अर्थ में उतना नहीं होता जितना एक खास प्रकार की पतनीयुक्त और दबती हुई मनावृद्धि के अर्थ में होता है।

मध्ययुग का मनुष्य धीरे-धीरे विशाल और असीम ज्ञान के प्रति जिज्ञासा का भाव छोड़ता जाता है तथा धार्मिक विचार और आत्म-मान-जाने-वाले प्रमाणों का स्वतः अनुपायी होना जाता है¹। डा. द्विवेदी ने यद्यपि अपने इतिहास में अनेक स्थानों पर मध्यकाल, पूर्व-मध्यकाल और उत्तर-मध्यकाल जैसे कालवाची शब्दों का प्रयोग किया है तथापि उन्होंने वास्तविक मत का प्रस्तुत

¹ हिन्दी साहित्यकोश (ज्ञानमण्डल लि. वाराणसी) पृ. 610

करते हुए यह भी इ गित किया है कि— 'साधारणतः 476 ई से 1573 ई तक की कालावधि को मध्ययुग कहा जाता है'¹ वे 5वीं स लेबर 16वीं शताब्दी तक के समय को मध्ययुग मानते हैं

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 1375 से 1900 वि स तक की अवधि को मध्यकाल मानते हैं और इनका विभाजन पूव मध्यकाल 1375 से 1700 वि स तथा उत्तर मध्यकाल (1700 से 1900 वि स) म करते हैं² मिश्र चणु विनोद क लेखक वि स 1445 से मध्यकाल का उदय मानते हैं आचार्य शुक्ल क मत के सदम म एक बात जरूर पैदा होनी है कि यदि 1700 वि स तक पहुचते पहुचते हिंदी साहित्य की प्रवृत्तिया, शलिया, चिंताभाराए प्रेरणा स्रोत आदि आपातित बदल गए थे तो मध्यकाल नाम ही रखे रहने का आग्रह क्या है ? दूसरे साहित्येतिहासकारों की तरह वे भी इसे सीधा सादा भक्ति युग और रीति युग ही क्या नहीं कहते ? विद्वाना न 1700 वि स के पश्चात् पैलीगन परिवर्तन और रचना प्रनिया क आधार पर रीतिकाल अलकन काल या शृंगार काल नाम दिया है अत मध्ययुग की सीमा सामान्यतया 1375 वि स से 1700 वि स मानी जानी उचित है यह मध्ययुग हिंदी साहित्य के इतिहास म भक्ति युग का पर्याय माना गया है

युगीन परिवेश

(प्र) राजनीतिक — इतिहास साक्षी है कि सम्राट हपवर्द्धन (606 647 ई) के बाद भारत वष म राजनीतिक दृष्टि से एक ऐसी टूटन और बिखराव पैदा हुआ कि विदेशियों को यहां की अपार सम्पदा लूटन और अपन शासन की स्थापना करन म विशेष कठिनाइया न हुई हपवर्द्धन के बाद छोटे छोटे राज्य स्थापित हुए परिणामत देश को सम्पन्नता और विकास की ओर ले जाने वाली राजनीति के स्थान पर क्षुद्र स्वार्थों और वैयक्तिक उद्देश्यों की सहायिका तथाव्यक्त राजनीति का प्रभाव परिलक्षित हुआ देश की एकता टूटने और केन्द्रीय नेतृत्व के निबल होने पर भारत पराधीन हुआ

मध्ययुगीन इस राजनीतिक पराजय का मुख्य कारण राष्ट्रीय एकता का अभाव राजनीतिक चेतना की कमी और क्षुद्र स्वार्थों तथा मानिवाद का

¹ वही, पृ 10

² हिंदी साहित्य का इतिहास पृ 1

प्रायः एक बात और भी ध्यान देने की है कि भारतीय मस्तिष्क और इतिहास में हम ऐसे अवसर टूटन पर भी नहीं मिलते जहाँ भारत के शासन अपने देश की सीमाओं से बाहर जाकर दूसरे देशों पर आक्रमण करते हुए नजर आए। ऐसा लगता है कि भारतीय जन न मर्द ही रक्षात्मक युद्ध लड़ा और वे कभी आक्रामक न हुए। लेकिन मध्य युग में जब केन्द्र ही न रहा तो रक्षात्मक युद्ध के लिए भी वह सामर्थ्य न रह पाई कि जिसमें घमाघ इस्लाम के आक्रमकों से प्रभाव किया जाता।

तेरहवीं शताब्दी से पूर्व भारत पर तुर्क, अफगान, अरब एवं अन्य विदेशियों की ओर से अनेक आक्रमण हुए। भारत की अतुलनीय काल्पनिक घन सम्पदा का प्रलोभन आक्राताओं को लुभाता रहा। मोहम्मद बिन कासीम द्वारा सिन्ध पर आक्रमण 712 ई० में किया गया। लेकिन यह आक्रमण भारतीय इतिहास में नाभारण घटना बन कर रह गयी। यह अवश्य है कि भारतीय एशियाई सम्पत्तियों की गथाएँ बाहर प्रचारित हुईं। महमूद गजनवी ने 1000 ई० से 1026 ई० के मध्य 26 वर्षों में 17 आक्रमण किए और अतुल सम्पत्ति लूट के रूप में प्राप्त की। महमूद एक प्रचंड तूफान के रूप में आया था और विनाश लीला फलाकर चला गया। भारत में मुसलमानी साम्राज्य की स्थापना का श्रेय मुहम्मद गौरी को है।

मुहम्मद गौरी ने दिल्ली सम्राट पृथ्वीराज को 1193 ई० में तथा कन्नौज अधिपति जयचंद को 1194 ई० में पराजित किया। तत्पश्चात् दास वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सयद वंश व सादी वंश के सम्राट सन् 1200 से 1525 ई० के मध्य दिल्ली की गद्दी पर बठे। राजनीतिक घात प्रतिघात का सिलसिला जारी रहा और सुदृढ़ शासन की स्थापना न हो सकी। 1526 ई० में मुगल सना नायक बाबर का पानापत के भदान में लोदी वंशीय सम्राट इब्राहीम से युद्ध हुआ जिसमें इब्राहीम लोदी पराजित और मुगल सरदार बाबर विजयी हुआ। फलतः भारत में मुगल शासन का श्रीगणेश हुआ। सच्चे अर्थों में यही से मुस्लिम शासन की स्थायित्व प्राप्त होना है क्योंकि कतिपय मुगल सम्राटों को छोड़ दे तो शेष सम्राटों की नीति भारतीय जन मन के अनुकूल और भारत देश को अपना समझने वाली थी। इसी मनोभावना ने भारतीय इतिहास के मध्यकाल में कला-संस्कृति को प्रबल समर्थन दिया। राजनीति का सुनिश्चितता प्राप्त हुई। इसी स्थायित्व के परिणामस्वरूप राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं कला का युग शुरू होता है जो भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है।

साहित्य, कला, सभ्यता को नए आयाम मिलने हैं हिन्दू मुस्लिम सभ्यता व जन समीप आने हैं और घनिष्ठ होत हैं

बाबर की इस विजय में भारत में मुगल राज्य की स्थापना हो गई बाबर के पश्चात् हुमायूँ और हुमायूँ के पश्चात् अकबर ने शासन सभाला वस्तुतः दृढ़ मुगल साम्राज्य की स्थापना का श्रेय अकबर को है बीस वर्षों में मेवाड़ के अनिर्दिष्ट समस्त भारत में अकबर ने अपनी प्रभुता स्थापित कर ली अकबर ने भारत को सर्वथा ही अपना लिया उसने यहाँ की कला को कुछ ऐसा प्रोत्साहन दिया कि भारतीय इतिहास में राजनीति साहित्य व कला की दृष्टि से यह काल अभूतपूर्व बन गया अकबरी दरबार के नवरत्न इस समृद्धि के ज्वलंत निर्यात हैं दरबार में अकबर एक कुशल राजनता था उसने धार्मिक सहिष्णुता एक राजपूतों का उच्च पद देने की उत्तम नीति अपना कर राष्ट्रीय राज्य का निर्माण किया उसका उत्तराधिकारी जहांगीर के राज्यकाल में उसकी दूर-दक्षिणा पूर्ण नीतियों का यथार्थ प्रभाव परिलक्षित हुआ,

इतिहास में जहांगीर एक न्यायप्रिय सम्राट के रूप में चर्चित है जहांगीर के उत्तराधिकारी शाहजहाँ (1627-1658 ई०) ने राज्य के राष्ट्रीय रूप का बनाए रक्ता सांस्कृतिक एक कला सम्बन्धी जागरण जो वास्तव में कालान्तर में राज्य के लिए बहुमूल्य हुए अनिष्टकारी युद्ध के पश्चात् औरंगजेब (1658-1707 ई०) दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ उसने राष्ट्रीय राज्य की नीति परिवर्तित कर दी धार्मिक अनुदारता और इस्लामी सिद्धान्तों के प्रतिपादन से औरंगजेब ने धर्मसन्तुष्टि राज्य का निर्माण किया और औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता और सखीय दृष्टिकोण से मुगल साम्राज्य नष्ट हो गया सम्पूर्ण साम्राज्य उसके सामने ही टूट-भिन्न हो गया

लगभग 400 वर्षों का यह काल राजनीतिक दृष्टि से बड़ा म्त्बन्धकारी रहा है मुसलमानों के प्रवेश के साथ ही इस देश के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को एक सांघातिक भटका लगा फलतः बौद्धों और निम्नवर्ग की बहुत बड़ी संख्या ने इस्लाम को अंगीकार किया इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में हिन्दू और मुसलमानों के दो प्रमुख सम्प्रदाय बन गए षष्ठानुगत चेतनभोगी सैनिकों पर ही देश की रक्षा का भार आ गया कोई रूप होउ हम का हानि की भावना सामान्य जन में उत्पन्न हो गई थी यह राजनीतिक शून्यता का कारण है राजनीतिक चेतना का प्रायः अभाव ही परिलक्षित होता है तत्कालीन समाज का जो चित्र हमारे सामने है उसकी विशिष्टता यह नहीं है कि मुसल-

मानो ने यहाँ राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किया तथा यहाँ के प्रचलित धार्मिक जीवन को ग्राह्य किया वरन् इस काल में जिम सांस्कृतिक जागरण और धार्मिक चेतना को गति दी यह बात विशेष है

इस युग के साहित्यकारों का चित्रण, दार्शनिकों और भक्तों की तत्कालीन शासकों एवं राज्याध्यक्षों का चित्रण भी माह नहीं था वे राज्याध्यक्षों से दूर सामान्य जन जीवन के मध्य रहना अधिक प्रिय व गौरवयुक्त समझते थे

मल्ल का सिद्धरी सा का नाम ?

अवत जात बनहिया दूटा जिसरि गया हरि नाम

(बु भनदास)

या

तुनमी अरु का होहिग नर मननवतार

(तुलसी)

इस युग को हिंदू मुस्लिम सघर्ष तथा सीमित करना अथवा राजनीतिक पराभव का दर्शाना भी तत्कालीन राजनीतिक चेतना का आम चित्रण होगा

(ग) साहित्यिक परिवेश - इस युग का साहित्य पराभव और पस्तहिम्नता से उद्भूत साहित्य नहीं है यह भावना कि अपन इष्ट के प्रति निवृत्त दय विदेशी आक्रांताओं से भयभीत होकर साहित्यकारों के जीवन में व्याप्त गया था, इस काल के साहित्यकारों के प्रति प्रयास होगा इस युग में एक और तो इस्लाम की स्वशासिनी आधी के समक्ष अपने समुचित स्वार्थों में लिप्त सामंत यत्र तत्र शस्त्र लेकर खड़े हात थे और लड़ते लड़ते जीवनाहुति दे रहे थे तो दूसरी ओर इस्लामी विचारधारा का जो प्रभाव जनजीवन में जा व्याप्त हो रहा था उसके प्रतिकार में हमारे ये कवि भक्त सत भारतीय मनोभावना का संशक्त बना रहे थे इस तरह मध्य युगीन कविक, धार्मिक, साहित्यिक सांस्कृतिक सभी आन्दोलन एक शब्द से जुड़े हैं—प्रतिरोध, प्रतिकार

मध्ययुगीन सामाजिक सञ्जति का विकास और समन्वयवादी काव्य का मुक्तर स्वर इसी प्रतिरोधात्मक प्रभास का प्रतिकार है तुलसी, सूर, कबीर, जायसी, चंडीदास, जमदेव, पानदेव आदि कवियों में इस सम्मन्त्रयवादी प्रवृत्ति का स्पष्ट प्रभास है

मध्ययुगीन साहित्य को हम दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—एक तो वे

जो कट्टर पथी धर्म के विरोध में खड़े हुए थे और दूसरे वे जो समन्वयवादी थे अर्थात् नानमार्गी प्रेम मार्गी व भक्त कविया व लेखकों द्वारा सृजित साहित्य

हिन्दुओं और मुसलमानों के मूलभूत मतभेदों के होने पर भी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पारस्परिक सामंजस्य और सहिष्णुता की शीतल सुखद मदांकिनी प्रवाहित होनी लगी थी। दोनों समुदायों में धीरे-धीरे सामंजस्य सहयोग और सहोदरता की स्थिति बनती जा रही थी। पारस्परिक एक-दूसरे को जानने व समझने की चेष्टा करने लग पड़े। परिणामतः हिन्दू धर्म हिन्दू कला, हिन्दू साहित्य और विज्ञान से मुस्लिम तत्वों को अपनाना ही नहीं प्रत्युत हिन्दू संस्कृति की मूल भावना व मनीषा में भी परिवर्तन हुआ गया। इसी प्रकार मुसलमानों में भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में खुले हृदय से आदान-प्रदान किया। हिन्दुओं के धार्मिक नेताओं, मता व कवियों ने समन्वय के लिए सतत प्रयत्न किया तो मुसलमानों के सूफ़ी सम्प्रदाय तथा उनके लेखकों व कवियों ने भी हिन्दू मित्रता परम्पराओं व विषयों को ग्रहण किया। सामंजस्य और सामीप्य की मंगल-कारिणी भावना का प्रभाव इस्लाम पर पर्याप्त पड़ा व उसके स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ। सूफ़ी सतत इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। हिन्दू मुसलमान दोनों इस सम्प्रदाय के सती कवियों का सम्मान करते उनके दद तो अपना दद समभक्त

मुस्लिम शासकों ने भी साहित्यिक श्री वृद्धि में विशिष्ट योग प्रस्तुत किया है और उनके राजशास्र में उच्च काटि का साहित्य तयार हुआ। साहित्य व विविधांगों का विकास हुआ। अकबर एवं जहांगीर की साहित्यिक रचि व गुण ग्राह्यता अनेक ग्रंथों के निमाण की प्रेरणा दी। सोलहवीं व सत्रहवीं शदी का विकास का युग रहा है।

यह युग कल्पना की प्रचुरता और दिग्घ्न अभिव्यक्ति का युग था। कवियों विचारकों, लेखकों और विद्वानों ने विभिन्न भाषाओं के साहित्य को देदीप्यमान कर दिया। हिन्दी संस्कृत, फारसी, मराठी, बंगाल, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में साहित्य का अनवरत सृजन हो रहा था। साहित्य, इतिहास, दर्शन, कर्मशास्त्र आदि साधना की जा रही थी। अकबर के दरबार में राजा वीरबल, राजा मानसिंह, राजा भगवानदास एवं प्रथमराज राठौर प्रसिद्ध कवि थे। अब्दुरेहीम खान ए खाना (रहीम) नरहरि, करण हरीनाथ गंग भी अकबर कालीन प्रसिद्ध हिन्दी लेखक कवि हैं। वस्तुतः सूर, तुलसी कबीर व जायसी का अन्वय इस काल की महती घटना है। बेशव व सेनापति न शाहजहा

श्रीरंगजेव के राज्यकाल में वाङ्मयकला की व्यवस्थित करने के मफत प्रयत्न किए इसी काल के अन्य प्रसिद्ध कवि सनापति, भूपण, देव विहारी आदि हैं मर्यादा पुरुषोत्तम राम व रत्न शिरानिधि लीला पुरुषोत्तम वृष्ण का चित्रण किया गया

इस युग में श्रीधर एकनाथ, दासोपन्त तुकाराम, भूवत्प्रवर, वामन पन्थि, तुकाराम, रामदास और मारोपत जन्म प्रतिभा सम्पन्न कवियाँ १ मराठी साहित्य के मठार का अपनी बहुमूल्य रचनाओं से भरा

इस युगीन गुजराती साहित्यकाण के अरवा, प्रेमानन्द और सामल तीन देदीप्यमान नक्षत्र हैं इनके अतिरिक्त बलभ मुकुन्द, ददीदास, शिवराम, विष्णुदास विश्वनाथ, रत्नप्रवर आनन्दघन व नमीविजय आदि कवि ललक हुए हैं.

संस्कृत साहित्य में शाहजहाँ कालीन कविराज जगन्नाथ, रूप गोस्वामी व गिरधारीलाल प्रमुख मृजक हैं अकबर व जहांगीर व अनुवाद काय को महत्त्व दिया अमर फारसी ग्रन्थों का अनुवाद किया गया

इस युग में कलादर्शी भक्त कवि जनहृदय को आलापित करने में तत्सही हुए भक्ति की सरिता के क्षीतल व पुण्य सलिल में हिन्दू जनता ही नहीं सहृदय मुसलिमानों ने भी अवगाहन कर अपने को धर्य किया ईश्वर आराधना में रूप, रग, वण का भेद तिरोहित हुआ और 'हरि को भजे तो हरि को होई' की परम्परा प्रवाहित हुई इस युग के साधनों का लक्ष्य लोक हृदय रहा है

देशज भाषाओं के साहित्य का यह विकास काल था सुधारवादी धार्मिक आन्दोलनों ने देशज भाषाओं के साहित्य को समग्रता के साथ प्रोत्साहित किया धार्मिक सुधारकों और संतों का प्रत्यक्ष सम्पर्क जनता से था परिणामतः उन्होंने उपदेश देशज भाषा में दिए और लेखन भी देशज भाषा में किया सूफी संतों व पीरो ने भी इस सत्य को स्वीकार किया कि देशज भाषाओं के अभाव में उनके सिद्धान्तों का प्रचार असम्भव है उन्होंने बोलचाल की भाषा का उपयोग किया रामानन्द, कबीर आदि ने हिन्दी में उपदेश दिए कबीर ने सधुबकड़ी (मिश्रित) भाषा का प्रयोग किया है राधा कृष्ण भक्त कवियाँ ने ब्रज व अपने प्रदेश की भाषा को प्रयुक्त किया नानक व उनके शिष्यों ने पंजाबी और गुरुमुखी को प्रोत्साहित किया

इसी युग में उर्दू का अग्रमुदय और विकास होता है फारसी तुर्की शब्दों तथा संस्कृत में उदय हुई भाषाओं के सम्मिश्रण से उर्दू भाषा का प्रादुर्भाव हुआ इसमें फारसी, तुर्की, हिन्दी व दिल्ली प्रदेश की स्थानीय भाषा के शब्द ह धीरे धीरे आवश्यकतानुसार एक समान भाषा का उदय होता है वस्तुतः यह भाषा हिन्दुओं व मुसलमानों के साहित्यिक सम्बन्ध का परिणाम है कालांतर में इसे राजशाही मिला और इसका रूप रंग निखरा और 18 वीं शताब्दी में यह एक साहित्यिक भाषा हो गई

सांस्कृतिक परिवेश

भारत की प्राचीन हिन्दू संस्कृति और सम्प्रदाय में एकीकरण एवं समनता की अवस्थाही शक्ति थी तथा प्रारम्भिक आनाता यथा यूनानी, शक, हूण कुशान आदि इस क्षेत्र में आने के कुछ ही वर्षों के पश्चात् भारतीयों में पूर्ण रूपेण मिल गए और यहाँ एक सांस्कृतिक व सामाजिक जीवन के अविभाज्य अंग बन गए अनन्यता व एकात्म्यता को महा की संस्कृति में समाहित कर दिया

भारत में मुसलमानों के साथ उनकी सम्यता व संस्कृति तथा निरिच्छता सामाजिक व्यवस्था तथा धार्मिक विचारों का प्रवेश होता है जो प्रारम्भ में अपने अलग अस्तित्व के सप्रयत्न रहे परन्तु जब कभी दो विभिन्न प्रकार की समस्याएँ और संस्कृतियों के बीच सम्पर्क में आती हैं तो परस्पर एक दूसरे का प्रभावित करती ही हैं चौदहवीं शताब्दी के पश्चात् इस्लाम भारत के लिए विदेशी धर्म नहीं रह गया था और भारत का एक प्रमुख धर्म बन गया था

इस प्रकार सुदीर्घकाल में ससग, नवीन भारतीय मुसलमानों के समुदायों का विकास, पारस्परिक विवाह सम्पर्क एवं सहयोग, उदार आन्दोलन आदि के फलस्वरूप दोनों संस्कृति समीप आई और परस्पर प्रभावित किया फलतः एक नवीन समन्वयात्मक सम्यता का उत्पन्न हुआ जो न हिन्दू थी और न मुसलमान किन्तु दोनों संस्कृतियों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वित रूप था

हिन्दू मुस्लिम सम्बन्ध की भावना के लिए अकबर का शासन महत्वशाली है सामासिक संस्कृति और धार्मिक सम्बन्ध के लिए अकबर ने अथर्व प्रयत्न किया मुगलाने साहित्य एवं कला की सेवा में साम्प्रदायिकता की दूरी को नहीं माने दिया मुगलकालीन आर्थिक समृद्धि और शांतिमय जीवन ने इस सांस्कृतिक सम्बन्ध व विकास में पूर्ण सहयोग दिया इस युग में एक सामासिक संस्कृति का उदय होता है जो न हिन्दू है और न मुसलमान वरन् भारतीय है

विश्वास, भ्रष्टाचार, मतभेद, भोग एव ध्यान-द या जीवन तथा बौद्धधर्म विलासिता का सामान्य जन से विभेद और उनकी उदामीनता, ब्राह्मण धर्म का अस्मृत्यन व विरेमिषा के आश्रमण बौद्ध धर्म के पराभव व हाम के कारण है जन धर्म भी मकुचित हो राजस्थान, गुजरात व उत्तरी भारत के कुछ भागो म मिमट आया जब शक्त धर्म का प्रभाव क्षेत्र भी बण्णव धर्म क समक्ष सीमित होता गया ऐमे समय मे इस्लाम का प्रवेश तथा प्रसार हाता है धीरे धीरे दानो म्प्रदाया म सहायग व सामजस्य वी भायना प्रकट होन लगी थी

इस्लाम और हिन्दू धर्म के सामीप्य से कुछ ऐसे म्प्रदाया का प्रादुभाव हुआ जो जानिमत विभेदो को समाप्त कर विश्व वधुत्व एकेपरवाद और ईश्वर प्रेम का म देश देते हैं धर्म की सरलता आराध्य के प्रति पूण समपण व अनपता, मूनिपूजा का और अस्पृश्यता का विरोध धार्मिक चिंतन म मिलता है जनता ने पूण निष्ठा के साथ इन्हें समधन दिया य मुधारक उदार भक्ति म्प्रदाय के पक्षधर थे इन्होंने जाति प्रथा की धार भत्सना व बाहुयाडम्बरा की निंदा की और मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति, श्रद्धा व विश्वास पर बल दिया काम के स्थान पर वम को महत्व मिला इा मुधारका का स्पष्ट मत रहा नि सच्चाधर्म पापड और मिथ्या वादानुवाद म नहीं है वरन् ईश्वर के प्रति अनय भक्ति म है उहान मुक्ति का एक मात्र साधन भक्ति माना

इम युग का आतिकारी घटना धार्मिक मुधार का भक्ति आदालन है न्णिए के धार्मिक मुधार के नेता शकराचाय, रामानुजाचाय, मवाचाय, विष्णु स्वामी वसरेश्वर आदि थे वल्लभाचाय, रामानन्द, कबीर, नानक, शकरदेव पुनसी आदि उत्तरी भारत के धर्म मुधारक थे

भक्ति धर्म स विमुक्त नहीं ह भक्ति के साधक जनहृदय को प्रकाशित करने म सनद्ध हुए ईश्वर को मामन लावर भक्त कविया न हिन्दुओ और मुसलमाना दोना का मनुष्य के सामान्य रूप म दिसाया और भेद भाव क दृश्या का पीछे कर दिया ¹ मध्य युग के इा भक्त कविया को डा विश्वम्भर नाथ उपाध्याय ने दो शिविरा म विभक्त किया है—एक सत कवि और दूसरे शिविर म वण्णव कवि ² सत कविया के आदिम्त्रोत ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विद्रोही

¹ हिन्दी साहित्य का इतिहास (रामचन्द्र शुक्ल) पृ 58

² हिन्दी साहित्य की आधुनिक परिभाषा पृ 45

शिविरा से आये है और इन्हें ज्ञान मार्गी, निगुण पथी मन कहा गया है डा उपाध्याय वैष्णव ऋषियों के अधिक समन्वयवाद के प्रबल पक्षधर हैं इन्होंने धार्मिक महिष्णुता का पूरा परिचय दिया है वैष्णव भक्ता म मर्यादा पुस्तो त्तम श्री रामचन्द्र एव लोकरजगत्सेश श्री कृष्ण को उपजीव्य बनाया और पूण निष्ठा व समग्रता से उनकी भक्ति में तल्लीन हुए

वत्सभ सम्प्रदाय, चैतन्य सम्प्रदाय, रामानन्दी सम्प्रदाय, राधावल्लभी सम्प्रदाय निम्बाक सम्प्रदाय, वारकटी व सहजागा वैष्णव सम्प्रदाय आदि अनेक सम्प्रदायों के भक्त व साधक सगुणोपासना कर रहे थे ता दूसरी ओर नानक, कबीर, नामदेव, दादू रदास आदि निगुण निराकार ईश्वर की प्राप्ति का प्रचार कर रहे थे हिन्दू मुस्लिम के लिए ये कृत सकल्प दिखाई देते हैं मूर्ति पूजा, कमकाण्ड जातिवाद की नत्मता की ओर कहा कि ईश्वर के उच्च सिंहासन व समक्ष हिन्दू मुस्लिम एव है कबीर समाज के दृढ़ सचेतक, निमग्न आलोचक, हिन्दू मुस्लिम समन्वय व प्रथम प्रयासक, मागदर्शक हिन्दू मुस्लिम एकता के अप्रदूत, मानवतावाद के प्रचारक तथा महान धार्मिक जातिचेता सत पुरुष थे

इस्लाम में भी एक नवीन धार्मिक विचारधारा सूफी मत के रूप में प्रख्यात हो रही थी ये प्रेम की पीर के गायक थे और डाकी मा यता थी ईश्वर का नान विश्वास, भक्ति और ध्यान से प्राप्त हो सकता है प्रत्येक सूफी का उद्देश्य आत्मा का परमेश्वर में विलीनीकरण है ध्यान, भजन, नृत्य, गीत और प्रेम से सूफी साधक ईश्वर का साक्षात्कार करता है इसके निष्ठातो में हिन्दू धर्म की गहरी छाप थी इस सूफी आन्दोलन को यह श्रेय है कि मध्य युग में हिन्दू मुस्लिम एक स्थान पर परस्पर हिलमिल सकते थे भक्ति सम्प्रदायों व गहन अध्ययन से यह अच्युती तरह स्पष्ट होता है कि वस्तुतः सभी भक्ति सम्प्रदाय एनेश्वरवादी है क्योंकि भक्तगण राम कृष्ण विष्णु शिव गणेश, शक्ति किसी की भी उपासना करते हैं तथा इन्हें एक अनन्त ईश्वर के प्रतीक रूप में स्वीकारते हैं भक्ति ने मध्य युग में सबप्रिय लोका धर्म का रूप धारण कर लिया था

इस युग की धार्मिक चेतना समग्रता के साथ प्रसारित हुई थी रसेश कृष्ण लीलागान की सरिता के निमल जल से ब्रज, वगाल, राजस्थान व गुजरात ही नहीं सम्पूर्ण भारत अप्लावित हो रहा था कृष्ण व राम के चरित् भारतीय की धर्मप्रिय जनता के हृदय स्थल पर अंकित हो रहे थे

सांस्कृतिक समन्वय की भाति धार्मिक



प्रया

की ओर से भी किया गया इतिहास में 'अक्बर महान' के रूप में प्रसिद्ध मुगल सम्राट ने सब धर्मों का सामंजस्य कर एक व्यापक धर्म बनाने का प्रयत्न किया था 'दिन ए-इलाही' की कल्पना को यथाथ के धरातल पर प्रस्तुत करने के पीछे उनका 'लोकधर्म' स्थापन का उद्देश्य था वह हिन्दू व मुस्लिम धर्म व मम वय हेतु बेहद चिन्तित रहता अतः फजल इम वय म उसका सबसे बड़ा सहयोगी था कट्टर पक्षी मुल्ताग्रा व उलेमाग्री की ओर उनकी आत्मीयता की उद्देश्य किंचित भी चिन्ता नहीं की धर्म और विचार की स्वतंत्रता व मध्य अक्बर एकेश्वरवाद को परकूट रहा धार्मिक कट्टरता का प्रतिफल अक्बर जानता था

अक्बर की धार्मिक नीति का ही प्रतिफल है कि उसका शासन काल इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है वस्तुतः मध्य युग सांस्कृतिक व सामाजिक पुनर्जागरण, लोक धर्म के उदय तथा धार्मिक समन्वय का काल है इस युग में भक्ति आन्दोलन के फलस्वरूप उन मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई जिनमें सामयिक समस्याओं के समाधान के साथ जीवन के शाश्वत मूल्य निहित थे मध्य युगीन सांस्कृतिक पुनर्जागरण ने समाज, धर्म दर्शन, साहित्य एवं कलाओं को नवचिन्तन और जीवन के नए आयाम दिए वैष्णव भक्ति आन्दोलन के प्रचार प्रसार से धार्मिक मान्यताओं, दार्शनिक विचारधाराओं तथा जनजीवन में सब-धर्म परित्यागकर कृष्ण शरण में जान की वृत्ति पनपने लगी जनजीवन में जो रिवतता और हुताश व्याप्त हो रही थी उसे भरने का सफल प्रयत्न इस भक्ति आन्दोलन ने किया सांस्कृतिक सौहाद की दिशा में तजी स कदम बढ़ने लगे और एक सामासिक संस्कृति अभ्युदयामुखी हुई

कृष्णलीला साहित्य-अनुविज्ञान के संदर्भ में

भारतीय धर्म दर्शन और साहित्य कृष्ण लीला द्वारा से स्पष्टतः अनुस्यूत है। वस्तुतः य लीलाए भगवद् प्रेम तथा "ममय जीवनानन्द की प्रतीक है। इन भगवद् प्रेम तथा जीवनानन्द की प्राप्ति का माधन और साध्य य लीलाए ही है। कृष्ण लीलाए की चर्चा रम्यरूप ब्रह्मानन्द की चर्चा है। उपनिषदा से लेकर आद्य तक लीला साहित्य म इस रम्यरूप ब्रह्मानन्द का गुणगान ही किया गया है।

लीला साहित्य आपातन रसाधारित तथा आनन्दयुक्त है। आनन्द की अनुभूति हाती है मन को अतः लीला साहित्य का प्रथम और प्रत्यक्ष सम्बन्ध मन से है। जहां तक लीला के मूल में अवस्थित दर्शन और चिन्तन का प्रश्न है वह बुद्धिगम्य होने से चिन्तना शक्ति की परिधि में आता है। मन का विषय होने में मनोविज्ञान और उसके सामयिक संदर्भों में लीला साहित्य पर विचार करना प्रासंगिक है।

भारतीय मनीषिया ने मन का महर्षि प्रारम्भ से ही स्वीकारा है। मन (इन्द्र) को चन्द्रिया का स्वामी व सम्मल श्रियाए का मूल कहा गया है। उपनिषदों ने मन की ब्रह्म कहा है। गीता कहती है कि मन अत्यन्त चञ्चल, प्रमथनशील, बलवान तथा वायु सदृश अग्रहण है¹। विद्वान् मन का अन्त करण (हृदय) का एक भाग मानते हैं। जो बाह्य प्रभावों को समर्पित कर उन्हें ज्ञान रूप देता है। यह हृदय सम्कार या वासनाओं का घर है। य वासनाए ही विभिन्न प्रभावों को ग्रहण तथा प्रस्फुटित कर मन का गति देती है। विद्वानों ने दृश्यमान कार्यों को भूत सृष्टि तथा सूक्ष्म ब्राह्मण का भाव सृष्टि कहा है तथा भाव और वृत्ति का एक ही माना है²। यही वृत्ति या भाव प्रगाढ होकर जगत् स्वभाव, महाभाव

¹ श्रीमद् भगवद्गीता 6/34

² सम्मलन पत्रिका भाग 47 त 4 श्री शिवशरर अवस्थी का लेख पृष्ठ 43

और त्रिविकल्प रस रूप स्थिति में पहुँचता है। इस प्रकार एज वक्ति को रस रूप दशा तक पहुँचाने के लिए लम्बी यात्रा करनी पड़ती है जिसमें मन उसका सबसे बड़ा साभोत्तार है। इसीलिए मामिक तथा चिद् वृत्तियाँ में मयुक्त साहित्य ही दीर्घजीवी, कालातीन व सार्वजनीन होता है। इस प्रकार साहित्य को पठभूमि में मनोवैज्ञानिक या मानसिक प्रेरणाएँ प्रियमान रहनी हैं। कदाचित् लीला साहित्य में ये स्थितियाँ स्पष्टतः लक्षित हैं। ये भक्त रसिक साधक मानव जीवन तथा स्वभाव व मन्त्रे परीक्षक थे।

दृष्ट्या लीला साहित्य में मनोवृत्तियाँ तथा भावना का सूक्ष्म और हृदयग्राही विश्लेषण उपलब्ध है। पुष्टि मार्ग में वास्तव्य मरय तथा मधुर लीलाओं का चरण तो है ही लेकिन मधुर लीलाओं को चरमात्कर्ष रूप दिया गया है। पुष्टि मार्ग पर अथ सम्प्रदायों के लीला साहित्य में मधुर लीलाएँ ही सर्वाधिक हैं।

दृष्ट्या वात लीलाओं के पदा में शिशु की सामान्य मनोवृत्तियाँ तथा भय, जिद्द, स्पर्धा, शोडा, भ्रूल, अनुकरण आदि की सुन्दर अभिव्यक्ति है। बाल लीलाओं में पत्नी का सर्वाधिक मूजन पुष्टिमार्गीय भवता न किया है। मूर तथा परमानन्ददास बाल लीलाओं के पदों के सृजन में सर्वाधिक सशक्त व समर्थ कवि हैं। बालक की स्वचालित क्रियाओं (Automatic Actions) के मनोवैज्ञानिक विम्व यहाँ है। बालक के अश्लेषण का एहसास होने पर अकुला उठना या होठों का फटफटाना भय मचार का परिणाम है। मनोवैज्ञानिक की मान्यता है कि शिशुओं में प्रारम्भिक काल से ही भय मचार तथा सौन्दर्य विकास होता है। बालक में बाल्यकाल से ही दृष्टि, ध्वनि, स्पर्श घ्राण रमकरूपता का अभ्युदय हो जाना है और इसमें क्रमशः वृद्धि होती है। मधुर लीलाओं में बालक का शांत हो जाना या माँ के लोरी गाने गाने मौन हो जाना ही शिशु का स्वभावतः अकुला उठना¹ ध्वनि चेतना का मनोवैज्ञानिक परिणाम है।

बाल लीला के पदों में अगूठा चूसने, माखन चारी करने या मकलन खाने आदि के अनेक सुन्दर मनोवैज्ञानिक भाव चित्र पुष्टिमार्गीय कविता विशेषण मूर तथा परमानन्ददास व काव्य में हैं। शिशु भ्रूल की प्रतीति होन पर राना ह या हाथ

¹ तपोना हरि पालन भुनाव ।

हरनारव दुनगाह मल्हाव जोद मोद दद्यु गायँ-

बदलून पनक हरि मूद लेन है बबहु अघर परनाव । (मूर सागर पृ ५ 661)

अथवा पैर का अंगूठा मूगने लगता है और एक काल्पनिक मान्यता की प्राप्ति करता है¹। साद्यानवपण प्राणी की मूल प्रवृत्ति (सम्बन्धित सवेग भ्रम) है²। जिससे प्रेरित हानर शिशु कृष्ण अंगूठा मूगता है या परवर्ती समय में मान्यता साक्षात् फिरेता³।

मनोविज्ञान और चिकित्सा ज्ञान पर्याप्त पर्यवेक्षणोपरान्त शिशु का विकास वृत्त अग्रतः प्रस्तुत करता है—

एक मास रोशनी देखना, दो मास मुस्कराना (Smiling) तीन मास-तिर उठाना तथा सा का पहचानना छ मास-अठना दस मास-रेंगना (Crawling) बारह मास महारे से चलना, चौदह मास-स्वयं खड़ा होना, पंद्रह मास स्वयं चलना, ११ वय स्वयं भोजन करना, तर्जी में चलना आदि बाल लीलाया के अन्तगत शिशु कृष्ण के वय-क्रम में स्थितियां आती हैं। कृष्ण का शिशु जीवन अत्यंत स्वाभाविक सजीव तथा मनोविज्ञान सम्मत है। मूल में शिशु कृष्ण में प्राचीन शिशु की सहजता व स्वाभाविकता का यथावत् रूप देत हुए अतः प्रवृत्तियों का मनो-वैज्ञानिक चित्रण किया है। मूल के सदस्य में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखत हैं—शशव से लेकर वीमाय अवस्था तक क्रम में जात हुए न जान कितन चित्र मौजूद है उनमें केवल बाहरी रूप और चेष्टाया का ही विस्तृत और सूक्ष्म वर्णन नहीं है कि न बालकों की अतः प्रकृति में भी पूरा प्रवेश किया है और अनेक बाल्य भावा की सुंदर स्वाभाविक व्यंजना की है³। शिशु कृष्ण का नाम व अग्रतः में घुटना के बल चलना तथा माना पिता का हृषित होना, या हाथ में मखलन लिए धूल धूसरित शरीर के साथ घुटना के अथ रेंगना या किलबन हुए अपन ही

¹ दृष्टव्य है—कर पग गहि, अंगूठा मुख मेलत

प्रमु पाडे पालने अकेले, हरपि हरपि अपन रग तेलत मूरसागर(सभा)पद 681
चरन गहे अंगूठा मुख मेलत मूरसागर(सभा) पद स 682

² मेगडुगल न समाज मनोविज्ञान में 14 मूल प्रवृत्तियां और उससे सम्बन्धित 14 सवेग दर्शाए हैं। इसमें साद्यानवपण प्रथम प्रवृत्ति है।

³ मूरदास-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० 117

प्रतिबिम्ब को पकड़ना और माता पिता का हर्षित होना स्वाभाविक मानस त्रीडाए है ।

शिशु वृष्ण के प्रथम विनास तथा उसके मवागीण विकास म अभिभावको सहयोग को भी बाल लीलाओं मे चित्रित किया गया है वृष्ण के एक वष का होने पर माता पिता उमे चलना सिखाते है- कभी वृष्ण का नहा हाथ छाड कर बालक को आत्मविश्वास के लिए सम्प्रेरित किया जाता है बालक को उच्चारण बोध भी कराया जाता है बालक की त्रीडाया का भ्रवलोचन कर नन्द यशोदा हर्षित होते हैं ^२ शिशु की सामान्य मनोवृत्तियो और माता पिता के वास्तव्य को सूक्ष्म अभिप्रेरणा इन बाल लीला के पदा मे है इसी प्रकार ^३ घ्रातमुष्य ^४ तक ^५ स्त्रद्धा, ^६ जिह्वादि के भावा का प्रस्तुतीकरण विभिन्न बाल लीला के पदो मे वृष्ण भक्ता ने किया है

^१ घुट्मनि चनन स्याम मनि आगन, मातु पिता दोऊ देखरी

सूरसागर (सभा) पद 716

विलकृत काह घुटुस्वन आवन

मनिमय कनक नन्द के आगन निज प्रतिबिम्ब पकरिवै धावत

सूरसागर (सभा) पद स 728

^२ गहे अ गुरियां ललन की नन्द चलम मिखावत

सूर स्याम मुख लखि महर, मन हरप बढावत

सूरसागर (सभा) पद स० 740

^३ मया कबहि बढेगी चोटी ?

किनी बार मोही दूध पियत भई अजहू है छाटी

सूरसागर (सभा) पद सं 793

^४ मया मोहि दाऊ बहुत खिभायो सूरसागर (सभा) पद सं 833

खलत अब मेरी जाई बलैया सूरसागर (सभा) पद स, 835

मै जयो यह मेरो घर है ता धोके मे आयो सूरसागर (सभा) पद स 897

^५ दुहुन दहु बच्चु दिन अरु माको, तबकारी हो मो समसरि आई

जब ली एक दुहाये, तब ली चारि दुहाय न द दुहाई

सूरसागर (पद) स 1286

^६ मया मै तो चहू खिलीना लँहो

ज हा लोटि धरनि पर अबही तेरी गोद न ऐहो सूरसागर(सभा)पद सं 811

मया री मै चन्द ली होने

बहा करो जलपुर भीतर की, बाहर व्योकि गहोगी सूरसागर सभा पद 812

बानस गीता प्रिय होता है उमर बनता गाविया के गाय गवन में प्रान्त
 घाता है इस गीता प्रियता म घातमविश्याम, मातरजन तथा शागीर्क कर्मि
 वृद्धि होती है घोर दूमगी घात निरान्त पराजय मे बानस कुठा घन हाता है
 प्रनुररण भी बानस करता है घोर गृह्य भी करता है वृष्ण गाहुन म घात
 उमर से ही गृह्य करा तम जात है गाता वा घरात, मरणा गारी करने वा घन
 साहसिष गापी म य गृह्यकारी भूमिका का निर्वाह करत है यह मानवा
 स्वभाव हाता है नि गता घना घनुपाविया म घना प्रनुर्य वा स्वापिन गता है
 य नवृत्त करता है गता ही तापक हाता है मागत चारी लीला, गो चर
 लीला दान लीला वा राग लीला घाति म वृष्ण गृह्य करत है

वृष्ण प्राय गाविया की मरगापी म घात है तथा गाविया (घनुपाविया)
 को साफ बता जात है मागत चारी व परतात लानलीला वा पाषट लीला म
 य गाविया वा गली शीगाहा यमुना बिहार रात सेत है घोर छद् घानी करत
 है वृष्ण उास यौवनगन मांगते है ¹ वृष्ण की दम गृह्य व्यापी भूमिका
 मे प्रभुत्व बामना वा हाना स्वाभाविक है द्विदम मागृत्तिके हान हूण भी वृष्ण तथा
 अय साधिया म समगाय है, महत्व धनना वा विलय है ² लीला म साम्य
 आवश्यक है

वृष्ण लीलाघ्रा म मधुर भावपरक लीलाघ्रा वा वाहुय है चिरहरण
 लीला दानलीला पनघटलीला गुगल विहार लीला, रासलीला, निकु जलीला,
 नित्य वेनि आदि प्रमुख प्रेम लीलाए हैं मागत चोरी चाला भी प्रेमलीला ही
 है इन लीलाघ्रा वा चू डात रूप रामलीला, निकु ज लीला, या नित्य वेति है
 य लीलाए राधावृष्ण के दिव्य प्रेम स भाप्सावित हैं

¹ मागत दान ज्वाव नहि दती, ऐसी तुम जावन की जारो
 उर नहि माननि नलनदन को, करति आनि भक्तभोरा भारी
 मूरसागर(सभा) पद स 2152

² खालनि कर त वीर छुडावत
 जूठा वेत सबनि व मुल अपने मुल स नावत
 पटरस के पकवान धरे सब नितस रचि नही लावत
 हा-हा करि मागि सेत ह कहत मोहि अति भावत
 मूरसागर (पद) स 1086

प्रेम का मानन जीवन से झूट सम्बन्ध है प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और उदार दृष्टि ही भगवद्ग्रह का सागवत अवलम्बन बनती है इसी प्रेम का विस्तार सबत्र हैं प्रेम तथा आनन्द के कारण ही परब्रह्म का प्राकट्य (भवतार) होता है और वे नर लीला परत हैं आनन्द के सागर रसावतार की इन नीलामों का उद्देश्य प्रहेतुरी लीलानन्द ही है ¹

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो मनुष्य मात्र का सर्वाधिक व्यापक भाव रति है और आदिम प्रवृत्ति काम है मनुष्य की प्रमुख आदिम प्रवृत्तिया घटना (Ego) भय (Fear) और काम (Sex) बही जाती है भय नकारात्मक काम सकारात्मक और उदासीन होता है यानी ग्रह न तो नकारात्मक है और न नकारात्मक इस प्रकार काम प्रेम संबन्धी भाव है काम से ही अनेक कामनाया का अन्वुदय होता है इस प्रेम का म्यायी भाव रति है और चरम रूप मधुर भाव की पूरा अभिव्यक्ति राधाकृष्ण की प्रेम लीलाआम है स्त्री पुरुषों के रागात्मक सम्बन्ध में पति पत्नी के प्रेम में सर्वाधिक आनन्द प्राप्त होता है इस प्रेम में उल्लास, तीव्रता, गहनता, अनन्यता तथा भावकता है प्रेम में रसोद्रेक की चरमावस्था वह हाती है जहा स्व और पर के बधन समाप्त हो जात हैं और युगल निर्विशेष प्रेम में लीला हो जाता है निरुज लीला तथा नित्य केलि में यही प्रेम मूर्तिमान हो उठा है

¹ (क) प्रीति के बस्य य है सुरारी ।
 प्रीति के बस्य नटवर सुमेपहि धर्यो प्रीति बस करज गिरिराज धारी ॥
 प्रीति के बस्य ध्रज भये मागन चोर, प्रीति के बस्य दावरि बधाई ।
 प्रीति के बस्य गोपी रमण नाम प्रिय, प्रीति बस जमाल तर मोच्छादई ॥
 प्रीति बस नद बधन बरन घृह गए, प्रीति के बस्य बनधाम कामी ।
 प्रीति के बस्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदिन, प्रीति बस सदा राबिका स्वामी ।
 सूरसागर (सभा) पद स 2636

(ख) आनन्द की निधि नन्दकुमार ।
 प्रगट ब्रह्म नरमेघ नराकृत जगमोहन लीलावतार ।
 स्वयनन आनन्द लोचन आनन्द मन में आनन्द ।
 परमानन्द सागर (शुक्ता) पद स 29 पृ 10 11

बालक जीडा प्रिय होता है उसे अपने साथियों के साथ खेलन में आनन्द आता है इस जीडा प्रियता से आत्मविश्वास, मनोरंजन तथा शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है और दूसरी ओर निरंतर पराजय से बालक कुंठा ग्रस्त होता है अनुकरण भी बालक करता है और नृत्य भी करता है कृष्ण गोकुल में छोटी उम्र से ही नृत्य करने लग जाते हैं गायो ना चरान, मन्थन चोरी करने या अन्य साहसिक कार्यों में वे नृत्यकारी भूमिका का निर्वाह करते हैं यह मातृवीय स्वभाव होता है कि नेता अपने अनुयायियों में अपने प्रभुत्व को स्थापित करता है व नृत्य करता है नेता ही नायक होता है माखन चोरी लीला, गौ चरण लीला, दान लीला या राम लीला आदि में कृष्ण नृत्य करते हैं

कृष्ण प्रायः गायिका की भेरादी में आते हैं तथा साथिया (अनुयायिया) को साथ बचा जाते हैं माखन चोरी के पश्चात् दानलीला या पनघट लीला में वे गोपिया का गली चोराहा यमुना किनारे रात्र लेते हैं और छड़ छानी करते हैं कृष्ण उनसे यौवनदान मांगते हैं ¹ कृष्ण की इस नृत्य व्यापी भूमिका में प्रभुत्व कामना का हाना स्वाभाविक है इस मनोवृत्तिके होत हुए भी कृष्ण तथा अन्य साथियों में समभाव है, महत्व चेतना का विलय है ² लीला में साम्य आवश्यक है

कृष्ण लीलाओं में मधुर भावपरक लीलाओं का बाहुल्य है चिरहरण लीला, दानलीला पनघटलीला, युमल बिहार लीला, रासलीला, निकुजलीला, नित्य केलि आदि प्रमुख प्रेम लीलाएँ हैं माखन चोरी लीला भी प्रेमलीला ही है इन लीलाओं का चूड़ान्त रूप रासलीला निकुज लीला, या नित्य केलि है य लीलाएँ राधाकृष्ण के दिव्य प्रेम से आप्लावित हैं

¹ मागत दाव ज्वाव नहिं देती, ऐसी तुम जावन की जागी
उर नहिं माननि नदनदन का करति आनि भक्भारा भारी
सूरसागर(मभा) पद स 2152

² ग्वालनि करत कीर छुडावत
जूठा लेत सबनि के मुख अपने मुख ल नावत
पटंगस के पक्वान घर मये नितस रचि नही लावत
हा-हा करि मागि लेत ह कहत मोहि अति भावत
सूरसागर (पद) स 1086

प्रेम का मानव जीवन से घट्ट मम्ब'घ है प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और उन्नत दृष्टि ही भगवद्ग्रह का सागन प्रयलम्बन बनती है इसी प्रेम का विस्तार सबत्र है प्रेम तथा रान'द क कारण ही परग्रह का प्रावट्य (प्रवतार) हाता है धार के नर लीला करत हैं धान'द का सागर रसावतार की इन लीलाका की उद्श्य ग्रहनुकी लीलान'द ही है ¹

मनोयानात्रि दृष्टि स दगा जाय ता मनुष्य मात्र का सर्वाधिक व्यापन भाव रति है और आदिम प्रवृत्ति वाम है मनुष्य की प्रमुख्य आदिम प्रवृत्तियां घृता (Ego) भय (Fear) और वाम (Sex) कही जाती है भय नकारात्मक वाम नकारात्मक और उदामीन हाता है यानी अहं तो नकारात्मक है और न नकारात्मक इन प्रकार वाम प्रेम सयध्यापी भाव है वाम से ही मनव धामनामो का अम्मुदय होता है इस प्रेम का म्यापी भाव रति है और चरम रूप मधुर भाव की पूण अभिव्यक्ति राधाकृष्ण की प्रेम लालामो मे है स्त्री पुरुषो के रागात्मक सम्ब'घा म पति पत्नी के प्रेम म सर्वाधिक ध्यापण होता है इस प्रेम म उल्लास, तीव्रता, गहनता, घन'यता तथा मादकता है प्रेम मे रसोद्रेक की चरमावस्था यह होती है जहा स्व और पर के वधन समाप्त हो जात हैं और युगल निर्विभेप प्रेम म लीला हो जाता है निष्कृज लीला तथा नित्य बेलि म यही प्रेम मूर्तिमान हो उठा है

¹ (क) प्रीति के बस्य य है मुरारी ।

प्रीति के बस्य नटवर मुमेपहि धर्यो प्रीति बस करज गिरिराज धारी ॥

प्रीति के बस्य ब्रज भय मायन चोर, प्रीति के बस्य दावरि बधाई ।

प्रीति के बस्य गोपी रमण नाम प्रिय, प्रीति बस जमाल तर मोच्चादई ॥

प्रीति बस नद वधन बरन ग्रह गए, प्रीति के बस्य बनधाम कामी ।

प्रीति के बस्य प्रभु सूर त्रिशुवन विदित, प्रीति बस सदा राधिका स्वामी ।

सूरसागर (सभा) पद स 2636

(ख) धान'द की निधि नन्दकुमार ।

प्रगट ग्रह नरमेप नराष्ट्रत जगमोहन लीलावतार ।

सवनन धान'द लोचन धान'द मन मे धान'द ।

परमान'द सागर (शुक्ल) पद स 29 पृ 10-11

इन लीलाया म लीला रस प्रवाहित है इन लीलाया म रम रूप हान व कारण दोनो ही समान है इसीलिए कृष्ण भक्तो म नित्यविहारी रूप अधिक माय है प्रेम हरि रूप ह इस नित्य विहार लीला मे अनुभूत प्रेम ही सबश्रष्ट है जिसमे स्वकीया परकीया दोना प्रवार का प्रेम समुत है इस नित्य विहार म युगल रमणलीला मे सानद्ध रहत है इस लीला का न आदि है और न अंत यह प्रेम कालातीत व कालजयी होता है प्रेम की असङ्गता ही उसमे सर्वोत्तम विशेषता है १

युगल लीला म तुत्सुखी भाव अपेक्षित है युगल मानम अपन प्रिय का सुखी तथा आनन्दित देखन की ही कामना करता है और उनके आनन्द म स्वयं आनन्दित होता है उसके मन म उल्लास का भाव ही रहता है तथा ईप्सा द्वेष आदि भाव मन म नहीं आते हैं

युगल लीला में राधाकृष्ण का पारस्परिक सम्बन्ध घनिष्ठतम है य दोना ही बादल बिजली या जलतरंग वत हैं तथा दानो का मानस प्रिय के निष्पान्ति कार्यों के अनुकूल प्रतीति करता है २ मानस शास्त्रियों की भी यह

१ न आदि न अन्त विहार करे दोड, लाल प्रिया में भई न बिहारी ।
 है नई (नई) भाति नई छवि काति नई नवला नव नह बिहारी ॥
 रहे मुह चाहि दिय चिन आहि परे रम प्रीति सु सबस हारी ।
 रह इह पास करे महुहास सुनो ध्रुव प्रेम अकरव्य कथारी ॥

बयालीस लीला भजन तृतीय शृ लला लीला पृ 114

२ जोई जोई प्यारी करे सोई माहि भावे,
 भावे मोहि सोई साई करे प्यारे ।
 (जश्री) हित हरिवश हस हसनि स्यामल गौर,
 कही कौन करे जल तरमीनि यारे । हित चौरासी, श्री हितहरिवश
 हिडारो चूलति है पिय प्यारी ।
 घन रजनी दामिनी त डरप, पिय हिय लपटि सुकुमारी
 ज श्री भट निरखि दम्पति छवि देत अपनपा बारी । युगल शतक, श्री भट्ट
 प्रेम रसासव छवि दोऊ करत दिलास विनोद ।
 चढत रहत, उतरत नही, गौर स्याम छ विमोद ।

बयालीस लीला रतिमजरी लीला, ध्रुवदास

मायता है कि प्रेम की चरमावस्था में स्त्री पुरुष अत वाह्य की परिस्थितियाँ स विच्छिन्न होकर एक विशिष्ट भावलोक में विचरण करते हैं या दो मन एक हो जाते हैं भावना एक की यह स्थिति होती है प्रेमदशा का एकत्र जल में धुली हुई शकरा सदृश होता है यह वह मानस स्थिति है जब सबन प्रियतम की छवि ही दृष्टिभंग होनी है यह लीलाश्रो में कृष्णमय या कृष्णीकरण की स्थिति है राम लीलाश्रो में कृष्ण सभी गोपियाँ के सामीप्य हात ह व मोलह हजार गोपत्राश्रा के साथ सोलह हजार रूप धारण कर नृत्य करते हैं और रास के मध्य राधा के साथ ही शोभित होते हैं प्रिय के सामीप्य का आनन्द प्रत्येक गोपी प्राप्त करती है¹ यह प्रेम की उत्कृष्ट स्थिति है

भारतीय मनोपियाँ ने प्रेम का जीवन का मूल भाव स्वीकार किया है लेकिन यह प्रेम या काम यौनेच्छा का रूपांतरण नहीं है अपितु जिजीविषा का सूचन है² काम या प्रेम को सकुचित अथ की अपेक्षा उदात्त रूप में ग्रहीत करना अधिक उपयुक्त है राधा कृष्ण की प्रेमलीलाश्रो में काम वृत्ति का रूपांतर हा जाता है और काम भाव बीर धीर लीलाभाव बन जाता है मानस शास्त्रियों की मायता है कि सम्बन्ध तीव्र स तीव्रतर होता जाता है और निरन्तर सश्रद्ध-रहता है पुष्टिमार्गीय लीलाश्रो में प्रेम के आरम्भ से लेकर प्रेम की चरमावस्था तक की विभिन्न स्थितियाँ का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है आकस्मिक मिलन और उससे उत्पन्न लरिवाई का प्रेम' मन में गहरा पठना है

निरन्तर परस्पर प्रत्यक्ष मिलन, दर्शन सभाषण की चाह बलवती होती जाती है मन प्रियतम से मिलने को आतुरित रहता है इस मिलन हेतु आवश्यकता पडने पर अनेक छद्म उपाय भी किए जाते हैं क्षणिक वियोग असह्य होता है लेकिन मयादाएँ तथा समाजगत बंधन छिन भिन हो जाते हैं

¹ पटदस घोष सहस्र मुकुमारी पट दस सहस्र गुणल

वाहूँ सौँ कुछ अतर नाहो, करत परस्पर रयाल

सूर सागर (सभा) पद स 1665

एक ही मूरति ललित लाल आलात की नाई

सबके असन धरि सावर वाहूँ सो हाई

नददास पदावली रासपचाध्यायी पाँचवा अध्याय पद 67 68

² ब्रजभाषा के कृष्णकाव्य में माधुय भक्ति, डा रूपनारायण, पृ 223

एक ही भ्रमदम्य वामना रहती है—प्रिय मित्रन यह मिलन नित नूतन होता है 'रमण मुख' ही कृष्ण के बार बार प्राक्ख्य का कारण बनता है

गूर ने प्रेम की प्रारभ म लेकर चरगावस्था तन की विभिन्न स्थितिया का जीवन्त चित्रण किया है मातन चारी लीला, चिरहरण लीला, पनपट लीला, दानलीला, गान्डी लीला रास लीला, गुगल लीला आदि प्रेम की विभिन्न स्थितिया हैं प्रेम प्रारभ हाजर आमकिन, व्यमन और फल प्राप्ति का धार बढकर चरमोत्कप पर पट्टचता ह कृष्ण मम्प्रदाय क विद्वाना के अनुसार गोपिया (जीवात्मा) द्वारा रास प्रवण फल प्राप्ति (स्वरूपान या अगणितान) है यहा प्रिया प्रियतम का मिलन हो जाता ह^१ एक प्रमी प्रयवा प्रेमिका के मन की विभिन्न स्थितिया क गतिपाल चित्र इन लीलाधाम है मिलन पर मन हृषित तथा आनन्दित हाना है और उमम व्याप्त मममन बुष्टाए नष्ट हा जाती है वस्तुत यह मन स मन का मिलन हा जाता ह^२

इन लीलाधामो मे व्यक्तिगत घनिष्ठगम्य धा की अनन्यता क नकटय मिलता है तथा मानसिक सुख प्राप्त होता है स्था मनाविधान के साथ साथ समूह मनो विज्ञान के निष्कर्षों का सफल चित्रण इन लीलाधाम ह गायिया की काम द्वंद से विमुक्ति चिरहरण लीला मे है अनिश्चय और भटनाव स मन को एक निश्चित माग मिलता है यह मनोविज्ञान सम्मत है कि प्रभावक व्यक्तिव ही प्रमुत्व पाता है या कुछ गृहण कर सकता है अन नानलीलाधामो मे कृष्ण और उनके सहयोगिया की नारीपानो स बहम करनी पडी और उह समझाना पडा

^१ आजु बनी दम्पति वर जोरी ।

सावल गौर वरन रूप निधि नद किर्सौर व्रजभान किमोरी ।

अति प रग बढ्यो 'परमानन्द' प्रीति परस्पर नाहिन थोरी ।

परमानन्द सागर (शुनन) पद स 246

^२ दुलह दुलहिन सुरग टिडारे भूलत प्रथम ममागम सो गठ जोरे ।

नददास प्रमु रस बरसत जहा नव धन दामिन के अनुहारे ॥

नददाम पदावली (व्रजरसनदास) पृ 326

बठे लाल नवल निकु ज माही ।

अनिरस भरे दाऊ अग जादि के हिलि मिली दे गलबाही ।

भरतदु ग थावनी (डू भा) प्रेममालिका, पृ, 60

तभी प्रभावित हो के दूष दती दान या यौवन दान करती है भावरमण भी दानलीला मे मिलता है

नारी-मन मगची होना है वह प्रियतम स मिलना तो चाहती है लेकिन सामाजिक तथा लौकिक बंधना से वह विमुक्त नहीं हो पाती अतद्वद से मुक्ति के लिए कृष्ण गोपियो स यमुना किनार, गाव की गलियो चौराहो आदि पर छेद छाड करत है उन्हें प्रेम व त्रिए प्रेरित करते हैं पनघट लीला आदि म डनी तथ्य की पुष्टि हाती ह रामजीना पूव गूर आदि न गोपियो को लौकिक मर्णाग्रा म रहन का नह कर उनक मानस की स्थिति जाननी चाही है लेकिन गोपिया द्वारा सामाजिक बंधना का अस्वीकार करने पर वे राग लीला करते हैं राम लीला क खडित हा वे पश्चात महाराग होता है इसका भी एक मना-वैधानिक कारण है कि भावा म अवराध आन पर व अधिव उत्तेजित व तीव्र होत हैं इयतिण महाराग सघनतम और तीव्रतम होना ह

निकु ज लीला, हिचोनलीला विहार लीला आदि म राधा कृष्णकी प्रणय लीलाया के सजीवतया उद्गमचित्र है राधाकृष्ण का प्रेम स्थि है ¹ वे परस्पर प्रेम मत्त हा रस्थानद का आनद लते हैं ² प्रेम की प्यास निरंतर बलवती हाती जाती है औररसम अतृप्ति का भाव रहना है मनुष्य का मन प्रेम मे अतृप्त रहना ह दोना माय त्रिद्रा त्यागत हैं, नितनूतन प्रेम युवन रहते हैं अग से अग मिलन पर भी बेचन हैं ³ वे अधिकाधिका लीनानद की प्राप्ति के लिए प्रयत्न-रत हैं उन्हें अपना प्रेम म अपनी युगल लीला के अतिरिक्त लोनादि की विल-कुन चिन्ता नहीं रहती ⁴ ये सभी मानसिक क्रियाए है

¹ राधा माधव अद्भुत जोरी

सदा सनातन श्वरम विहरत अविचल नवल विशोरी ।

युगल शतक, श्री भट्ट, 59

² आज थोऊ भूतत रति रम साने । -वल्लभ रसिक की वाणी

³ सरस विलास गान अग अग लपगाने

आरस म अरमान नना न अधान है । वयालीस लीला भजन तृतीय

शु खला लीला, पृ 112

⁴ आठो पहर रहे मनवार

लोक वेद इन सब बिसारे । वल्लभ रसिक की वाणी, पृ 76

सुरत लीला के चित्रा में प्रेम जनित अनरग व सूक्ष्मतम भावा का प्रस्तुतीकरण मिलता है¹ सोदय के भी अनक भाव चित्र है सखी सम्प्रदाय के लीला साहित्य में तो राधाकृष्ण (निकुज विहारी तथा निकुज विहारिणी) निकुज छोड़कर एक कदम भी बाहर नहीं जात हैं यहाँ काम भाव के उदात्त रूप का प्रस्तुतीकरण है

सखी सम्प्रदाय तथा राधावल्लभ सम्प्रदाय आदि की रास लीलाओं में सखिया पुष्टिभारिणी रास लीलाओं की गोपिया के मद्दुष्ट सम्मिलित नहीं हानी क्योंकि ये लीलाएँ गाय्य हैं और मन्दी का वाय युगल की सेवा सुश्रुपा करना तथा उन्हें आनन्दित कराने के लिए आवश्यक सापत्नी संप्रहीन करना है सखिया तो युगल को आनन्दित देख स्वयं आनन्दित होती हैं यहाँ राधा कृष्ण का मिलन एक नारी का नर से मिलन (अध्यात्मिक अथ म जीवात्मा का परमात्मा से मिलन) है वस्तुतः प्रेम ही नर, नारी स्थान और प्ररणा है -

परब्रह्म या कृष्ण के प्रादुर्भूत (अवतार) के पीछे भी मनोविज्ञान सम्मन आधार है निगुण, निराकार और निर्विशेष ब्रह्म के साथ मनुष्य का रागात्मक सम्बन्ध जोड़ा जाना संभव नहीं है मानव रूपरेखहीन ब्रह्म का अपने भावलोक में ग्राह्य नहीं कर पाता है अतः अल्प को रूप देकर उसे ईश्वर नाम दिया गया ईश्वर अर्थात् समस्त पेशवय बोध के कारण मनुष्य ने उसे अपने से बड़ा और उद्धारक समझा साथ ही वह ब्रह्म को मन्वथ्यापी भी समझता रहा अतः इन दोनों रूपों का अतिश्रावण कर माधुर्य रूप प्रतिष्ठित हुआ और ब्रह्म मूलतः मधुर या रस रूप कहा गया

इस प्रकार ईश्वर रूप धर्म संस्थापना, दुष्ट दमन तथा साधुओं की संरक्षण से सम्बद्ध हुआ और ब्रह्म का मूल मधुर रूप लोकानुरजन तथा सर्वांगीण

¹ कु वर दोऊ सुरति समर रनधीर ।

मध्य सज पर विहार निहत्त रही सुधी न शरीर ।

महावाणी-हरि व्यास देवाचार्य

² (क) प्रम नाचवत नचत सत्र जहू ली धामी घाम ।

सो नाचत हित नाम वस सेवक चित विधाम

मुधम वाधिनी, लाडिलीदाम पृ 8

(ख) नाइक तहां न नाइका, रस करवायत खलि

सखी उम सगम साम पियत नैन पुट भलि । वयालीस लीना,

रतिमजरी लीला, पृ. 219

ज्ञानदायक मिद्ध हृद्मा यह माना गया कि मूल पुरुष मामा यतया उभय लिंगी है वह द्विधाविभक्त होकर नारी की उत्पत्ति करता है तथा उसके साथ रमण करता है श्रुति भी कहती है कि 'स एनाकी ता रमत एकोऽह बहुम्या प्रजायम्' - एक स ही अनेक वनन तथा रमण करन की उमका बाछा है गुह्य साधनामा ने शब्दा मे उम पुरुष की स्थिति अद्वय, युगनद्ध, मिथुन, युगल, समरस, सहज आदि की है परात्पर तत्व के द्विधात्मन रूप को शक्ति और शिव, प्रकृति और पुरुष राधा और कृष्ण, सीता और राम, लक्ष्मी और नारायण आदि कहा जाता है

इसी सन्तम मे यह लक्ष्य करन योग्य है कि प्रत्येक पुरुष क वाम भाग म नारी और दक्षिण भाग म पुरुष तत्व विद्यमान कहा जाता है अद्ध नारीश्वर का परिकल्पित रूप भी इसी मा यताधारित है यह मूल पुरुष निरन्तर रमण फ्रीडा करता रहता है कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय मनीषिया क अनुसार ब्रह्म का मूल भाग प्रेमयुक्त है और प्रेम के द्वारा ही ब्रह्म स साक्षात्कार हो सक्ता है अत ब्रह्म से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करन की परिकल्पनाए की गई भगवद् प्रेम को नैतिक प्रेम का चरमोत्त्प रूप ही कहा जा सकता है लौकिक प्रेम के अनिवाय तत्व तथा भावदशाए रूपांतरित हो भगवद् प्रेम ने तत्व व भाव दशाए बन जाती है इस प्रकार लौकिक प्रेम ही चरम स्थिति म आत्मोत्तम की सीमा तन पटुच कर आध्यात्मिक प्रेम म परिवर्तित हो जाता है¹ भारतीय मनीषिया के अनुसार भगवान मानव कल्पित, रम रूप, प्रेम रूप या ज्ञानद रूप है

कृष्ण को सच्चिदानन्द कहा जाता है जा प्रेम लीलाण करत हैं पाश्चात्य मनोविचारक थोडलेस के मतानुसार ईश्वरीय प्रेम लौकिक प्रेम का प्रच्छन्न रूप है तथा ईश्वर कामिया क द्वारा परिकल्पित अपन प्रिय का रूप है - थोडर, श्विसर आदि पाश्चात्य विद्वान भी एम ही विचार अभिव्यक्त करते हैं और भक्ति भावना का आलम्बन 'नाम भाव वा मानस है कृष्णव मनीषिया क रसिक सायना³ ने मन व मनोवर्तिया को अत्यधिन महत्त्व दिया है व मनशुद्धि का

¹ भारतीय भाषाओ म कृष्ण वाक्य मे सनलित टा ब्रजेश्वर वर्मा का आलख पृ 377

² Introduction to Psychology of Religion Thouless P 128

³ भागवत रस वा भाक्ता 'रसिक' भी कहा गया है 'पिवत भागवत रसमालय महरहो रसिका मुवि नाकुना' श्रीमद् भागवत 1 1 3

प्राथमिकता देते हैं उ होने वासनाओं के दमन को उचित नहीं माना और मानव हृदय को उद्वेगित करने वाली वासनाओं की शुद्धिकर कृष्णीकरण करने पर बल दिया इसी प्रक्रिया में मावक भक्ता न जामनात्रा या वृत्तिया को उगा तीव्रत किया और जि ह लोभ में अनुचित, ह्य, त्याज्य या मयादा विपरीत समझा जाता था उह ही भगवद्गीता का आधार बनाया राग, भोग और शृ गार मन से मगधिन विषय है और मनुष्य को य हा सासारिकता में लिप्त रगते हैं कृष्ण लीलाग्रा में इन विषयों को कृष्णीकरण किया गया समार में रागात्मक संबंध व्यक्तिक भावा या सग्व वा के आदश पर आधारित हाना ह

इन लीलाग्रा में कृष्ण स व्यक्तिक सम्बन्धित स्थापित किया गया है कृष्ण नव भाव में भजनीय है पुष्टिमार्गीय लीलाग्रा में कृष्ण के साथ बालवत् मित्र वत् और कातवत् तथा अ य सम्प्रदायों की लीलाग्रा में कातवत् प्रगाढ़ सम्बन्धित स्थापित किया गया तथा हृदय के सभी मनोभावों का कृष्णापित किया गया है इन लीलाग्रा में रागात्मक सम्बन्धों से निवृत्त नहीं ह और न भावा का दमन ही ह

दस प्रकार 'काम' तथा वासनाग्रा का रूपांतर कृष्ण लीलाग्रा का द्वा आधार है काम की उच्च स्थिति को प्रेम में परिवर्तित किया गया है इस प्रेम भाव के साथ मानव की सौंदर्य वृत्ति भी सादृष्ट ह इस सौन्दर्य वृत्ति का दमन का भी ये समर्थन नहीं करत है क्योंकि दमन नकारात्मक होता है और उमम लाभ की अपेक्षा हानि की सम्भावनाएं अधिक है इस प्रकार य रतिक काम का स्वच्छासी भाव स्वीकारत है यौन या कामवृत्ति का पाश्चात्य मानस शास्त्री अधिक महत्व देत ह

मनाचिन्ति सरु प्रायड का कहना है कि अचेतन मन¹ स्थित लिबिडो² मूलत कामवृत्ति है मनुष्य इस वृत्ति द्वारा प्राप्त शक्ति का उपयोग अनुचित इच्छाग्रा का निरोध कर उदात्तीकरण (Sublimation) की प्रक्रिया द्वारा

¹ प्रायड मा क तीन विभाग मानता है— (1) चेतन (2) पूर्व चेतन (3) अचेतन। डा वाटसन एत्र उमके अनुयायी मन की सत्ता में ही सदेह करत ह युग अचेतन के चार रूप बताता है—आत्मा एनिमा (नारीभाव) एनिमम (नरभाव) और ट्राया

श्रेष्ठ बायों की ओर लगा सनता है फायड जीवन के समस्त बाय व्यापारा म फाम वत्ति (लिबिडा) को ही आधार मानता है फायड ईश्वर या ब्रह्म के अस्तित्व का अस्वीकारता है फायडीय धारणा मुरप्रत अचेनन मन पर आधारित है

विलियम मेरडुगल काम भावना को मूल वत्ति के स्थान पर मुख्य वृत्ति मानता है और सभी प्रेम (रामात्मक) सम्प्रदो म इस आरापित नहीं करता है मेरडुगल काम भावना का उ नया सामाजिक दृष्टि स अत्यावश्यक नमभक्ता ह युग 'लिबिडा' को ता स्वीकारता ह लेकिन उसे काम वत्ति का केन्द्र नहीं कहता ह युग के अनुमार काम भावना का रूपान्तर ही होता है, उदात्तीकरण नहीं युग ईश्वर का अचेनन मन का मानवीयन प्रतीकात्मक रूप मानता है युग तीन वत्तियों की चर्चा करना है— (1) इन्द्रिय वत्ति (2) रूपात्मक वत्ति और (3) नीडा वृत्ति इन्द्रिय वत्ति जीवन, रूपात्मक वत्ति, रूप और नीडा वत्ति ज्ञान-द या अनुरजन को मंचालित करतो ह वह नीडा वत्ति को मूल वत्ति मानता ह जो दोना धुरिया को सयुक्त किय हूण रहती है

यही वृत्ति मनुष्य का दमन क्रिया स मुक्त करती है और पूरण-द प्रदान करती ह यहा दृष्टव्य है कि भारतीय मनीषिया ने भी तीन वत्तिया की चर्चा हृष्णलीलायो के स-दम म की है—(1)मिसृशा (गृजनच्छा) (2) रमगच्छा (रमण की इच्छा या विलास की इच्छा)(3)युमुत्मा(युद्ध/धरस/द्वन्द्व की रच्छा) रमणोच्छा या विलासच्छा ही स्थायी वत्ति है और यही पूरण-द या लीला का आधार है कृष्ण लीलायो का विलासच्छा क माध्यम से प्रत्यक्ष व स्पष्ट मन्त्र मन से है लीला का उद्देश्य ही रमण मुन या रत्यान द की प्राप्ति ह ¹ शृ गार

¹ नद न-दन वस की-हे रा रा, भवन गए चित नैकु न लागत ॥
 स्याम स्यामा रूप मन्त्र सुख, अन्तर नेसो न कु न त्यागत ॥
 जा धारन वकुण्ठ बिसारन, निज स्थल मन मे नही भावत ॥
 राधा का-ह देह धरि पुनि पुनि,जा सुख का व-दावन आवत ॥
 विद्युरन मिलन विरह नभोग-सुख नूतन दिन दिन प्रीति प्रकासत ॥
 मूर स्याम स्यामा विलास रस, निगम नेति कहि-कहि निन भाषत ॥ २

की पूणता भी मिथुन भाव में है मुग, आनन्द तथा मौल्य भाव मन को आह्ला
दिता करत ह

रम प्रकार लौकिक प्रेम का ही रूपान्तर लीला में ह लौकिक प्रेम चरम
स्थिति में पहुचकर वृष्णवृत्त (मगनमय) हो जाता ह यह रूपान्तर की प्रक्रिया
ह जिममें पूवभाव का पूणतया भगवद् रति में परिवर्तन हो जाना है मनो
वैज्ञानिक दृष्टि से लीलाओं में मनावृत्तियाँ व उदात्तीकरण की अग्रस्था रूपान्तर
(Conversion) हाता ह क्यानि सासारिक विषयानुर्गति भगवद् लीलाओं में
पूणतया गमाप्त हो जाती ह मानय मन के समस्त मनाविचार यहा वृष्णापिन
ह काम प्रीति का मृजनात्मक तथा आनन्दानुभवात्मक उध्वामुखी व्यापार
रम लीलाओं में ह शृंगार की समस्त लौकिक चेष्टाओं राधाभाव या गोपीभाव
में वृष्णापिन हैं वृष्ण साक्षात् मूर्तिमान शृंगार एव ममथ ममथ हैं व काम
दहन की अग्रस्था राम को मोह लते हैं लीलाओं में वृष्ण मदनमाहन ह इहीं
वृष्ण का प्रेम अर्पित किया गया है

* राधा भाग सा रम रीति बढी ।

सादर करि मेटी नन्द नन्दन दून चाउ घड़ी ॥

वृंदावन में श्रीडत दोऊ जैसे कुजर श्रीडत करिणी ।

परमानन्द स्वामी मन मोहन ताहू को मनदरिनी ॥

परमानन्द सागर पद 243 पृ 76

सोई पिय के गर लपटाई

सीस घुजा दे पिय क हिय सो कसि के हियाँ लगाई ।

निधरक पियत अघर रस उमगी तऊ न नैकु अघाई

हरिचन्द रस सिंधु तरंग न अवगाहत सुख पाई ॥

भारतेदु अथावली भाग 2 मधुमुकुल, पृष्ठ 403

1 प्रेम तथा सामान्य लौकिक सुख काम में अन्तर ह काम में व्यक्ति की
स्व सुख की प्रवृत्ति होती है लेकिन प्रेम में प्रिय सुख सर्वोपरि है

* आत्मेन्द्रिय प्रीति इच्छा तार काम नाम ।

श्रीकृष्णोर् प्रीति इच्छा तार प्रेम नाम ॥

अतएव काम प्रेमे बहोत अन्तर ।

काम अघतम प्रेम निर्मल भास्कर । चतय चरितामृत आदि लीला

चतुथ परिच्छेद *

इस प्रकार राधाकृष्ण की ये प्रेम लीलाएं अगणितानन्द का आधार हैं और सच्चिदानन्द बनने की महायात्रा है प्राणीमानस प्रेम उदार दृष्टि और परमानन्द का मान जागृत करना इस लीला साहित्य का उद्देश्य है ये लीलाएं मनुष्य को आग्रह से मुक्त कर सर्वांगीण आनन्द के लिये सम्प्रेरित करती हैं कृष्ण निरन्तर आग्रह पर प्रहार करते हैं और उद्धोषित करते हैं कि जीवन से उच्च न कोई दशन है और न कोई शास्त्र है, न कोई परम्परा है और न कोई व्यवस्था ही है लौकिक जड मायताएं गतिशील जीवन में बाधक नहीं होनी चाहिये मनुष्य की मतवृत्तियों का दमन उमरे जीवन को स्थिर (जड) बना देनी है अतः उनका उचित प्रवाशन अपेक्षित है यह जीवन सर्वोपरि है और पूणानन्द प्राप्ति के लिये मनुष्य का निरन्तर प्रयत्नरत रहना चाहिये इस प्रकार कृष्ण ने लीलायात्रा का माध्यम स मानव तथा मानववाद की महत्ता का भी प्रतिपादन किया है

• जब लगी है मन बीच कछु स्वारथ को हित होइ ।

शुद्ध मुग्धा कैसे रहे, परे जो तामे तोइ ।

व्यासील लीला-प्रति औरनी लीला-ध्रुवदास पृ 64

• काम जड विषयक अनुराग है और प्रेम भगवद् विषयक अनुराग है
मध्यकालीन धर्म साधना डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ 213

राजस्थान का आधुनिक हिन्दी साहित्य एक सर्वेक्षण

राजस्थान के हिन्दी साहित्य की परम्परा पुष्ट तथा समृद्ध रही है वीरगाथाकालीन भक्तिमतालीन तथा रीतिकालीन साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और हिन्दी साहित्य को राजस्थान का प्रदेय उत्प्रेषणीय है भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भी राजस्थान के साहित्यकारों का योगदान स्मरणीय है आजादी की लड़ाई में उन्होंने जनचेतना जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है आधुनिककाल में भी यहाँ साहित्य सृजन अनवरत हो रहा है

राजस्थान के आधुनिक हिन्दी साहित्य की चर्चा करते समय काल की गणना का प्रसंग आ सकता है यानि आधुनिक हिन्दी लेखन का प्रारम्भ कब से माना जाय ? गद्य पद्य में यह कालखण्ड अलग अलग ही सकता है लेकिन यहाँ परम्परा तथा कालगणना की अपेक्षा वर्तमान लेखन के सन्दर्भ में विचार किया जाना अधिक प्रासंगिक है

एक प्रश्न राजस्थान निवासी लेखक के प्रसंग में भी उठ सकता है क्या सम्भव है कि राजस्थान में निवास कर रहे लेखकों को सम्मिलित किया ही जाना चाहिये साथ ही वह लेखक जो राजस्थान से जुड़ा रहा है और व्यवसाय सेवा या अन्य कारणों से अभी राजस्थानतर है—प्रवासी है उसे भी सम्मिलित करना समीचीन ही होगा ऐसा करने पर हम अपनी दृष्टि का विस्तार ही करेंगे इसमें कोई अतिरिक्त मोह नहीं है बल्कि हमारा यहाँ कृत्रिम के नम्यक मूल्यांकन की यह अपेक्षा है

काव्य

राजस्थान का आधुनिक काव्य, काव्य सौन्दर्य सहज अभिव्यक्ति और मूल्यबोध की दृष्टि में विचारणीय है और राजस्थान के काव्य की उपलब्धियाँ

को स्थापित किया जा गया है

हिन्दी काव्य की नयी प्रवृत्तियाँ अथवा प्रकार यहाँ उपलब्ध हैं कविता, नयी कविता, अन्वयिता, गीति कविता आदि हम यहाँ सतिष्ण म स्फुट तथा प्रबध काव्य की दृष्टि म विचार करेंगे पहल प्रबध काव्य को ल

आधुनिक हिन्दी प्रबध काव्य म मानवीय सवनाया अ नमन के द्वन्द्व अनुभूत सवनाया और गुणीन नमस्वाया की सफल अभिव्यक्ति दृष्टिगत हानी है आज के इस नतावपूण और व्यस्त समय मे प्रबध काव्य लेखन एक दुरूह पाय है ललित राममान न सफन हिन्दी प्रबध काव्य समर्पित किए हैं आधुनिक प्रबध काव्यकारा क हर म डा राधय राधय, डा रामानन्द तिवारी 'भागीनन्दन', परमेश्वर द्विरेफ डा रामगानाल शमा 'दिनश, डा दयाकृष्ण विजय आदि नाम रेखांकित किए जा सक्ते ह आधुनिक हिन्दी प्रबध काव्य-कारा के सवाधिर महत्वपूरा नाम डा राधय राधय का है डा राधय राधय बहुप्रतिभा सम्पन्न सफन लयन है प्रबध काव्य गृजन के क्षेत्र म इहाने महा-पाय और सटकाव्य आता लिये ह मानवीय चेतना को रूपांकित करन, मस्कृति आर सम्पना के विभिन्न चरणा का प्रस्तुत करन का बौद्धिक प्रयाम 'मिषाधी' महाकाव्य है भारतीय मस्कृति की उच्चता तथा राष्ट्रीयता के सन्दम म यह महाकाव्य महत्वपूण है ललित पाया क चयन म दुररता भी है

डा राधय राधय के 'उत्तरायण' और 'महाविजय' अपूण महाकाव्य है उत्तरायण की रचना पलश बैक' पद्धति से की ह और कथानय भीष्म पितामह पर कर्तित ह यह अपूण महाकाव्य 21 खण्ड म है 'महाविजय भी अपूण ह और महाकवि क अतिम दिना की रचना प्रतीत होनी है डा रामानन्द तिवारी 'भारतीनन्दन' प्रणीत 'पावती' महाकाव्य क ध्य प्रतिभा भाव सौन्दय, कला शिल्प, प्रबधात्मक आर रम परिपाक की दष्टि से उल्लेखनीय है डा तिवारी मास्कृतिक मूल्यो के प्रति समर्पित है और यह दष्टि इस महाकाव्य मे भी है डा तिवारी की भारतीय धम मस्कृति क दर्शन के प्रति आस्था है जो रस महाकाव्य मे प्रकट होती है

श्री परमेश्वर द्विरेफ को 'मीरा' महाकाव्य भी उल्लेखनीय है मस्कृतिक मदाकिनी 'मीरा' उज्ज्वल चरित की आधार बनाकर लिखे गए इस महाकाव्य म श्री द्विरेफ ने मौलिक उद्भावनाएँ भी की ह नारी चेतना के स्वर महा-काव्य मे सवत्र ह रम परिपाक की भी विशिष्टता है द्विरेफ ने दूसरा महा-

काव्य प्रेमचन्द के जीवन प्रसंगा पर आधार बनाकर 'युगद्रष्टा प्रेमचन्द' लिखा है प्रेमचन्द के जीवन के समस्त उतार चढ़ाव यहा चित्रित है श्री द्विरफ ने श्रीमती कमला नेहरू पर भी 'कमला' महाकाव्य रचा है

डा रामगापाल शर्मा 'निर्ग' के महाकाव्य 'सारथी' का कथानक भी पौराणिक ही है चिरंतन जीवा मूल्या के प्रति चिंता महान्वि बराबर करता है मूल्या का मधुप महानाव्य में बराबर है विज्ञान की अथ प्रवृत्ति तथा सनस्त मानवता को महान्वि उजागर करता है भाषा शरीर महाकाव्य के अनुकूल है राष्ट्रीय के मास्कुतिन धारा के प्रमुत्र रवि डा दिनश की जीवन् दष्टि इस महाकाव्य में है

युग पुरुष महात्मा गांधी के जीवन का लेजर देवपुष्प गांधी महानाव्य की रचना श्री रमेशचन्द्र शास्त्री ने की है अति उत्साह के साथ श्री शास्त्री ने गांधी को अवतारी रूप से चित्रित किया है परिणामत मूल्या की अग्रगण्य विचार के भावनाएं प्रबल हो गई हैं अन्त में काव्यगन मूल्या का हानि पहुची है और भावपक्ष के कलापक्ष के अन्त में दृष्टियां से महानाव्य अपना विशिष्ट योगदान नहीं दे पाता है तथा एक सामान्य रचना ही यह बन सका है

डा दयाकृष्ण विजय द्वारा रचित 'आजन्म' महाकाव्य में अजनिपुत्र पवनसूत हनुमान की यशोगाथा है इस महाकाव्य के हनुमान धीरात्मात् नायक है कथा शिल्प, रस परिपाक, शली संग रचना आदि विशिष्ट है तथा साम्प्रतिक मूल्यों के प्रति महाकवि अत्यधिक चिन्तित लगता है वह महाकाव्य अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार मीरा पुरस्कार में पुरस्कृत है

इन महाकाव्यों के अतिरिक्त आग और धामू (शकुंतला भागव अरचना) रामकथा कल्पतरु (श्री नित्यानन्द शास्त्री) हनुमाच्चरित (रणवीर सिंह) शक्ति शखनाथ (प लक्ष्मीचन्द मिश्र) वसुमती (श्री दौलतसिंह लोढा) प्रह्लाद (डा पुष्करदत्त शर्मा) प्रवाधायन (नाथूराम भारद्वाज) आदि भी प्रकाशित हैं अधिकतर महाकाव्य के नायक तथा कथानक प्राचीनधर्म ग्रंथों में आये हैं

खडकाव्य की दृष्टि से डा रागय राघव की काव्य कृतिया अजय खडहर, पाचाली, आदि उपलब्ध है प्रथम खडकाव्य में हिटलर के हस पर आक्रमण तथा उनके प्रतिरोध का वर्णन है ता पाचाली में पौराणिक इन्द्रिय है मशक अभिव्यजना और शली की दृष्टि से पाचाली उल्लेखनीय खडकाव्य है

श्री सुधीन्द्र का सुप्रसिद्ध खडकाव्य जाँहर है यह पदमिनी के जीवन चरित्र पर आधारित है सुधीन्द्र राजस्थान के हिंदी काव्य जगत के उज्ज्वल नक्षत्र है भावपक्ष व कलापक्ष की दृष्टि से यह एक सुंदर रचना है

डा रामगोपाल शर्मा दिनेश' के लगभग चार पांच खडकाव्य उपलब्ध हैं 'हिम प्रिया राष्ट्रीय चेतना का खडकाव्य है जिसमें चीनी आक्रमण तथा भारतीय जन के स्वदेश प्रेम से मोतप्रोन है शली शिल्प रूप व भाव की दृष्टि से यह एक श्रेष्ठ रचना है इनका एक अन्य खड काव्य 'उत्सव' है जिसमें भाई बहिन की रक्षा के लिए उत्सव करता है 'दुर्वासा पौराणिक इतिवत्तात्मक खडकाव्य है

प्रगतिशील कवि जुगमदिर तायन की रचना मुद्विष्टिर है तायल न युद्ध का कारण वग वपम्य तथा वग भेद माना है वैचारिक प्रोत्ता तथा भाषा शली की सहज मप्रेपगीयता इसकी विशिष्टता हैं

डा शानि नारदाज रावेश द्वारा रचित परीक्षित' खडकाव्य इतिवत्तात्मक है यह पुराण कथा पर आधारित है भाषा, मरचना, वचारिक गरिमा अनुभव की प्रामाणिकता की दृष्टि से यह उल्लेखनीय खडकाव्य है

उनके अनिगिक्त अन्य महत्वपूर्ण खडकाव्य हैं माधारी (डा मनाहर प्रभाकर) ममता की समाधि (डा त्रिभुवन चतुर्वेदी) शूषणखा (श्रीतमसिंह चागरेचा), महिल्या (माधव शर्मा), नागर सतरण (डा रामगोपाल गोयल) जनकजा अशोक वासिनी (गणेशचंद्र जोशी मवतर), शशाज (कलाश त्रिवाडी विद्रोही), प्रतिपदा (डा सरनामसिंह शर्मा अरण), प्रेरणा, आभाम, मृत्युज्जयी (माणवचंद्र रामपुरिया) वधन नूरजहा, वजित देश (शकुंतला नागव अचना) मादि

स्फुट काव्य की दृष्टि से राजस्थान में प्रचुर मात्रा में सजन हो रहा है राजस्थान के वतमान साहित्य मजन को देखे तो लगता है कि सर्वाधिक रचनाएँ 'कविता' में उपलब्ध हैं आधुनिक कविता क्षेत्र के प्रारंभ में डा गणेश राघव, डा सुधीन्द्र और श्री मेघराज मुकुल का उल्लेख किया जाना अप्रासंगिक न होगा सुधीन्द्र की कविताओं का स्वर छायावादी राष्ट्रीय चेतना युक्त तथा मानववादी रहा है सुधीन्द्र युग की पहचान के डा प्रकाश आतुर राजस्थान की आधुनिक हिंदी कविता का प्रारंभ डा सुधीन्द्र से मानते हैं डा सुधीन्द्र ने राजस्थान के काव्य को एक दिशा दी है

काव्य के क्षेत्र में प्रथम सहकारी प्रथम 'सप्त विरग' काव्य सन्तान है। इस सन्तान में राजस्थान के चर्चित सात कवियों की रचनाएँ हैं। य कवि हैं— सचची कमलानर, कपूरचन्द्र मुनिश कटप्यायान सेठिया, नदचतुर्वेदी प्रभाश आतुर मुधीद्र और जान भारि— इन मन्तन के प्रवाशन से पूव ही मुधीद्र का देहान्त हा गया। मुधीद्र का देहान्त राजस्थान के हिन्दी काव्य सन्तान के लिए गहरा आघात था। इन सप्त विरग के सात कवियों ने राजस्थान के आधुनिक हिन्दी काव्य मंडार की अर्पण सृजन में पर्याप्त पूति की है। निमदह ये सभी राजस्थान के सगन्त क अरणी ह्मनाक्षर हैं।

मुधीद्र की प्रभाशिन काव्य कृतियाँ शतनाश मर गीन जीहर प्रलय बीणा, अमृत तल प्रेयस आदि हैं। मुधीद्र का काव्य युग का स्वर था जिसमें आशा निराशा प्रेम, राष्ट्रीय भावना जन जाति प्रगतिवाद सभी भाव सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय चेतना छायावादी रूप में मावीर मूया के लिए मुधीद्र का काव्य प्रगतीय है।

डा रागय राघव सभी काव्यान्वेषना से सम्बद्ध रहें हैं। प्रयोगवादी और प्रगतिवादी प्रवृत्तियाँ का गहरा प्रभाव इनके काव्य पर परिलक्षित है। इनके काव्य में दार्शनिक चिंतन मानववादी सूक्ष्म दृष्टि, और महज अभिप्रकित हूँ पूणकलश' रागेय राघव की एक महत्वपूर्ण कृति है। डा रागय राघव का देहान्त भी राजस्थान के साहित्य जगत के लिए एक गहरा आघात था।

वयोवृद्ध पीढी के सिद्धहस्त कवि श्री जनादनराय नागर की अपनी अलग ही एक शली है। भावुक नागरजी की कविताओं में जीवन सघष की मार्मिक अभिव्यक्ति है। इनके काव्य का प्रेरण स्वर उत्साह है। दार्शनिक चिंतन, प्रेम की अभिव्यक्ति तथा राष्ट्रीय विचार इनके काव्य के स्वर हैं। इन्होंने विपुल मात्रा में काव्य सृजन किया है।

श्री शम्भूदयाल सबसेना के काव्य सन्तान रत्नरेणु व अनागता प्रकाशित है। इनमें कथा शिल्प का नयापन है। प्रयोगवादी डा कहेयालाल सहल की काव्य कृतियाँ प्रयोग शाला के धागे तथा समय की सीढ़ियाँ हैं। भरतश्याम ने ऊट सुज्ञान, राष्ट्र कथा, मरुधरा और रिमक्तिम काव्य सन्तान दिए हैं। ओजस्वी कवि आगे फिल्मक्षेत्र में चले गये और फिल्मी गीत लिखने लगे। राजस्थान की हिन्दी कविता को प्रचारित करने में श्री मेघराज मुकुल उल्लेखनीय हैं। ओजस्वी गीतकार मुकुल की सेनानी ने अखिल भारतीय रपाति दी है। उमंग, अनुमूल आदि

चचित काव्य कृतियाँ हैं रम, रप के मधुर कवि नन्द चतुर्वेदी राजस्थान के परिष्ठ कवियो म है और कलाशिल्प, भयाभिव्यक्ति तथा मृत्यो के लिए निरंतर मचेत रहते है अनुभूति और अभिव्यक्ति का घनिष्ठ सम्बन्ध श्री चतुर्वेदी के काव्य म है ब्रजभाषा के सबयो म केरर राज की कविता तब की इनकी काव्य यात्रा १ समाजवाद तथा मानववाद के प्रति कवि समर्पित है श्री क हैया राल सेठिया की लगभग 14 15 काव्य कृतिया प्रकाशित हैं जिनम प्रमुख है अग्निवीणा, दीपविरण, प्रणाम चौडे रास्त निगम्य आदि प्रेम, राष्ट्र भक्ति का कवि है परमेश्वर द्विरण मृत गीतकार है और प्रकृति के चितेरे हैं कवि सम्मेलना म भी जमन रह है मरु व टीले घूल के ५ न आदि मे इनके भावचित्र उपलब्ध है पुरानी पीपी के मशकन हस्ताक्षर गणपति चन्द्र भण्डारी है रक्नदीप इनकी महत्वपूर्ण प्रकाशित कृति है राष्ट्रीयचेतना तथा जीवन सघप इनके काव्य का स्वर है

डा रामगोपाल शर्मा 'निशा' बहुप्रतिभा सम्पन्न कलाकार है इनकी अनेक कृतिया महत्वपूर्ण है जिनमे प्रमुख है जयघोष मधुरजी अह मरा गेय, रपगधा, गौरवगान, गायाम आदि इनके काव्य मे विविध विषय है कथ्य एवं शिल्प दाना दृष्टिया न अनन्य कीर्तिमान कवि ने स्थापित किए हैं अनन्य कृतियाँ विभिन्न स्थाना स पुस्तकृत है राष्ट्रीय चेतना व जीवन की अनुभूतिया इनके काव्य का मुख्य स्वर है शलभ (घनश्याम शलभ) प्रमुख गीतकार व रोमांटिक कवि है मामाजिक चेतना व युग बोध कविताओ म परिलक्षित है धरती का सरगम अक्षर के जुगनू, वादन और वासुकी टन्त्री काव्य कृतिया ह श्री राम गोपाल विजयवर्गीय ने 'अभिसार निशा' म प्रकृति सौन्दर्य के भाव चित्र प्रस्तुत किए है यह साहित्य अकादमी से पुस्तकृत काव्य कृति ह

कवि कमलाकर की मेरे भीत तुम्हारे चरण' एका हृम अह नृ नृ नृ और दिलनश दौर प्रकाशित कृतिया है रप, रस, प्रेम और मानस का कवि कमलाकर है यह मूलत गीतकार ह पान भारित गनन मन्त्रन व नानु कवि है ज्वार, आकाश, कुसुम, नाभ उतरी प्रगाणित आह कृति ३ कवि के गीता म अबाध मुनता, आत्मानुभूति व्यक्तिकता, अन्तर्गत, व गमीतात्मकता है श्री हरीश भादानी के काव्य सजजन अह मन्त्र, अह नृ गरी, एक उजली नजर की सूर्य मुलगते पीड, सनाट व निशा अह नृ नृ

हरीश भादानी यथाप मे जीना, मन्त्र के अह नृ नृ म मन्त्रा नृ नृ व गीतकार है सुले घलाव और अह नृ नृ नृ नृ का अह नृ नृ

कल्पनाशीलता है नट्योमोट्ट द्रनकी पचिा लम्बी कविता है प्रकृति का गीतकार
 डा ताराप्रकाश जोशी है कल्पना क स्वर, जलत घासर, गमाधि के प्रश्न, शर्मों
 के टुकड़े आदि कवि के मनलन प्रकाशित हैं गगाराम पविा आश्रीशी पीढ़ी का
 रचनाकार है पविा का काव्य सनता धुमा उठ'रहा है' प्रकाशित है एव लघु
 काव्यसकलन 'बाल जलातत जिन्दाबाद' नी प्रकाशित है श्री मगन सक्सेना
 सशका गीतकार व भावुन कवि है जिन्गी की वेदना व मानव क दुरादत कवि
 तामा क विषय हैं इनका काव्य मननन में तुम्हारा स्वर' प्रगमनीय रहा है

यही भावबाध अचिन शमा म है इनका काव्य सनता 'गीता का क्षण'
 चचित है डा प्रकाश आतुर की कवितामा का स्वर राष्ट्राप चेतना प्रेम और
 मो'दय का रहा है नयी कविता क मशनन हस्ताशरो म न'द चतुर्वेदी, डा
 रणजीत, डा शाति भारद्वाज डा प्रकाश आतुर डा जयसिंह नीरज गुगमनिर
 तायल, विजेद्र आतुराज कमर भवाडी, डा न'द किशोर आचाय, भागीरथ
 भागव डा सुधा गुप्ता मणि मधुकर भागेद्र तिमलव, रामदेव आचाय आनि
 महत्वपूर्ण हैं

डा जयसिंह नीरज की कविता की समाजा-मुष्पी प्रगतिशील दृष्टि है नील
 जल भरी परछाड्यां, दुसान समाराह डा नीरज क महत्वपूर्ण चचित काव्य सक्
 लन है विजेद्र का आम, डा रणजीन के मकलन जमतो यफ खोलता खून मार
 इतिहास का दद, आतुराज का काव्य सकलन 'एन मरण धर्मा और अय' पुल पर
 पानी व अवेकस रमेश शील की कविताएँ जुगमदिर तायल की धूप भरी सुबह
 गेशनी का रथ मूरज सब देलता है, जगल स गुजरत हुए, न'दविशोर आचाय का
 वह एक समुद्र या राम जसवाल का विम्ब प्रतिविम्ब, डा सावित्री डागा के अमिट
 निशानी एक प्यास जिन्दगी कविता की मोत पर सदभों स कटे हुए रामदेव
 आचाय का अक्षरा का विद्रोह, रेगिस्तान से महानगर तक, हरिराम आचाय का
 खुले किरणपाल, भगवतीलाल व्याम का शनाब्नी निरुत्तर है, जलालाश जोशी का चेतन
 अवचेतन व अजुरी भरवन डा सुधा गुप्ता का अनचीहा परिवेश और चेतना के
 धून, मणिमधुकर का खड खड पाखड, बलराम के हजारा नाम आदि भागीरथ
 भागव का हथेलिया म ब्रह्माण्ड और शाही सवारी श्रीकात मजुत का दपण
 क'दरा, तारादत निविरोध का गीन यात्रा दद, का सौदागर, वयकितक सतहो पर
 हम, डा रामगोपाल शर्मा दिनेश' का अह मेरा गेय रूपगधा आदि अफजल खा
 का अजाने स्वर डा मनोहर प्रभाकर का इन्द्रधनुष, विदा की साभ डा रमा
 सिंह का समुद्रने वशीर अहमद 'मयूस' का भूय बीज, स्वणरेव श्री हथ का

समय से पहले, महधर मृदुल का शब्दों का घूँघट, कमर मेवाड़ी का चाद के दाग, वहस अभी जारी है, आतिर कब तक, हेमतशेप का घर बाहर डॉं महेन्द्र भानावत का कोई कोई औरत, श्री मधुमूँन पाटया का दो घूँघट प्रीत, सुरेन्द्रदा वहुगुणा का गवीयायी माटी, डा नरेन्द्र भागतत का आदमा कुर्सी और मोहर आदि महत्वपूर्ण काव्य सजलन प्रनाशित ह

विभिन्न रचनाकारों की रचनाओं के सजलनों में राजस्थान के हिन्दी कवि भाग 1 (नन्द चतुर्वेदी) राजस्थान के हिन्दी कवि भाग 2 (योगेन्द्र किसलय) अकादमी से प्रकाशित हैं। सबदन इति (नन्द किशोर आचार्य) अतकपोत परिवेश के, राजस्थान के हिन्दी कवि (मधुकर गौड़) राजस्थान के प्रतिनिधि कवि (शरद देवडा) अजानी सलीदा पर (डा मदन लागा) आदि प्रकाशित ह विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में विभिन्न कवियों की रचनाएँ प्रतिदिन छप रही हैं।

राजस्थान के कवियों की रचनाओं में प्रवृत्ति सौन्दर्य प्रमानुभूति, युगबोध युगीन चेतना, द्वाद्वात्मकता, आत्मीयता, रहस्य आदि प्राप्त हैं। राजस्थान का सजनशील कवि अपने कर्मों के प्रतिष्ठा के प्रति साग ह। आधुनिक हिन्दी काव्य में राजस्थान का योगदान उल्लेखनीय है।

कथा साहित्य

ऐतिहासिक शौर्य, त्याग बलिदान प्रेम, साहस तथा की कहानियाँ तथा लोकिक अलौकिक पात्रों के चित्रण की प्रचुर कहानियाँ राजस्थान में बात, ग्यान आदि के रूपों में प्रचलित रही हैं तथा आज भी हैं। ऐतिहासिक पात्रों तथा उनके चारित्रिक गुणों की कहानियों का प्रभाव आज भी परिलक्षित है या कहना और 'कहानी लिखना' में बड़ा अंतर है।

उपन्यास

कथा साहित्य में उपन्यास और कहानियों में मिलित है। पहले हम उपन्यास और बाद में कहानियों पर चर्चा करेंगे। आधुनिक हिन्दी साहित्य की पहली कथा कृति बूढ़ी के श्री रामप्रताप शर्मा द्वारा रचित 'नरदेव' है¹। इस कृति का प्रकाशन मई 1903 ई० में एन. उपदगात्मक ग्रंथ है। इस उपन्यास का विशिष्ट यह है कि उपन्यासकार तरुनीय प्यारी कथा साहित्य से भिन्न

¹ राजस्थान में हिन्दी कथा व नाटक साहित्य के नवीन, डॉ. नवनविशोर पृ. 3

सामाजिक कथाओं को लेकर है, बूंदी के ही श्री लज्जाराम महता ने 'स्वतंत्र रमा और परतन लक्ष्मी' 'हिंदू गृहस्थ', 'आदेश हिंदू', 'आदेश दम्पति' आदि हिन्दी के प्रारंभिक उपन्यास रचे हैं श्री महता के उपन्यासों में समुक्त परिवार प्रथा का विघटन, पाश्चात्य प्रभाव, भारतीय जीवनादेश आदि भनकत हैं मुन्शी देवीप्रसाद जोधपुर का रुठी गानी ऐतिहासिक उपन्यास है त्रिधवाद्या के पीडा मय जीवन पर संपूर्ण देवी न श्रवणाद्या का इन्साफ लिखा

स्वातन्त्र्यात्तर हिन्दी उपन्यासों के प्रारंभिक काल में सामंती प्रथा व साम्राज्यवाद का विरोध करना अत्याचार तथा उनके कुमन्तारों का पनाफाण है तो दूसरी ओर जन जाति की प्रति है श्री यान्दत्र जर्मा चन्द्र न अपने अनेक उपन्यासों में सामंती अत्याचारों का उन्मूलन के दमघाट वातावरण का चित्रण किया है जानी डयाही दीया जला दीया बुभा, 'खम्मा अनदाता ठकुरानी रक्त कर्मा मिट्टी का बलक घग्नी की पीर डालन कुजली आदि उपन्यास इसके प्रमाण हैं श्री रियासतों में उभरती जन जाति का चित्र श्री द्वारकाप्रसाद पुरोहित के 'द्वेषनुप' उपन्यास में है

डा रागेय राघव का प्रदेश के कथात्मक में सर्वोपरि स्थान है निसंदेह रागेय राघव हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक का प्रतिष्ठित व मशहूर हस्ताक्षर हैं रागेय राघव ने प्रगतिशील चिंतन को स्वीकार किया है और उनके साहित्य में यह बराबर ध्वनित हुआ है रागेय राघव का कृतित्व निपुण है वे उच्चकोटि के साहित्यकार हैं रागेय राघव का भुविष्ठ उपन्यास 'कर्म पुकार' (प्रकाशन वर्ष 1957) है इस आलाचका न आचलिक उपन्यास कहा है लेकिन यह उपन्यास अत्यंत विशेष की अपेक्षा नटा के जीवन से सम्बन्धित अधिन है नटा की जिदगी सामाजिक वस्य मन्तार आदि का विस्तार में उपन्यास में चित्रण है इसमें मुखराम की जीवन कथा है और गहन प्रेम की साथक अभिव्यक्ति मिलती है 'म उपन्यास को लेकर न रहस्य रोमांच युक्त बनाने का भी प्रयास किया है यह क्यों किया और इसके पीछे उनकी क्या दृष्टि थी पता नहीं है लेकिन रहस्य रोमांच की उपकथा भी इसमें साथ साथ चलती है संभव है राघवता की दृष्टि से यह प्रयास है

डा रागेय राघव का दूसरा उपन्यास है 'मुर्खों का टीला' यह एक ऐतिहासिक-संस्कृति प्रधान उपन्यास है जो माहन जादवा की संस्कृति का चित्र प्रस्तुत करता है इसमें चमत्कारपूर्ण कथा विन्यास अद्भुत रहस्यपूर्ण परिस्थितियाँ और रुमानी प्रेम है फिर भी यह हिन्दी के श्रेष्ठ व महत्वपूर्ण

उप-यासा मे से एक है 'पतभर' उप-याम म जग-नाथ प्रौर मोहिनी की मनो
 ग्रथियो का मनो वतानिवतापूग निवचन ह सूग शिल्प विधान व भाव
 रावलता की अनुपस्त्रिती म यट एक मामा य वृति ही ह आग्री आवाज में
 ग्राम जीवन के स्तर पर ब्याप्त नष्टाचार का सफस चित्रण है अघरे के जुगू,
 चीवर, राह न ली आदि इनक म प्र उप नास ह उप-याम की दृष्टि से लों
 रागय राघव का उलेखनीय बागदान ह

श्री गोदान आचाय का उप याम मजु (प्रनाग 1952) आन्तकानी
 भावुकतापूग कथा वृति ह यह आ शवादी उप-यासा की श्रेणी म आत्रे है
 श्री आचाय का दूसरा उप यास 'निवसना' ह जिसम सामाजिक बचना में एरी
 एर नारी का चित्रण है यह भी भावुकता युक्त सुधाख्याी दृष्टिना लि है

श्री शम्भूयाल सबसना आदावादी विचारा के सम्प्रेरक ह है इसका
 वृहत्कार उप-याम 'मगरमच्छ' है इसम नर नागी का न-वृत्ति वृत्तियों
 का प्रकट किया है इसम जीवन व गान्थीनिक सामाजिक न वृत्ति
 नी क्षेत्र म प्रचग क्या न किया जाय इन मगर-मच्छा का न वृत्ति के वि
 विवश होना पडता ह सौम्यता के अवतार मगर-मच्छ है

श्री परदेगी के लगभग एर दान उप-याम प्रवृत्ति ह है इसका
 उप यास भगवान बुद्ध की आत्मरथा का प्रदण्ड प्रवृत्ति ह 'उदये सिद्धांति'
 व यशाधरा की कथा है अतीन ना वनमान में प्रवृत्ति प्रवृत्ति ह, एर
 का एक अय उप-यास 'जय महाकाव' गन्तु इत ह न वृत्ति ह जो
 अवादगी मे पुरस्ठुत ह इनके आत्मा न वृत्ति ह न वृत्ति ह
 माधवसिंह दीवक ने भी तलवार की उपाय इत वृत्ति ह न वृत्ति ह
 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि म लिख ह

'एक इन्सान का जन्म एक इन्सान की मृत्यु' में कथानक दाहराना प्रतीत होता है यह एक यान कथा है जा विशेष प्रभावित नहीं करती है 'एक और मुख्यमंत्री ने मम सामयिक राजनीतिक जीवन की विद्रूपता का चित्रण है सत्ता और कुर्मी की भूल तथा खामले नारों की यह तम्बीर है युग देवता में भी यह विद्रूप कथा है श्री चंद्र का एक चर्चित उपवास 'हजार घोडा का सवार है जिम पर इह राजस्थान माहिल्य ब्रकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार मीरा पुरस्कार मिला है पाँच के आठ तल में महानगरीय जीवन व दृढत मूल्य है गात्रन आत्मा में मनावृत्तिया का चित्रण है

श्री चान भारिल्ल का पहला उपवास 'व्यास स्त्रग हिरन' म लगन व्यजित करता है कि प्रणय के क्षेत्र म द्रतप्त ग्ठ जान का भाग्य ही ब्रादमी का इस दुनिया म मिलता है इसके पश्चात् 'निन्द्या पुनारे' 'कीर्ति पुरष कुभा', 'साधी ह शिप्रा और शाह और शिल्पी' प्रकाशित हुए हैं श्री चान भारिल्ल कवि तथा भावुक ह और यह भावुकता इनक उपवासाम म बराबर छापी रहा परिणामत उप वासा क अनिवाय तत्वा की उपक्षा होनी रही और सफल कृतियां म नहीं बन सकी कथा, विवाम की एक मजना की अपेक्षा भावुक विवचन होता गया है

श्री सुमरसिंह दर्दिया क उपवास 'गाग उठा दसान' और चम्बल के किनार' वाली सुरग तथा श्री करगीनन्द बागूठ का 'कताई का घागा' प्रकाशित है इसम मध्य वित्त यग की समस्यामा को उठाया गया है श्री शचीन्द्र उपाध्याय क उपवासो के नाम हैं- मिट्टी का तिरूर बावेरी, ठुगराए हुए लोग जलगाट और मीन की मीमाण श्री शचीन्द्र न ग्राम ब्रादमी का जीवन चित्रित किया ह सवि उपवासाम म मत्रबोध जगी विगिष्टता दष्टिगत नहीं हानी

डॉ मीरि भारद्वाज रासम का उपवास मूवाहा राजस्थान साहित्य ब्रकादमी म पुरस्कृत है यह उपवास भावुकता प्रधान तथा सफल उपवास कृति है श्री किशन शमा का एक उपवास तट की घाट प्रकाशित है

डॉ विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का उपवास रीछ एक बरणाधार उपवास है यह एक कथाप्रधान उपवास है कथा विवाम का बीज तो रीछ म बराबर मिलता है डॉ उपाध्याय न अपने मूया तथा स्थापनामा को रीछ क माध्यम म रूप दिया है यामदधी उपवासकाय की सफ्ट विचारधारा उपवास

में बोलती है अतिरजना, भावुकता, नतिक आग्रह, समाज के जीवन की गहरी जानकारी व सूक्ष्म दृष्टि इस उपन्यास में है पक्षधर डॉ उपाध्याय को प्रतिष्ठित करने वाला दूसरा उपन्यास है डा विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का एक उपन्यास जाग मद्धर गोरख आया (सन् 1983) सद्य प्रकाशित है इस उपन्यास में भी डॉ उपाध्याय ने नाय पथी गोरख के माध्यम से अनक विकृतिषो का सफल उद्घाटन किया है डॉ उपाध्याय ने जीवनानुभवा को लेकर परम्परित प्रकार से उपन्यास लिखा है

नदकिशोर आचाय का उपन्यास तयागत (1966 ई०) में बुद्ध के विचारा तथा उनके जीवन का व्यौरा है इसमें उनका चित्रण रूप बराबर स्पष्टिगत होता है

पानू खोलिया के उपन्यास जो अपन थ, जीव हस की रात, टूटे हुए सूर्य विम्ब और सत्तर पार के शिखर आदि है पानू खोलिया का उपन्यास सत्तर पार के शिखर राजस्थान साहित्य अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार मीरा पुरस्कार से पुरस्कृत है अतद् द्र, कथा विधान, भाव सधलता तथा श्रैतुसुक्यता उपन्यास में है और इसे जावतता देत हैं मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओ व विसंगतिषा का सफन चित्रण है रिक्त हुए आदमी की कथा व दाम्पत्य जीवन की उलभना का यह दस्तावेज है

श्री मणिमधुकर धाज बहुचर्चित उपन्यासकार है इनके प्रमुख उपन्यास सपेद भमन (प्रका 1971) में राजस्थान के पश्चिम क्षेत्र के रेगिस्तान के एक गाव की जिदगी का चित्रण है पक्षा की विगदरी (सन् 1980) पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्र के लोपो की मानसिकता अकाल और उमके नाम पर होने वाले घपला तथा गाव की दयनीय जिदगी को उजागर करता है श्री मणि म लेखन क्षमता है और उसे उहोने बराबर उजागर किया है

श्री शरद देवडा का 'दूटती इकाइया' में प्रेम का त्रिकोण है एक स्त्री और दो पुरुष या दो स्त्री और एक पुरुष का यह त्रिकोण अनेक उपन्यासों व कथाओ का आधार बनता है और उन उपन्यासों का तो है ही श्री सत्येन्द्र पारीश ने नारी की विपम स्थिति का चित्रण एक और दायरा में किया है इसमें सामाजिक खाखलेपन को भी उजागर किया गया है

सुमेरसिंह दर्शिया के आधी के अवशेष में मनोप्रियों का प्रस्तुतीकरण है डॉ नारायणदत्त श्रीमाली की 'एक डाल रजनीगवा की' में उच्च वर्ग की विलासिता और काम कु ठाओ का चित्रण है

मन्नू मडारी का उपयोग आपका बटी (1971 ई) हिन्दी का महत्वपूर्ण व पति पत्नी की आपसी टकराव व बच्चे की उपेक्षा का समस्यामूला उपयाम ह उपन्यास में बच्चे के कारण म कथा प्रस्तुत है मूम मत् दृष्टि सहजता, विम्वात्मकता और सम्प्रेषण की गमयता इस उपयाम म है जा इस महत्ता प्रदान करते है दूसरी कृति महाभाज (1979 ई) राजनीति के बेनुनियाना आचरण को प्रस्तुत करती ह यह भी ए उदृष्ट कृति है

लामीना शमान 'नय अकुर' और 'चटनी कलिया उभरत वाट' म नद चेतना का जादृत करन की बात कही ह य मिशारानयागी उपयाम ह

श्री जनादनराय नागर न शनराचाय के जीवन और उनके दर्शन का आधार बना कर 'शनराचाय' के नाम स बृहदार उपयास लिखना प्रारम्भ किया है इस महत्वाकांक्षी उपयाम का अभी एक सट प्रकाशित हुआ है उपयाम के इस भाग म कथा विस्तार, दार्शनिकता व भावुकता अधिन है इनके पहले के उपयास ह—बीचड का कमल व मानभूमि

श्री धनश्याम शलभ के उपयास—अधरी चादनी उजली छाव, अनिकन की पखुडिया फौलाद की मोमबत्ती म कविरन तथा भावुकता छापी हुई है परिणामत कृतिमता आ जाती ह प्रौढ लेखन यहा दृष्टिगत होता है

श्री शुभू पटवा क 'उम लिन' म पू जीयादी व्यवस्था के प्रति आक्रोश है और वग मधय की बात है करणीदान वारहट के कुहरा और निरणो मे एक शिक्षक की मानसिकता तथा सघपशील जीवन की कथा है कमर मवाडी मे 'वह एक' मे पारस्परिक प्रतिस्पर्धा का चित्रित किया है प्रकाश माधुरी का कुआरी सलीब, उल्लेखनीय कृति ह

श्री शरद देवडा का वापेन स्पीट के मसीहा एक बहुचर्चित उपयास है इसमे युवा पीढी की मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है उपयास म सामाजिक व मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों का सफल चित्रण किया है

इनके अतिरिक्त श्री उमेश शास्त्री मधु न माधवी तान आकाश पील प्ल, डॉ प्रेम भटनागर भ्रात जीवन वशीलाल यादव टूटा तारा, प्रहलाद शर्मा वातू की परते, प्रेमचन्द गोस्वामी मुवह का भूना, राधाशरण जोशी उलभन, हनु भारद्वाज का बनती बिगडती लकीरे, डा पुरपोत्तम आसापा का पप्पू आदि

उन्लेगनीय ह पप्पू मनोवचानिन शली युक्त चचित वृत्ति है श्री हबीब रूफी का एग चचित उपयास ह--प्रनायक इनकी विशिष्ट शनी व अभिव्यक्ति कीशल है

श्री पुरयोत्तम पोयल का उपयास और सूरज ढन गया है युवा कथानार श्री प्रफुन्न प्रभावर का उपयास गलत सदम (1980 ई) म आयातीत आधुनिकता और भारतीय माननिकता का सघप है समाज के द्वन्द्वात्मक रिश्तो की उजागर किया गया है राजेन्द्र भटनागर का 'एक अतहीन युद्ध' विशेष प्रभासित रही करता, कया विस्तार जहर है अशोक शुक्ल के सेवामीटर व प्राप्तेमर पुराण व्यंग प्रधान ह डॉ राजानन्द का कौन वह' मे मध्य विद्या र्गोय जीवन की त्रामदी है

राजस्थान के हिंदी उपयासकारा का प्रदेय चाह नगण्य नहीं हो फिर भी उपलब्धि का दगत हुए बहुत समृद्ध नहीं है

कहानी

राजस्थान म लोक कथा तथा वात साहित्य की एक मुदीघ परम्परा रही है लेकिन आधुनिक हिंदी कहानी की प्रथम उपलब्धि श्री चन्द्रघर शर्मा गुलेरी चचित 'उसन बहा था' (प्रकाशन सन् 1915) ह वस्तुत मह हिंदी की श्रेष्ठ कहानिया म अग्रणी ह इस एक कहानी न श्री गुलेरी को अमर कथाकार बना लिया

गुलरी जी के पश्चात् राजस्थान के सर्वाधिक समय कताकार है--रागेय राघव रागेय राघव की कहानिया म प्रगतिशील चिंतन व लेखकीय स्वातंत्र्य पर बल दिया गया है रागेय राघव का कथा लेखन विपुल मात्रा मे (लगभग 200 कहानियाँ) ह रागेय राघव की सर्वाधिक चचित व प्रशसित कहानी 'गदल' ह जिसमे नाटकीय कथानक व मातवीय मवेदना की सूक्ष्म अभिव्यक्ति है

राजस्थान के कहानी साहित्य की चचा के लिए प्रकाशित कहानिया ही आधार बन सजती है और वह भी गहानो सकलता के आधार पर ही चर्चा की जा सकती है कयाकि विभिन्न पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित प्रत्येक कहानी या कहानीकार का विवचन न ता संभव है और न प्रासंगिक ही इससे अनावश्यक विस्तार की संभावना भी है ध्यावमायिक पत्रिकाओ के अतिरिक्त राजस्थानी से प्रकाशित मधुमती, मधुमाधवी, लहर, मम्बाधन आदि पत्रिकाओ म समय समय पर कहानिया प्रकाशित होती रहती है इनके अतिरिक्त कहानिया के

सम्पादित प्रकाशित मकलन भी है यथा राजस्थान के कहानीकार भाग 1 (स डॉ रामचरण महेन्द्र तथा श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र) ये कथारूप (स चन्द्र) रेखाण (स कृष्ण जन सेवी) जगलपुरी का हेड मास्टर (स चौधरी मानसिंह) प्रस्थिति (स नान भारिल्ल व प्रेम सक्सेना) हम तुम और वह (स जगदीश माथुर कमल) एक टुकड़ा आकाश (प्रफुल्ल प्रभाकर) राजस्थान के कहानीकार भाग 2 (डॉ आलमशाह खान) आदि जो विवेचन में सहायक हो सकते हैं

गुलेरी जी तथा रामेय राघव के पश्चात् स्वगवासी कहानीकारों में आकारनाथ दिनकर व शम्भूदयाल सक्सेना प्रमुख हैं श्री ओशरनाथ दिनकर की कहानियाँ नाटकीयता भावुकता पूर्ण तथा आदर्शवादी हैं दिनकर की प्रमुख कहानियाँ समस्या और समाधान अपने अपने दायर, साभू का सगिन और वाराणसी लौट गया आदि विष्णु अम्बालाल जोशी के आचार्य कालक और मजदूरिन कवि का स्वप्न गुमटी वाला और पगली कथा संग्रह हैं ये भी भावुकता पूर्ण आदर्शवादी लेखन की अपनाये हुए हैं कहानी का कथ्य व शली पुराने ढंग की है

श्री शम्भूदयाल सक्सेना की कथा कृतियाँ लगभग 5-6 हैं कहानियाँ की विषय वस्तु समाज परिवार की है चरित्र में आत्म संघर्ष का कमी है भावुकता व आदर्श की बातें मिलती हैं भगिनी का भाग्य, धूपछाह, मानवता का पुजारी, एश्वय का त्याग आदि सकलनों के शीपक ही कहानियों की जानकारी दे देते हैं डा हेतु भारद्वाज इन लेखकों को 'प्रमाद स्कूल' का कहानीकार मानते हैं श्री सक्सेना की अधिकतर आदर्शवादी व भावुकता पूर्ण कहानियाँ हैं कहानी के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट नाम श्री जनादनराय नागर का है प्रेमचंद की शिष्य परम्परा में श्री नागर की चर्चा की जाती है इनकी कहानियाँ की शली और विषय वस्तु की अलग पहचान है जनादनराय नागर की कहानियों के दो सकल जनादन की कहानियाँ शीपक से प्रकाशित हैं अधिकतर कहानियों में आदर्श की परिकल्पना है और राष्ट्रीय भावना प्रधान है

कहानी क्षेत्र में भी यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र सर्वाधिक परिचित नाम है उनके 8-10 कथा संग्रह प्रकाशित हैं कहानियाँ में विषय की विविधता है तो रोचकता भी है राजस्थान के जन जीवन को उजागर चन्द्र की कहानियाँ करती हैं चन्द्र की कहानियों पर मुख्य आक्षेप पानो में अतद्ध द्व की कमी, नुसखेबाजी, कृत्रिम स्थितियों का निर्माण और अनुभूति की प्रामाणिकता को लेकर है

लेकिन कुछ भी हो आज श्री यादवेंद्र शर्मा चंद्र हिन्दी साहित्य का जाना पहचाना नाम है तथा पाठक श्रम की प्रशंसा ही करते हैं

श्री परदेशी ने लगभग 350 कहानियाँ लिखी हैं तथा 100 व लघुभंग अनुवाद की हैं श्री परदेशी मनोरंजन कथानक बनाने का प्रयत्न करते हैं तथा ऐतिहासिक पात्रों का खेतर उत्सुकता पैदा करते हैं लोकप्रिय कथाकार हैं

श्री सुमरसिंह दर्शिया व सफलन दो भाई प्यास की प्यास हैं इनकी कहानियों ने उन्मुख पर डी नवलविशार प्रचारात्मकता का आरोप लगाते हैं जो अधिकतर कहानियाँ मिलती हैं दलित एवं शोषित वर्ग का चित्रण कहानियों में मिलता है भाषा कला का पुरस्कार, ममता के द्वारा मार्मिक कहानियाँ हैं

मन्मथ भण्डारी हिन्दी के शीर्षक कहानीकारों में हैं मूल्यों के परिवर्तन में आय मध्य का तथा अपने परिवेश को ईमानदारी के साथ मन्मथ भण्डारी ने कहानियों में उजागर किया है अन्तर्द्वन्द्व भाव शक्ति सफल अभिव्यक्ति कहानियों की विशेषताएँ हैं अकेली क्षय, नशा यही सब है आदि चर्चित कहानियाँ हैं शचीन्द्र उपाध्याय के कहानी सफलन कापती सिद्धार रेखाएँ आदि प्रकाशित हैं ये प्रगतिशील परम्परा के रचनाकार हैं इनकी कहानियाँ एक विशेष दृष्टि लिए हुए हैं जगन्मोक्ष बोराली का कहानी सफलन इसके पर खुद नाम में 12 कहानियाँ हैं जो जीवनानुभव युक्त हैं डॉ० अलमशाह की कहानियों के दो सफलन प्रकाशित हैं पराधी प्यास का सफर व विराय की कोख एक और मोत, मनार आदि छः खान की चर्चित कहानियाँ हैं डॉ० खान की कहानियों के पात्र मध्य वर्गीय और निम्न वर्गीय क्षय व हैं तथा अपनी रचनाओं का सफर पूरा करते हैं भाषा शली उनकी अपनी अलग ही पहचान स्थापित करती है

डॉ० रणजीत की कहानियों का सफलन गर्म लोहा ठंडे हाथ प्रकाशित है इसमें कहानीकार बर्चस्व प्राप्त प्रबल है कहानियाँ राजनीतिक विचारधारा का स्पष्ट करती हैं

प्रेमचन्द गोस्वामी की कहानियों में गम्भीरता है लेकिन सस्ती भावुकता भी है एक वृत्त और मुस्कराहट कल की प्रमुख कहानी सफलता है धर्मेश शर्मा का कहानी सफलन मेर गहरा व लोग है इनकी कहानियों में ग्राम पास

के विरार विम्बा का प्रकटीकरण है और शिप म गीनता नहीं है श्री स्वयं प्रकाश की कहाँन्या म जीवन, चित्त व मूजन के प्रति आस्था भवती है रचना म ताजगी, तेवर व व्यंग्य ह और भाषा तराशी हुई है कहानी म निजी अनुभूतिया ह मुख्य कहानी मग्र ह माया और भा, मूरज इन तिकलगा, आसमा वसे वस

शुभू पन्था का कहानी संकलन गनरत्र का प्यात्, मम्मी एमी क्या बी की कहानिया उनकी तिकलिन तथा दृष्टि को प्रस्तुत करती है डॉ ट्यावृष्ण विजय की कहानिया आरणवादी भावनापूर्ण ह जीवन का स्पग मात्र मिलता है मनोहर वमा की कहानिया म गली की अपनी विशिष्टता है ता बध्य प्रस्तुतीकरण भी गभीरता म है पारिवारिक सामाजिक जीवन से सम्बद्ध इनकी कहानिया ह घाट का वाट, गानी माहिजा की शानी, पासा पलट गया आदि म व्यंग्य प्रधान ह

श्री ईश्वर चन्द्र क कहानी मकलन ग मरन का दुख छातर, अरर का बीनापन, वसम मुरान की आदि है श्री ईश्वर चन्द्र के कहानिया के पात्र मध्यम वर्ग स आय ह मध्यवर्गीय जीवन की घुटन, तप का य प्रकट करत हैं

राम जमवान राजान् अशाद आगेय, मणिमधुकर नगवनालाल ध्यास, वमर मराडी चन्द्रकाता वगड क्षमा चतुर्वेदी, अरनी रावट्स पुष्पलता वश्यप, श्रीमती पावती जाशी आदि की कहानिया आम आत्मी व सामाजिक परिवेश म जुडी हुई है मणिमधुकर ग तजी स अपना स्थान बना लिया है उनकी कहानिया पसन् की जाती है कहानिया मानव सम्बधा क अतविरोधा को प्रकट करती ह व सुख दुख की सार्भीकार ह परिधग को प्रस्तुत करन की कला मणि मधुकर म ह सुवमान, भरतमुनि क वात् बल, वारहमिषा आदि उनकी चचित कहानिया ह मणिमधुकर क पाम अनुभव का विस्तृत ससर है तो कहन की विशिष्ट शनी भी

हेतु भारद्वाज का तीन वमरा का मका, चीफ साट्र आ रह हैं तीवपारा क्या सनलन प्रकाशित है सामाजिक अतविरोध को प्रस्तुत करने तथा जीवन से जुडे हुए मवाला का उत्तर देन म इनकी कहानिया सहायक है इनकी कहानिया म मध्यम वर्ग का आम आदमी वातता है श्री वमर मराडी क कहानी मकलन राणनी की तलाश व लाशा का जगल है जिसम आम आदमी क उमर्नी मजवूरिया क सजीव चित्र ह

पानू खोलिया न गभीर तथा महत्वपूर्ण कहानिया के साथ चालू कहानिया भी लिखी है ऊध इनकी चर्चित प्रशंसित कहानी है सामाजिक परिवेश का कहानिया म प्रस्तुत किया है 'अश अश दश' हसन जमाल की युग परिवेश की चर्चित कहानिया है श्रीमती पावती जाशी का वह गुलाब, हरदशन सहगल का टेढ़े मुह वाला दिन, धमा चतुर्वेदी का सुवह डूबन स पढ़ने कहानी सक्लन उन्लेखनीय है

या गितान म ता बहुत माने नाम हैं जिनकी एनाधिक कहानिया प्रनाक्षित है लेकिन जब हम क्या ससार का विश्लषण करत है तो स्पष्ट होता है कि राजस्थान के अनेक कहानीकार ऐस ह जिहान अपनी पहचान अखिल भारतीय स्तर पर बना ली है गुलरी श्री रागय राधव के अलावा आज चर्चित नामा म सर्वश्री जनादनराय नार, यादवेन्द्र शर्मा चंद्र, सुमरसिंह देईया, मणिमधुकर, डा आलमशाह खान, डा हेतु भारद्वाज, स्वयप्रकाश, पानू खोलिया, कमर मेवाडी आदि प्रमुख है राजस्थान का कहानी लयन अपन परिवेश की गध लिए हुए आम आदमी के सघप व सजास का अभिव्यक्त करता है तथा मानव मूया के लिए प्रतिबद्ध है

गद्य काव्य

काव्य गुणों से युक्त गद्य को गद्य काव्य कहा गया है गद्य काव्य को अलग विधा के रूप म आजकल दशा जान लगा है लेकिन गद्य काव्य धावात्मक ललित निबध तथा अनुकाल कविता के मध्य की स्थिति प्रतीत होती है डॉ रामचरण महेन्द्र राजस्थान के गद्य कायकार (मखलन) की प्रस्तावना म लिखते हैं कि गद्य-काव्यकार भी मूलत कवि होता है पर वह छन्द पिगल इत्यादि क कृत्रिम नियंत्रण म न रह कर उमुक्त शली म हृदयगत अनुभूतियों को प्रकट करता है इस प्रकार गद्य काव्य भावात्मक अभिव्यक्ति है जो कोमल वाक्यों की धाराभा मे प्रवाहित होता है हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति प्रचुर कल्पना व रसाधारित गद्यात्मक रूप गद्य काव्य के अतगत माना है स्पष्टत इनमे भावपक्ष की प्रधानता है एक प्रकार म यह गद्य पद्य का समन्वित रूप है

राजस्थान म इस प्रकार के गद्यकार का सृजन भा प्रचुरता स हुआ है राजस्थान के आधुनिक हिंदी गद्य काव्य का प्रारंभ श्री हरिभाऊ उपाध्याय स माना जा सता है, श्री उपाध्याय जी न अनिक गद्यकाव्य 'त्यागभूमि' मासिक पत्रिका मे प्रनाक्षित हुए हैं गावीवाणी श्री हरिभाऊ उपाध्याय क गद्य गीत

भाव प्रधान व आधुनिकता युक्त है श्री भवरमल सिंघा की रचनाएँ माधुरी, जागरण, हंस आदि विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं इनका 'वेदना' (प्रकाशन 1937) प्रथम गद्यकाव्य संग्रह है आधुनिकता इनके गद्य गीतों में भी अभिन्न है

गद्यकाव्य पर द्वायावादी प्रभाव स्पष्ट परिलभित होता है रहस्यमय अज्ञात सत्ता से भावात्मक सम्बन्ध, अभिव्यक्ति अत्यन्त रूपता में अमीम चेतना की व्यापकता आदि प्रसंग गद्यगीता में मिलते हैं

गद्यकाव्य के क्षेत्र में नवाधिप चर्चित व महत्प्रसूत नाम श्रीमती निराला नंदिनी डालमिया का है उन्होंने गद्यकाव्य की दिशा ही बतलानी थी जीवन प्रेम सौन्दर्य व प्रकृति के रम्य चित्रण इनके गद्यकाव्य की विशिष्टता है इनके गीतों में प्रेम की पुनर्बसरसता कलात्मकता सर्वात्मकता और उदात्त भाव व्यक्त हैं श्रीमती डालमिया के अनेक गद्यगीत विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं इनके गद्यकाव्य संग्रह हैं—मौखिकमाल, शारदीया, दुपहरिया के पून, वशीरव उमन स्पन्दन चितन आदि विह्वल और वेदना, प्रेम और मिलन के इन गीतों में प्रतीक भावना आधुनिकता व शिल्प मौल्य प्रशंसनीय है

वेदनात दग्ध से प्रभावित शकुंतला कुमारी रेणु का गद्यकाव्य सक्लन 'उन्मुक्त' प्रकाशित है सीधे, सच्चे व सरल भाषाभाषार रणु के गद्यकाव्य में है

श्री शम्भूचाल सक्लन की समय लेखनी गद्यकाव्य में भी बनी और उनमें स्फुट गद्यगीत पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं श्री राममिहलया या सूर्यवरण पारीक वृत्त गद्यकाव्य संग्रह 'मधुमाता' प्रकाशित हुआ है इसका पद साहित्य विशिष्ट है

श्री विष्णु चम्वालाल जौशी के गद्यगीता का एक सक्लन सीधी रेणुएँ प्रकाशित है विष्णु दा की अनेक रचनाएँ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं इनकी भाव सन्नता उत्सवनीय है

श्री देवीलाल सामर के गद्यगीता में भारतीय मस्कृति व अध्यात्म की गूँज है ममस्पर्शी अभिव्यक्ति गद्यगीता में उपलब्ध है लेकिन श्री सामरजी या कोई सक्लन देखने में नहीं आया है

श्री जनार्दनराय नागर के गद्यगीतों का विषय आध्यात्मिक प्रेम, राष्ट्रीयता, राजनीतिक जागरण, घसीम सत्ता आदि रहा है इनका एक गद्यकाव्य सक्लन 'एक शान्त आलोक में प्रसन्न' राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित है श्री नागर गद्यकाव्य क्षेत्र में विशिष्ट पहचान रखते हैं ब्रिजलाल बियाणो का मार्मिक गद्यकाव्य है कल्पना कानन

श्री नरेन्द्र भानावत के गद्यगीता में जन दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है आध्यात्मिकता इन गीता में भी अधिक है डा भानावत ने सामाजिक धर्म्य को लेकर भी गद्यगीत लिखे हैं जो विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित है

श्री अमरसिंह का गद्यकाव्य संकलन तुतली बाणो स्वप्न शवरि, दिवाभास प्रकाशित है इनमें सामाजिक धर्म्य, अक्षय व जागरण आदि के गद्यगीत है भाषा व शब्द ध्यान प्रभावोत्पादक है

डा दयावृष्ण विजय के गद्यगीत भावपूर्ण व प्रभावोत्पादक है भारतीय दर्शन व सभृति निरूपण इनके काव्य में मिलता है

डा त्रिभुवन चतुर्वेदी के गद्यगीतों में प्रकृति का सौंदर्य तो है ही साथ ही भानव के दुख दद की व्यथा भी है सामाजिक व परिवेश को भी इन्होंने गद्य गीतों में चित्रित किया है इनके अतिरिक्त सर्वश्री भानुचंद्र गोस्वामी प्रसर, लक्ष्मीकुमारी चूडावत, राधश्याम कौशिक अजय चंचल, विशान शर्मा, राजेंद्र सक्सेना, दुर्गादेवा शर्मा, मंगल सक्सेना, कमलाकर, मनोहर वर्मा, बशीलाल यादव, उमानंद चतुर्वेदी, सत्येंद्र पारीक, डा रामचरण महेन्द्र आदि की रचनाएँ भी समय समय पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं हैं लेकिन अब गद्यकाव्य का सजन दृष्टिगत नहीं होता है राजस्थान के गद्यकाव्य की शीघ्र पतित में श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया श्री जनार्दनराय नागर श्री विष्णु अम्बालाल जोशी और श्री हरिभाऊ उपाध्याय के नाम दिए जा सकते हैं

नाटक

नाट्यकर्म व नाट्य लेखन को अलग अलग रचना प्रक्रिया है राजस्थान में नाटका का अभाव इतिहास है वर्तमान में नाट्य लेखन के सम्बंध में विचार करें तो विदित होता है कि राजस्थान में आधुनिक नाटक साहित्य अविज्ञान और कथा विधा की अपेक्षा कम परिमाण में उपलब्ध है नाटक लेखन

के क्षेत्र में गिन गिनाये नाम लिए जा सकते हैं और प्रकाशित नाटका की गणना अगुलिया पर की जा सकती है जहाँ तक विस्तार से विवेचन का सम्बन्ध है प्रवृत्ति, शिल्प रूप, विषयवस्तु आदि का लेजर ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं महा यह चचा अप्रामाणिक है

आधुनिक हिंदी नाटक साहित्य पर विचार करें राजस्थान के नाटककारों की पुरानी पीढ़ी में श्री शम्भूदयाल सक्सेना, श्री आकारनाथ दिनकर तथा श्री देवीलाल सामर प्रमुख हैं शम्भूदयाल सक्सेना के नाटका में आदर्शों, सांस्कृतिक मूल्यों और नवीन सामाजिक राजनीतिक पुनर्जागरण के प्रति प्रेरणा है बापू न कहा था, नहरू का बाद, विजया और वास्वी आदि में राजनीतिक चेतना की बात है तो सांस्कृतिक नव निमाण तथा आदर्शों के प्रति मोह चीकर धारिणी ग्राम माग, साधना पथ, नदरानी मग्न, पचवटा, विद्यापीठ आदि में है सांस्कृतिक व राजनीतिक मूल्य लिए ये नाटक हैं जिनमें नाटककार नाटक के तत्वा के प्रति भी सचेत हैं

श्री आकारनाथ दिनकर का भी अतीतकालीन आदर्शों के प्रति तीव्र मोह रहा है तथा यह उनके सभी नाटका में प्रकट है राजस्थान के परिवेश का सफलता के साथ चित्रण आकारनाथजी के नाटका में प्राप्त है हिंदी नाटक लेखन के क्षेत्र में दिनकर का योगदान महत्वपूर्ण है दिनकर के नाटक मुजदेव, भगवान बुद्धदेव पवनजय, विग्रहराज, विशालदेव, धारेश्वर भोज, मयूर फिर नाच उठे, जोहर ज्योति आदि प्रमुख हैं

देवीलाल सामर राजस्थान के लोकनाटका व लोक कलाकारों के प्रेरक रहे हैं सामर जी स्वयं नाटक लिखते थे और मंचन कराते थे राजस्थान में नाटको व लोककलाओं की महत्ता स्थापित करने में देवीलाल सामर का योगदान सराहनीय व महत्वपूर्ण है कठपुतली नाटक के क्षेत्र में अनेक प्रयोग सामरजी ने किए हैं दलित कथा महान कलिदान राजस्थान का भीष्म आदि महत्वपूर्ण नाटक लिखे हैं नाटका के कथानक महत्वपूर्ण व प्रेरक हैं सधियों आदि का उपयुक्त प्रयोग है नृत्य नाटिकाओं के सफल प्रयोग भी हैं भारतीय लोककला मंडल की स्थापना सामरजी की विशिष्ट देन है श्री देवीलाल सामर ने राजस्थान का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया उनके नाटक रंगमंच की दृष्टि से अनुकूल होते थे नाटक के आवश्यक तत्व, सधिया आदि अनिवाय गुण श्री सामर के नाटका में उपलब्ध हैं लोककथाओं व लोकगीतों पर आधारित अनेक नाटक इन्होंने लिखे और मंचित कराये थे एक समर्पित

फलाकार, नाट्यकर्मि, निर्देशक थे श्री जनादनराय नागर के नाटको मे सांस्कृतिक व आदर्श मूल्य हैं आचार्य चाणक्य, पतित का स्वर्ग, ऊदा हत्यारा आदि इनकी प्रमुख नाट्य कृतिया हैं

डॉ सरनामसिंह शर्मा अरुण कृष्ण साधना स्वर्ग पतन, तपस्विनी आदि एकाकी संग्रह हैं सुधीन्द्र जी का भी 'राम रहमान' एकाकी संग्रह प्रकाशित है जिसमें छ एकाकी है जवाला और ज्योति सामाजिक विचारधारा का प्रतीक है डॉ रामगोपाल शर्मा दिनेश के धरती का देवता, मोमनाथ, विजय पर्व, शांति के प्रहरी, द्रोण का शिल्प आदि नाटक एकाकी प्रसिद्ध हैं नाटको, एकाकिया मे शुगौन चेतना के स्वर है यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र के 'हम सब एक हैं' राष्ट्रीय चेतना युक्त रंगमंचीय एकाकी है और आन का दावेदार रेडियो रूपका का संग्रह है ताश का घर श्री चन्द्र की एक चर्चित नाट्य कृति है

भारत की सामयिक समस्याया व आदर्शवादी रूझान को लेकर लिखे गये नाटक एकाकी हैं सतरगिणी (गोविन्दलाल माथुर) अमर आत्माए, सस्कृति धरोहर सिंह सपूत, इन्सानियत जिंदाबाद, सिंह शावक (डॉ रामचरण महेन्द्र) धरती जागी, अमर सेनानी, (डॉ चन्द्रशेखर भट्ट) पुष्पाजनि, दहेज (विठ्ठलदास कोठारी) बिप से अमृत की ओर (डॉ नरेन्द्र भानावत) एकाकिनी (डॉ दयाकृष्ण विजय) आदि रेडियो नाटक नौ द्वारे का पीजरा महावीर सिंघल कृत है

सातवें और आठवें दशक के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं—हमोदुरला, मणि मधुकर, रिजवान जहीर उस्मान, राजेश रेड्डी, उमेश उपाध्याय, शिवराम शर्मा, डॉ राजानन्द, नन्दकिशोर आचार्य, स्वयंप्रकाश बट्टीप्रसाद पचोली आदि इन दशकों का नाटक मूलतः प्रतीकात्मक प्रस्तुति का है दरिन्दे एक और युद्ध (हमीदुल्ला) रस गंधर्व, खेला पोलमपुर, धुलबुल सराय हे भानमती (मणि मधुकर) नमस्कार आज शुक्रवार है (रिजवान जहीर उस्मान) वेपरवेद, सफाई चालू है (रमेश उपाध्याय) घर कद, फीनिक्स (स्वयं प्रकाश) इन नाटकों में धौद्विकता हावी है परिणामतः एक खास वर्ग तक वे सीमित हो गये मध्यवर्गीय समाज की परिस्थितियों, सत्रास, घुटन आदि को अभिव्यक्ति भी मिलती है उलभी आकृतियाँ, घर बंद, दूमरा पग, उत्तर उवशो अपना अपना दर्द (हमीदुल्ला) रंग रंग बहुरंग (स डॉ राजानन्द) आदि में सामाजिक समस्याएं व मूल्यों की टकराव है

नुक्कड नाटक की शली भी आठवे दशक में चर्चित हुईं जिनमें रमेश उपाध्याय का हरिजन दहन, शिवराम वर्मा का कूकडूकू, जनता पागल हो गई, विकल्प भवरा नील आदि हैं श्री भगल सक्सना राजस्थान के नाट्य ग्रान्प्लेन में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं लेकिन उनकी प्रकाशित नाट्य कृति देखने में नहीं आई है

इस प्रकार हम वर्तमान में राजस्थान के लब्धप्रसिद्ध नाटककारों की चर्चा करते हैं तो श्री हमीदुल्ला, श्री मणिमधुकर श्री शिवराम, श्री रमेश उपाध्याय, श्री आर जेड उस्मान से आगे ही नहीं बढ़ पाते हैं रंगमंच तथा नाट्य क्षेत्र में घनिष्ठ सम्बन्ध होना सिनेमा का प्रभाव तथा एन खास वय तक आज के नाटक का जुड़ा होना सम्भवतः नाटक के सीमित क्षेत्र का कारण हो सकता है साहित्य की यह महत्वपूर्ण प्रवृत्ति भी पल्लवित हो इस हेतु क्या किया जा सकता है यह विचारणीय है

निबन्ध आलोचना

राजस्थान में हिन्दी आलोचना की प्रगति विशेष उत्साहवर्द्धक नहीं है आलोचना के क्षेत्र में जो काम होना चाहिये वह दृष्टिगत नहीं होता है आखिर इस स्थिति का क्या कारण है या ऐसी निराशा की बात करना अनुचित है

‘आलोचना का अपना महत्त्व है आलोचना पर द्वितीय कोटि का काम दूसरी थाली से ग्रहण मौलिकताहीन, मजबूरी का साहित्य आदि के भ्रमभीर आक्षेप लगाये जाते हैं इस सम्बन्ध में अपने को चदाटीवा लगाने की बात भी नहीं जाती है लेकिन गभीरता से विचार करें तो ये सभी आक्षेप बेमानी हैं आलोचना को महत्ता स्वीकारनी होगी आलोचक का सजनात्मक मौलिक काम है वह कसौटी पर बस कर विभी रचना का मूल्यांकन करता है और उस आलोचना से रचनाकार असहमत होता है तब वह अपनी रचना की श्रेष्ठता के सन्दर्भ में आलोचक की प्रति आलोचना करने लग जाता है इसलिए आलोचना रचना का विशिष्ट काम करने का साहस बहुत कम रचनाकार करते हैं और जो भी यह आलोचना लेवन काय करते हैं उनमें से अधिकतर आलोचक रचना की प्रशंसा ही नहीं करते हैं अपितु उस रचना को श्रेष्ठ मान घोषित कर देते हैं यह स्थिति अधिक चिन्तनीय होती है

रचना का मूल्यांकन उसमें निहित मूल्यों, वृथ्व, शैली भावबोध व युग बोध को लेकर करना चाहिए न कि रचनाकार के व्यक्तित्व के आधार पर कृतिवार की अपेक्षा कृति का सम्यक मूल्यांकन होना चाहिये आलोचना का आधार कृति में उपलब्ध तत्व, मूल्यों की प्रामाणिकता आदि हो सकता है

राजस्थान में साहित्यिक आलोचना का प्रारंभ रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख' से जाना जा सकता है शिलीमुख आचार्य रामचंद्र शुक्ल के समकालीन थे और सामयिक साहित्यिक आलोचना के समयक में शिलीमुख साहित्य में जीवनादर्श को सहज होकर ध्यान के समर्थक हैं उन्होंने आरोपित आदर्शों का हमेशा विरोध किया है शिलीमुख ने आलोचना के क्षेत्र में निष्पक्षता से लेखन किया है प्रेमचंद, कबीर आदि पर इनकी आलोचनात्मक रचनाएँ सबविदित हैं जला और सौंदर्य और विजय प्रस्थानक द्वारा सम्पादित शिलीमुखी में इनकी आलोचना समीक्षा सबधी रचनाएँ हैं चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने भी निबंध तथा आलोचनात्मक रचनाएँ की हैं चंद्रधर शर्मा गुलेरी व्यक्तित्व एवं वृत्तित्व (स० डॉ० प्रकाश आतुर) दृष्टव्य है

शिलीमुख के साथ सूयकरण पारीक का नाम भी आलोचना क्षेत्र में महत्वपूर्ण है सूयकरण पारीक ने राजस्थानी और हिंदी दोनों में निबंध तथा आलोचनात्मक रचनाएँ प्रस्तुत की हैं राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'सूयकरण पारीक निबंधावली' (स० डॉ० मदन केवलिदा) में पारीकजी के विशिष्ट हिन्दी निबंध संग्रहित हैं

वटुप्रतिभा सम्पन्न डॉ० सुधींद्र ने आलोचना क्षेत्र में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है हिन्दी कविता का प्रातिगुग में हिन्दी काव्यधारा का विशिष्ट विवेचन किया है हिन्दी कविता में युगंतर का सुधींद्र की दूसरी चर्चित आलोचना कृति है

श्री मोहनकृष्ण बोहरा विश्वविद्यालयी आलोचना का प्रारंभ प्रो० नरोत्तम दास स्वामी से मानते हैं मध्ययुगीन कविता और ललकों पर स्वामीजी ने टीका आलोचनाएँ लिखी हैं रासो परम्परा और पञ्जीराज रासो, मूर समीक्षा, कबीरदास, मोरों मन्थविनी, बेलि की टीका आदि चर्चित रचनाएँ हैं विश्वविद्यालयीय आलोचकों में डॉ० सोमनाथ गुप्त भी हैं आलोचना के सिद्धांत हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास डॉ० गुप्त की महत्वपूर्ण चर्चित कृतियाँ हैं जो एक विवेचन प्रस्तुत करती हैं

डा भोलाशकर व्यास आलोचना क्षेत्र के अधिकारी विद्वान हैं हिन्दीदश रूपक, ध्वनि सम्प्रदाय और उसके सिद्धांत, भारतीय साहित्य की रूपरेखा आदि इनकी शास्त्रीय ढंग की आलोचना कृतियां हैं

डा कन्हैमालाल सहल की समीक्षाजलि, समीक्षायण, प्रारंभिक आलोचनात्मक कृतियां हैं डा सहल समन्वयवादी आलोचक रहे ह अनुसंधान और आलोचना डा सहल की चर्चित कृति ह डा सहल की कठिनाई यह है कि ये विवेचना मात्र करते हैं निष्कर्षों की बात ही नहीं करते हैं

डा सरनामसिंह शर्मा अरूण ने कबीर कृतित्व एवं सिद्धान्त में कबीर पर विशद प्रकाश डाला ह इसी प्रकार डा रामचरण महेंद्र का रूझान हिंदी एकांकी नाटकों की आलोचना की आर अधिक रहा डा महेंद्र की कृति हिन्दी एकांकी उत्भव और विकास में हिन्दी एकांकियों का विशद मवर्षण है

डा जगदीश शर्मा कनक ने मनोविज्ञान तथा सौंदर्य शास्त्रीय दृष्टिकोण से आलोचनाएँ लिखी हैं कामायनी का प्रतिपाद्य इस दृष्टि से मनन योग्य है इनकी सद्य प्रकाशित कृति साहित्य और कला की पहचान है उसमें आलोचनात्मक निद्र य ह

डा सूर्यप्रसाद दीक्षित ने छायावादी कविओं त्रिशंकर पंत, निराला, प्रभाकर, महादेवी पर सामग्री प्रस्तुत की है

डा रामगोपाल शर्मा दिनश ने आलोचना के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया ह हिन्दी शिव काव्य, हिन्दी काव्य में नियति, कामायनी का नया अन्वेषण आदि में डा दिनेश ने गम्भीरतापूर्वक भारगभिन विवेचना प्रस्तुत की है

डा रामानन्द तिवारी भारतीय नन्दन कवि और दार्शनिक हैं मोक्षकृतिक मूल्या के प्रति चिन्ता तथा दार्शनिकता डा तिवारी की आलोचनात्मक रचनाओं में भी बराबर लक्षित होती है दार्शनिक पृष्ठभूमि में साहित्य के स्वरूप का संझागितिक चिन्तन है डा तिवारी के लेखन में दोहरापन अधिक मिलता है सत्य शिवं सुन्दरम्, अभिनव रस भीमामा आदि डा तिवारी की महत्वपूर्ण कृतियां हैं

मनोवैज्ञानिक आलोचना क्षेत्र में डा देवराज उपाध्याय का विभिन्न रथान है रोमांटिक साहित्य शास्त्र, आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनो-

विज्ञान, रागेय राधव के उपयोग मेरी मायताए आदि आपकी महत्वपूर्ण कृतिया हैं जिनमे मनोविश्लेषण, आलोचना सिद्धांत तथा सामग्री उपलब्ध है इसके अतिरिक्त आलोचना वैदुष्य और अनुसंधान, ऐतिहासिक उपयोग, सापेक्षतावादी आलोचना आदि महत्वपूर्ण कृतिया हैं डा उपन्याय ने चिंता में नये आयाम प्रस्तुत किए हैं

प्राचीन भारतीय दर्शन और समाज व्यवस्था का गहन चिंतन तथा युगानुबूल लेखन की बात डॉ रागेय राधव की कृतियों में भी है डा रागेय राधव असाधारण प्रतिभा सम्पन्न लेखक थे भारतीय परम्परा और इतिहास, भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका उनकी उल्लेखनीय कृतिया हैं

डॉ विश्वभरनाथ उपाध्याय उन प्रखर आलोचकों में हैं जो भारतीय प्राचीन साहित्य की युगीन परिवेश में वैचारिक आग्रह व दृढात्मक विश्लेषण के साथ प्रस्तुत करते हैं इनकी आलोचना में वैचारिक प्रतिबद्धता अधिक मिलती है

हिन्दी लेखकों में अपना विशिष्ट स्थान बनाने वाले डॉ नवलकिशोर मानववादी दृष्टिकोण के पक्षधर हैं डा नवलकिशोर की आलोचनाओं में मानववादी स्वर सबसे मिलेगा ये मानववाद को दार्शनिक और साहित्यिक रूपा में विवेचन करते हैं डॉ नवलकिशोर की आलोचनाओं में वैचारिक चिंतन व बौद्धिकता प्रबल हो जाती है कृति व मूल्यांकन में डा नवलकिशोर निमग्न हैं लेखक से लेखन की अधिक चिंता इन्हें बराबर सताती है मानववाद और साहित्य, कृति और सद्म, आधुनिक हिन्दी उपयोग और मानवीय अथवत्ता आदि इनकी चर्चित कृतिया हैं डा नवलकिशोर चिन्ता के शीर्ष आलोचकों में हैं

डॉ कृष्णकुमार शर्मा (चर्चित नाम डॉ क के शर्मा) शैली वैधानिक आलोचना के अधिकारी विद्वान हैं डॉ शर्मा ने आलोचना का नैतिक विधान की दृष्टि से देखा है आलोचना में क्या वस्तु शिथिल आदि का प्रमुखता देने के पक्ष में डॉ शर्मा उसमें मृत्यु की बात का बराबर ख्यान करते हैं शैली विधान की रूपरेखा सिद्धि और परम्परा, धर्मनिष्ठता का काव्यशास्त्रीय सौन्दर्य शास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक अध्ययन, शैली वैधानिक आलोचना का प्रतिष्ठित आदि प्रशंसित कृतिया हैं

डा महावीर दाधीच अप्रतिबद्ध आलोचना में हैं जो कृति की कृति की दृष्टि से देखते हैं आधुनिकता और भारतीय परम्परा में विचारोत्तेजक निबन्ध है अस्तित्ववाद भी चर्चित कृति है

डा नन्दकिशोर आचाय न बड़ी तेजी से प्रखर आलोचनात्मक अपना स्थान बना लिया है सहजता सुचिंतित विश्लेषण और आलाप्य विषय के प्रति पूर्ण गम्भीरता और ईमानदारी के आचाय पक्षधर हैं व गम्भीर आलोचनाएँ निखल मधे दत्त हैं अन्वेष की काव्य निर्तीपाएँ एक प्रमुख कृति है

राजस्थान के हिन्दी कवियाँ पर गम्भीरता सं चिन्तन लेखन व विवेचन डा प्रकाश आतुर की कृति राजस्थान की हिन्दी कविता में है डा आतुर कवि है लेकिन साथ ही सफ़्त आलोचना भी उनकी आलोचना दृष्टि काव्य का अतजगत है श्री नन्द चतुर्वेदी कवि के साथ साथ आलोचक भी हैं उनका छायावादी कवि तथा समाजवादी चिन्तन आलोचना पर हावी नहीं होता है अपितु वे रचना व अतजगत की गम्भीरता स दत्त परखत हैं सुजन के धर्म तथा मूल्या व प्रति उनका बराबर आग्रह है श्री सुरेन्द्र उपाध्याय की आलोचना का क्षेत्र बर्तनी रहा है

प्रो. घनश्याम शलभ अप्रतिबद्ध आलोचक हैं और कृति के सी दर्य के पक्षधर वस्तुमूली तटस्थ लेखन शलभ दा ने किया है सृष्टि की दृष्टि, मवना और सौन्दर्यबाध आदि महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं डा रमाकांत शर्मा की एक आलोचना कृति कविताओं के बीच में सद्य प्रकाशित हुई है जिसमें शमसेर, मुक्तिबोध नामाजुन आदि महत्वपूर्ण कवियाँ की कविताओं को समझ व विवेचन करने का प्रयास है इसी प्रकार डा भेरूलाल गगन न आज की हिन्दी कहानी पर सफलता पूर्वक लिखा है और उनकी आलोचना कृति प्रकाशित है

अत में यह विचारणीय है कि राजस्थान में हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में अधिक गम्भीरता से कार्य अपेक्षित है शिनीमूल, रागेधराधव मूयकरण पारीक की रहने दें तो वर्तमान में आलोचना क्षेत्र में महत्वपूर्ण चर्चित नाम बहुत कम हैं और ले देखें डा नवलकिशोर डा विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, डा के के शर्मा, नन्दकिशोर आचाय और वस

बाल साहित्य - बाल साहित्य की पहचान बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक के बाद बन सकी है वस्तुतः हिन्दी का बाल साहित्य 40 वर्षों से अधिक प्राचीन नहीं है किन्तु भी अग्रिम भारतीय स्तर पर बनने के लिए

घट्टत लिखा जा रहा है यह यह प्रश्न विचारणीय है कि परिमाण की दृष्टि से लिखा जा रहा बाल साहित्य गुणवत्ता की दृष्टि से क्या है ? यह सही है कि बाल साहित्य की दिशा में राजस्थान में गिने चुने कुछ ही लेखकों के नाम सामने आ सकते हैं और इस क्षेत्र में भी अभी उल्लेखनीय कार्य करने की आवश्यकता है

बाल साहित्य का तात्पर्य बालकों के लिए लिखा गया साहित्य है और बालकों में शिशु और किशोर दोनों वर्ग सम्मिलित है

राजस्थान में बाल साहित्य के क्षेत्र में सीमित नाम हैं श्री शम्भूदयाल सक्सेना की ऋषिया की कहानियाँ, दवताओं की कहानियाँ, श्री शंकर सहाय सक्सेना की वीरता की कहानियाँ, डॉ रामचरण महेंद्र कृत धर्म आत्माएँ किशोर वर्ग के बालकों के लिए हैं मनोहर प्रभाकर के पप्पू के गीत और इन्द्र धनुष प्रकाशित हैं जो शिशु व किशोर वर्ग के लिए उपयुक्त हैं श्री यादवेंद्र शर्मा चंद्र की कृति धूँठी आन प्रकाशित है

राजस्थान के बाल साहित्य के क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चित नाम हैं श्री मनोहर वर्मा तथा श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूडावत का श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूडावत का लेखन काम भूलतः राजस्थानी में है उनकी पुस्तक टावरा की घाता राजस्थानी में है श्री मनोहर वर्मा हिन्दी के प्रख्यात बाल साहित्य के सजक हैं श्री वर्मा इस क्षेत्र में निरंतर सज्जनरत हैं उनकी चर्चित प्रकाशित कृतियाँ हैं—वचन का मोल हम सब एक हैं, भुलकण्ड विनी डॉ चम्पन और भचनू, जीवन निर्माण की कहानियाँ शरीर के नौ रत्न आदि

श्री हमीदुल्ला न बाल साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कृति दी है—जीनेगे हिम्मत वाले यह पुरस्कृत कृति है तथा बाल मुनभ जिनापा की पूति हतु श्रेष्ठ कहानियाँ संग्रहित हैं इनकी अन्य उल्लेखनीय कृति है हरियल तोता इनकी बाल साहित्य की अन्य कृतियाँ भी प्रकाशित हैं

डा हरीश के नौनिहालो के गीत, उमानन्दन शतुर्वेदों की नट मुन की चम्बल यात्रा, शाता गुप्ता की भद्रमुक्त नगर डॉ पुरपोत्तम आमोपा कृत भैम का भडा, पौराणिक गाथाएँ आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं, सोमू की गर उडन तस्तरों से भदन वैष्णव द्वारा लिखित किशोर वर्ग के बालक हेतु वैष्णव उपवास है इसी प्रकार चम्पालान रावा की कृति मोहन के महात्मा आदि

प्रमुग बाल साहित्य की कृतियां हूँ—दृग विद्या म आय कृतियार हूँ—डॉ मनाहर शमा, भगवती प्रसाद गीतम, बामुदेव चतुर्वेदी, श्री नदन चतुर्वेदी आदि

यह दुभाग्यपूर्ण है कि राजस्थान से बालका के लिए एन भी पत्रिका प्रकाशित नहीं जाती है

हास्य, व्यंग्य, रेखाचित्र, सस्मरण, जीवनी आदि

हास्य और व्यंग्य भी साहित्य की महत्वपूर्ण विधाएँ हैं विद्वान हास्य और व्यंग्य को एक साथ लेते हैं लेकिन दाना म स्पष्ट अन्तर है हास्य निमल मन का स्फूर्त प्रवाह है और हास्य के द्वारा मन सहज और स्वच्छ होता है हसना और हसना सहज नहीं है और आज के द्रम वपम्य और सन्नति के युग म हास्य की आवश्यकता है जो मानव का मानव के समीप रखे उसे सहज किए रखे हास्य म सहजता है ता व्यंग्य म तीक्ष्णता व्यंग्य करता मनुष्य का सहज स्वभाव है लेकिन व्यंग्य लगन बढ़ा कठिन काम है व्यंग्य सदा सादृश्य होता है और उपहास व द्वारा ताड़ना देना है उसम तीक्ष्ण कटुता और गभीर चमत्कार होता है जब कोई बात सहज व स प्रभावित नहीं करती है तब व्यंग्य ही वह सबन शस्त्र है जो ममभेदी होता है आज द्रम आर्थिक सन्नति व समय म जब मानव के दुखदद व रिश्ता को द्वि-द्वि-जीवन म भुलाया जा रहा है व्यंग्य ही सशक्त व धारदार हथियार है जो सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियां म सही समय पर अचूक प्रहार करता है सबन्नामा की मच्चाई और नश्यत का पनापन व्यंग्य की विशिष्टता है टंगी ऊगली से घी निकालना ही इसकी क्षीप्र प्रहार गति है

हास्य और व्यंग्य की दृष्टि से राजस्थान ही नहीं अतिन भारतीय स्तर पर बहुत कम कार्य हुआ है राजस्थान म तो अत्यल्प ही रचना कम हुआ है और जा लिया गया है वह भी हास्य की अपेक्षा व्यंग्य अधिक है दाना का एक ही खात म डाला जाता रहा है यह सजन कम भी विभिन्न पत्र पत्रिकाओं मे ही अतिन प्रकाशित हुआ है मिश्रीताल जन तरंगित हास्य व्यंग्य के क्षेत्र म उल्लेखनीय नाम है इनकी अचिंत कृतियां व्यंग्य सतसई, चुटीले चुटकुल पुनभडिया, अनस मियाँ आदि है

डॉ पुरपात्तम आसोपा का सजय उवाच श्री अशोक शुक्ल की प्रोफसर पुगण, मेरा पत्नीसवा ज म दिन हडताल, हरिकथा महत्वपूर्ण कृतियां हैं मेरा पत्नीसवा ज म दिन राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत कृति है

बुद्धिप्रदाश पारीक, विश्वनाथ विमलेश आदि के काव्य में हास्य और ध्वंग का पुट उपलब्ध है इसी तरह श्री लक्ष्मीचन्द चितारा की व्यंग्य की स्पुट रचनाएँ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं

यत्मान व्यंग्यकारों में श्री मालीराम शर्मा, डा जियकुमार शर्मा, श्री पद्मवत कोठारी, श्री भानु कुशवाहा, पुष्पोत्तम ग्रामोपा, अशोक शुक्ल, डा मन्मथ बेवेलिया, धाराज चौधरी, डा प्रेमचन्द गोस्वामी, डा यशमोपाल आदि प्रमुख हैं श्री निरंजननाथ आचार्य एक सम्पन्न रचनाकार थे उनके व्यंग्य पर भार प्रहारक हैं राजनीति व सामाजिक जीवन की विसंगतियाँ को उन्होंने उजागर किया है राजनीति की घपकी में उनका पत्रपत्र व्यंग्य रचनाएँ मिलती हैं श्री यशवत कोठारी की कुर्सी मूत्र, पमपा मूत्र और हिंदी की आतिरी किताय, डा मंजुगुप्ता की बेनबाय मर्य, श्री जुगमदिर तायल का बिस्ता पांचवे दरवेश का धनराज चौधरी का गीतम बुद्ध और दुबो आरमा, डा प्रमचन्द गोस्वामी का कुत्ते भौंक रहे हैं आदि चर्चित मकलन हैं

दरमसल यत्मान गताओं की डा सम्पन्न विधाओं में जो काय होना चाहिए वह परिलक्षित नहीं होना है उद्धू में जिया हुआ सहज हास्य और प्रहारक व्यंग्य हिन्दी में विशेषतः राजस्थान के हिन्दी साहित्य में अभी उपलब्ध नहीं है

यही स्थिति साहित्य, इतिहास लघुन स्मरण, रेखाचित्र जीवनी, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज आदि की है किमी भौतिक वस्तु व्यक्ति या स्थान के सन्दर्भ लक्षण का आस्थीयता पूर्ण विवेचन स्मरण में आयेगा जिममें स्मृति का महत्व है स्मरण में रचनाकार की मानसिकता मयुक्त हो जाती है जबकि रेखाचित्र शब्दा का चित्र है शब्दा का ऐसा चित्रण जो किमी व्यक्ति विशेष के चित्र को प्रकट कर दे रेखाचित्र में आभगा य जीवनी स प्रलग हाने यात्राओं का ललित गथात्मक विवरण यात्रावृत्त में सम्मिलित किया जा सकता है य सभी विशिष्ट विधाएँ हैं इन विविध विधाओं में अनेक रचनाकारों ने समय समय पर रचनाएँ की हैं किम प्रमुख हैं श्री शम्भूदयाल सक्सना, हरिभाऊ उपाध्याय, सूर्यवरण पारीक निरंजननाथ आचार्य नावरमदन शर्मा, देवीलाल सामर, अमरसिंह चतुर्वेदी, राजद्रगणर भट्ट, जवाहिरलाल जन, कपूर चन्द कुलिश, सावित्री रावा, जगदीश बोरा आदि

श्री भावरमल शर्मा सुप्रसिद्ध पत्रकार, सम्पादक थे उन्होंने स्मरण य जीवनी लेखन का महत्वपूर्ण काय भी किया है अमर शहीद श्री गणेश

शंकर विद्यार्थी भारतीय देश भरने की कारावाम की कहानी, राजस्थान और नेहरू परिवार, तिलक गाथा, अरविन्द चरित आदि पंडित जी का उल्लेखनीय कृतियाँ हैं श्री शंकर सहाय सभसना की महत्वपूर्ण चर्चित प्रशंसित कृति पथिक (विजयसिंह पथिक) की जीवनी ह श्री हरिभाऊ उपाध्याय न युगधर्म व स्वतंत्रता की ओर कृतियाँ म सम्मरण ललित निबंध व रिपोर्ताज का सम्मिश्रण कर दिया ह राजेंद्रशंकर भट्ट की सुभाषचंद्र बाबू महाराणा प्रताप सवाई जयसिंह जीवनियाँ हैं ता कश्मीर चित्रण शब्द चित्र है कश्मीर चित्रण राज्य अवादमी से पुरस्कृत कृति है जवाहरि जन की दिल्ली म दिल्ली तक यात्रा वस्तु है विभिन्न पत्र पत्रिकाओं म विद्वानों क वृत्तान्त सम्मरण रखाचिण रिपोर्ताज प्रकाशित हात रहत ह और उनके आधार पर विज्ञेयण करत कटित है

लोक साहित्य

साहित्य क साधनोक विशेषण लगाकर इसका पाथक्य प्रकट किया गया है लोक साहित्य म मानव हृदय की सरस व सरल अभिध्ववित सथाविक पाई जाती है यह साधन चेतना स निर्मित साहित्य है और इसका विकास मानव मन की अतमुखी प्रवृत्तियों से हुआ है इसमें लोककथा, लोकगीत, लोकनाट्य आदि सम्मिलित है कहा जा सकता है कि यह आत्मा का साहित्य है मौखिक परम्परा म प्रचलित साहित्य लोक साहित्य की परिधि मे आता है

समाज साक्षेप लोक साहित्य के अध्ययन अनुशीलन, संग्रह व संरक्षण का कार्य भी इन दिनों राजस्थान मे हुआ है तथा विद्वानों ने अपने अध्ययन क्रम म सम्मिलित किया है मुशी देवीप्रसाद कविराजा मुरारीदान, रामकरण आसोपा मयकरण पारीक, नरोत्तमदास स्वामी ठाकुर रामसिंह आदि ने लोक साहित्य के क्षेत्र म महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है तथा एक भाग प्रशस्त किया है मुसी देवीप्रसाद का इस क्षेत्र मे सकलनात्मक व अध्ययनात्मक कार्य महत्वपूर्ण है इस सकलनात्मक कार्य की अनेक विद्वानों ने जारी रखा

प्रादेशिक लोकगीतों के सकलन का कार्य खेताराम मानी, सोभासिंह शेखावत मदनलाल वैश्य, जगदीश सिंह गहलात आदि ने किया श्री विश्वेश्वर नाथ रेड्डी का लोक साहित्य के अध्ययन की दिशा म महत्वपूर्ण योगदान है उनका सांस्कृतिक अध्ययन विश्लेषण परक है राजा भोज तथा ऋग्वेद

का सामाजिक सांस्कृतिक मार पुस्तकों के अनिर्दिष्ट क्षेत्र अनेक नियम इन विधा में प्रकाशित हैं

दोहानर के सूर्यचरम वारसेठ ठाकुर रामनिहलतार तथा नरोत्तमदाम स्वामी की प्रदी ने लोक साहित्य अनुशीलन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किया है इन्होंने 230 लोकगीतों का संग्रहण सम्पादन तथा विवेचन किया है इनके अनिर्दिष्ट श्री विद्याधर मास्त्री डा. दण्णथ शर्मा अग्रचन्द नाहटा नवम्बान नाहटा, मुरलीधर व्याम पुरुषोत्तम स्वामी, डा. मनोहर शर्मा, दोनाराय मंत्री श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूडावत गोविन्द अग्रवाल, चन्द्रदान चारण, राजत सारस्वत डॉ. र. हैषानाथ सहज, विजयदा देवा, कोमल बोठारी गोडाराम प्रसाद डॉ. मन्वद, पनराम गौड, श्रीलाल मिश्र जिनविजय, जगदीशप्रसाद माथुर मनोहर प्रसाद देवीलाल तामर सुमनश जोशा डा. कट्टेयानन्द शर्मा डा. नरद भानाजत डा. महेंद्र भानाजत सौभाग्यसिंह शेखावत, डॉ. अजमोहन जावलिया दीनदयाल शोभा सत्यनारायण स्वामी आदि का उल्लेखनीय कार्य लोक साहित्य के क्षेत्र में है इन्होंने अनेक अपने ढंग से लोकगीत, लोकनृत्य लोकानुसृजन लोककला आदि विषयों पर शोध ग्रन्थ तथा निबंध लेखन किया है साथ ही लोक साहित्य संग्रहण का कार्य भी किया है

डॉ. कट्टेयानाथ महज ने पिताजी को सांस्कृतिक षड् बनाकर इस लोक साहित्य के क्षेत्र में अपना विनिष्ट योगदान दिया है

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूडावत का लोक साहित्य के अध्ययन संग्रहण सम्पादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान है इनकी विभिन्न पुस्तकें लोक साहित्य विषयक प्रकाशित हैं जिसमें बगडावन महा गाथा, भूमल हुकारो दो सा आदि प्रमुख हैं श्री भावरमल्ल शर्मा ने खेडी च जयपुर में रहकर इस लोक साहित्य के संस्कृति की बहुमूल्य सेवा की है श्री सीताराम लालस का योगदान भी उल्लेखनीय है

श्री मुरलीधर व्याम तथा श्री मोहनलाल पुरोहित ने विभिन्न लोककथाओं के हिन्दा रूपांतर प्रस्तुत किए हैं विजयदान देवा तथा कोमल बोठारी कोरदा में लोकसाहित्य संरक्षण प्रकाशन में सन्तुष्ट हैं राजस्थानी वाता का महत्वपूर्ण कार्य विजयदान देवा ने किया है राजस्थान के लोक संगीत, राजस्थानी लोकनृत्य, राजस्थानी लोकनृत्य, राजस्थान के लोकानुसृजन, लोक कला निबंधावली, राजस्थानी लोकजीवन आदि भारतीय लोककला मंडल से

प्रनाशित पुस्तकें हैं जो देवीलान सामर व डॉ महेन्द्र मानावत के अथक प्रयासों से तैयार हुई हैं लोक साहित्य के क्षेत्र में चुरू में सुबोध अग्रवाल व गोविन्द अग्रवाल प्रयत्नरत हैं

लोक साहित्य के अध्ययन, श्रुशीलन व सक्लन की दृष्टि से विभिन्न संस्थानों का योगदान भी उल्लेखनीय है इनमें प्रमुख हैं भारतीय लोककला मण्डल (उदयपुर) रूपायन संस्थान (बाहदा), साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ (उदयपुर) भारतीय विद्या मंदिर शाव प्रतिष्ठान (बीकानेर), शाहू ल राजस्थानी रिसर्च इस्टीट्यूट, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान (जाधपुर), हाडोती शाव प्रतिष्ठान (काटा) आदि

महू भारत की शोध पत्रिका, मीरा राजस्थान गारती, मरवाणी, वरना, लोक साहित्य लोककला रंगायन विश्वम्भरा परम्परा आदि प्रमुख पत्रिकायां का उल्लेखनीय योगदान भी इस क्षेत्र में रहा है

राजस्थान में संस्कृति व राष्ट्रीय विद्या की दृष्टि से लोक साहित्य के क्षेत्र में जा रही है वह मह वपूर्ण है

साहित्यिक पत्रिकाएँ

साहित्यिक जागृति उत्पन्न करने, जनन व पाठन के मध्य जीवन सम्पर्क स्थापित करन तथा साहित्यिका को उपयुक्त मक दने में साहित्यिक पत्रिकायां का योगदान महत्वपूर्ण होता है राजस्थान का साहित्यिक पत्रिकायां का सर्वोत्थान करें ता विन्ति होता है कि राज्य की प्रथम साहित्यिक पत्रिका सन् 1881 में नाथद्वारा से नादनाथ विष्णुनाथ पट्या व मम्बाना में हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और माहन चन्द्रिका व नाम में प्रारंभ हुई थी मार कुछ समय बाद इसका प्रकाशन बन्द हा गया तन्ति प्रथम साहित्यिक पत्रिका होने का श्रेय अनी तर्फ इसी पत्रिका का है

स्वतंत्रता पूर्व राजस्थान की उल्लेखनीय साहित्यिक पत्रिकायां थी— भारत मातण्ड (नाथपुर, प्र 1898), ममानाचर (जयपुर, सन् 1902), भारत सर्वेश्व (सन् 1905), विद्या भान्दर (भातराणाहन, सन् 1907) निबन्धमाता (भरतपुर 1915 ई), मीरन (भातराणाहन 1920 ई), रसाय न्दि (भरतपुर, 1928 ई), प्रकाश (जयपुर, 1939 ई) नावाता (नाथ-

पुर, 1940 ई), हितैषी (जयपुर, 1940 ई), घराबलो (अलवर, 1944 ई), आई बहिन (जयपुर, 1946 ई), राजस्थान भारती (बीकानेर 1946 ई) चानी (जयपुर, 1946 ई), शोध पत्रिका (उदयपुर, 1947 ई), वामना (काटा, 1947 ई), माणवाडी (जोधपुर, 1947 ई)

स्वतंत्रता के पश्चात् साहित्यिक पत्रिकाओं में मुख्य हैं—भरना (जोधपुर), कसाधर (पाली), राष्ट्रभाषा (जयपुर), लहर (जोधपुर), राष्ट्रवाणी (अजमेर), मिलकानी (जोधपुर), भारत-दु (कोटा), सातिका (भरतपुर), विकास (काटा), विजयी (जयपुर), साहित्यिक प्रवाह (जोधपुर) ज्योति (अजमेर), प्रेरणा (जोधपुर), मरुभारती (पिपानी), नदिनिर्माण (जोधपुर), राजस्थान साहित्य (उदयपुर), जामना (अजमेर), परम्परा (जोधपुर), निष्ठा (जयपुर), समीक्षा (अलवर), ज्ञेपालिका (जयपुर), कविता (अलवर), वानायन (बीकानेर), सोमात (मुकुन्दगढ़), साहित्यिकी (अलवर), समितिवाणी (भरतपुर), शांति (अलवर), साहित्य सरिता (बीकानेर), धनात्म (जयपुर), भारतीय चिंतन (भरतपुर), अनुभव (जयपुर), सम्प्रेषण (जयपुर) हाडोती वाणी (कोटा), विदु (उदयपुर), लहर (अजमेर), सम्बोधन (काकराणी), मधुमती (उदयपुर), चरदा (विसाऊ), विश्वम्भरा (बीकानेर) मधुमाधवी (जयपुर), धरा (जयपुर), अन्ध (जयपुर) लोकसाहित्य (जोधपुर) अ वपगा (उदयपुर) शोधपत्रिका (उदयपुर), कथालोक (जयपुर) आदि

आज वित्तीय मरुत आदि के पत्रस्वरूप अधिमान्तर परिमाण वृद्ध हो गई हैं और कुछ अधिमित प्रकाशित हो रही हैं आज विनम्व म ही सही प्रकाशित होने वाली प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाएँ हैं—विश्वम्भरा (त्रैमासिक) बीकानेर, चरदा (त्रैमासिक) विसाऊ, शोध पत्रिका (त्रैमासिक) उदयपुर, सम्वाधा (त्रैमासिक) काकराणी, लहर (मासिक) अजमेर मधुमाधवी (त्रैमासिक) जयपुर मधुमती राजस्थान साहित्य अकादमी की पत्रिका है और नियमित प्रकाशित हो रही है इसकी नियमितता का कारण चाहे वित्तीय स्थिति की सुदृढ़ता हो चाहे सम्मान कौशल लेकिन समय पर प्रकाशित एक प्रसारित होने वाली एकमात्र साहित्यिक पत्रिका अभी मधुमती है साहित्यिक पत्रिकाओं का मरुत राज की साहित्यिक सचेतना के लिए घातक है राजस्थान में ही नहीं अतितु भारत भर में साहित्यिक पत्रिकाओं को मत् 20 वर्षों में गहरा आघात लगा है परिणामतः ये पत्रिकाएँ पत्र शून्य बन्द हो रही हैं इस स्थिति पर अभी चिंतन अपेक्षित है

सम्पादन

साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं से अनेक हिन्दी साहित्य के सज्जनकर्मों समय समय पर जुड़ते रहे हैं इनमें प्रमुख हैं—सवथी भावरमल्ल शर्मा, विद्याधर शास्त्री, डॉ कन्हैयालाल सहल, हरिभाऊ उपाध्याय जयनारायण व्यास, नरोत्तमदास स्वामी, डा कन्हैयालाल शर्मा डॉ मनोहर शर्मा, चन्द्रगुप्त वाष्णीय, रामलाल सोवेल, जनादनराय नागर, डॉ मोतीलाल मैनारिया, रामनिवास शर्मा, डॉ सामनाथ गुप्त, चन्द्रान चारण, डॉ नारायणसिंह भाटी, सीभाग्य सिंह शेखावत देवीलाल सामर, कपूरचन्द कुलिश, कनक मधुकर, चंद्रेश व्यास, नेमीचन्द जन भावुक, गिरीश शर्मा, मिथीलाल जन तरंगित, युद्धिप्रकाश पारीक शिवपूजन त्रिपाठी, राजेन्द्र सक्सेना, डॉ मनोहर प्रभाकर, डॉ नेमनारायण जोशी, डॉ प्रकाश आतुर गिरधारीलाल शमा, विश्वदेव शमा, डॉ शांति भारद्वाज, श्री मंगल सक्सेना डॉ जयसिंह नीरज, डॉ संवरलाल जोशी डा प्रेमचन्द विजयवर्गीय जुगमन्दिर तायल, डॉ नन्किशोर आचाय, रामदेव आचाय हरीश भादानी, सरल विशारद, डा पूनम दर्श्या, राज शकर भट्ट ओम शर्मा जयसिंह एस राठौड भागीरथ भार्गव प्रकाश जन, डॉ विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, शरद दवडा जुगमन्दिर तायल मंजुन उपाध्याय, ईशमधु तलवार, नलिनी उपाध्याय, कमर मवाडी, डॉ दिवाकर शमा, डा नरेन्द्र भानावत चन्द्रभानु भारद्वाज, प्रेमर्जा प्रेम, मनोहर कांत मनमोहिनी, डा देव काठारी, गजेन्द्रसिंह सोलकी माहनताल मधुकर डॉ महेंद्र भानावत आदि

इस सम्पिप्त लेखिन समग्र विश्लेषण में यह स्पष्ट है कि राजस्थान में हिन्दी साहित्य के अतर्गत कविता और कथा विधा में लेखन प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है और गुणवत्ता की दृष्टि से वह महतोपप्रद भी है आलोचना तथा निबंध आदि के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य हुआ है लेखन हास्य, व्यंग्य, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, भाषात्कार, यात्रावृत्त, बाल साहित्य आदि विधाओं की ओर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है साहित्यिक पत्रिकाओं की स्थिति भी प्रसन्नतादायक नहीं मानी जा सकती है

फिर भी, राजस्थान का साहित्य का उन्नयनीय माण्डान है और राजस्थान लक्ष्य प्रतिष्ठित साहित्यकार हिन्दी मसाल का निष्कृष्ट ह जिन पर गौरव किया जा सकता है

